KARUNA UPADHYAY

पिता का नाम	RAJMANI UPADHYAY		
माता का नाम	USHA UPADHYA		
लिंग	स्त्री	अयनांश	23:48:27
जन्म तारीख	23/05/1996	सी.पी. / के.पी.	CP
जन्म दिन	गुरुवार	सूर्योदय	06:02:10
जन्म समय	10:10:00 am	सूर्यास्त	19:08:08
इष्टकाल (घटी)	10:19:34	दिन मान	13:05:58
स्थान	Ulhasnagar/Maharashtra		
देश	India	Module	JEEVANDARPAN GOLD
अक्षांश	019:12:N	चंद्र राशि (पाया)	कर्क (सोना)
रेखांश	073:10:E	राशि अक्षर	ड ह
मध्य रेखांश	+05:30	सूर्य राशी(पाश्चात्य)	मिथुन
युद्ध / ग्रीष्म समय	00 / 00	तिथि	शुक्ल - 6
स्थानिक समय संस्कार	-0:37:20	नक्षत्र	पुष्य (3)
स्थानिक समय	09:32:40	नक्षत्र अक्षर	हो
सांपत्तिक काल	01:37:00	नक्षत्र पाया	चांदी
अयन	उत्तर	योग	वृद्धि
गोल	उत्तर	करण	कौलव
ऋतु	ग्रीष्म	शक सवंत्	1918 - धाता
विंशोत्तरी भोग्यदशा	शनि : 06-03-30	हिन्दू महिना (अमांत)	2052 - ज्येष्ठ
अष्टोत्तरी भोग्यदशा	रवि : 01-11-30	हिन्दू महिना (पुर्निमांत)	2053 - ज्येष्ठ

While all precautions have been taken for the accuracy of the complex calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

|| Om Shri Ganeshaya Namah ||

DR. BAL KRISHNA MISHRA

VIDYA - VARIDHI (P.H.D) KASHI
MAA SAVITRI JYOTISH ANUSANDHAN KENDRA NEAR

GAURI SHANKAR MANDIR MASRANI LEAN HALAWPOOL
KURLA WEST MUMBAI 400070
WWW.MASAVITRIJYOTISH.COM
9222041001

पंचांग (निरयन)

वर्ग			आरंभ		अंत	
राशी		मिथुन	19/05/1996	21:32	22/05/1996	09:27
	✓	**कर्क**	**22/05/1996**	**09:27**	**24/05/1996**	**22:04**
		सिंह	24/05/1996	22:04	27/05/1996	09:14
तिथी		शुक्ल - 5	21/05/1996	23:40	23/05/1996	02:02
	✓	**शुक्ल - 6**	**23/05/1996**	**02:02**	**24/05/1996**	**04:27**
		शुक्ल - 7	24/05/1996	04:27	25/05/1996	06:43
नक्षत्र		पुनर्वसु	21/05/1996	13:19	22/05/1996	16:11
	✓	**पुष्य**	**22/05/1996**	**16:11**	**23/05/1996**	**19:10**
		अश्लेशा	23/05/1996	19:10	24/05/1996	22:04
योग		गंड	21/05/1996	19:24	22/05/1996	20:17
	✓	**वृद्धि**	**22/05/1996**	**20:17**	**23/05/1996**	**21:15**
		ध्रुव	23/05/1996	21:15	24/05/1996	22:08
करण		बालव	22/05/1996	12:50	23/05/1996	02:02
	✓	**कौलव**	**23/05/1996**	**02:02**	**23/05/1996**	**15:15**
		तैतिल	23/05/1996	15:15	24/05/1996	04:27

अवकहड़ा चक्र

योग	**वृद्धि**
करण	**कौलव**
वर्ण	**ब्राह्मण**
तत्व	**वारी**
वश्य	**जल्चर**
वर्ग	**मेष**
योनी	**मेष**
गण	**देव**
युंजा	**मध्य**
नाड़ी	**मध्य**

घात चक्र

मास	**पौष**
तिथि	**2-7-12**
दिवस	**बुधवार**
नक्षत्र	**अनुराधा**
योग	**व्याघात**
करण	**नाग**
प्रहर	**1**
चंद्र	**सिंह**
स्त्रीचंद्र	**मीन**

साढेसाती विचार

साढेसाती	23/07/2002	-	10/09/2009
छोटी पनोती	15/11/2011	-	02/11/2014
छोटी पनोती	29/04/2022	-	29/03/2025
साढेसाती	31/05/2032	-	13/07/2039
छोटी पनोती	28/01/2041	-	30/08/2044
छोटी पनोती	25/02/2052	-	05/02/2055
साढेसाती	11/07/2061	-	30/08/2068
छोटी पनोती	04/11/2070	-	23/10/2073

निरयन स्पष्ट ग्रह

ग्रह		राशी अंश		नक्षत्र		रा स्वा	न स्वा	उ स्वा	अवस्था
लग्न		कर्क	05:40:00	पुष्य	1	चंद्र	शनि	बुध	-
रवि		वृषभ	08:31:40	कृत्तिका	4	शुक्र	रवि	शुक्र	वृद्ध
चंद्र		कर्क	12:13:18	पुष्य	3	चंद्र	शनि	मंगल	युवा
मंगल		मेष	21:23:11	भरणी	3	मंगल	शुक्र	गुरु	वृद्ध
बुध	(व)	मेष	26:36:09	भरणी	4	मंगल	शुक्र	केतु	मृत
गुरु	(व)	धनु	23:18:42	पु. षाढा	3	गुरु	शुक्र	शनि	वृद्ध
शुक्र	(व)	मिथुन	04:19:11	मृग	4	बुध	मंगल	शुक्र	बाल
शनि		मीन	11:01:54	उ. भाद्र.	3	गुरु	शनि	चंद्र	वृद्ध
राहू	(व)	कन्या	21:02:42	हस्त	4	बुध	चंद्र	शुक्र	कुमार
केतु	(व)	मीन	21:02:42	रेवती	2	गुरु	बुध	शुक्र	कुमार
हर्षल	(व)	मकर	10:41:31	श्रवण	1	शनि	चंद्र	चंद्र	वृद्ध
नेप.	(व)	मकर	03:47:47	उ. षाढा	3	शनि	रवि	शनि	मृत
प्लूटो	(व)	वृश्चिक	07:54:51	अनुराधा	2	मंगल	शनि	केतु	वृद्ध
मांदी		कर्क	08:46:47	पुष्य	2	चंद्र	शनि	शुक्र	-
भा.सहम		कन्या	09:21:38	उ. फाल्गुनी	4	बुध	रवि	शुक्र	-
दसम बिंदू		मेष	02:20:26	अश्विनी	1	मंगल	केतु	शुक्र	-

Note : Mean Rahu mode selected , (True Rahu = Kanya : 22:10:28)

ग्रह	गति		शर	क्रांति	अस्त	अवस्था	भाव
रवि	00:57:39	-	00:00:00	20:37:35	-	-	-
चंद्र	11:52:10	-	-04:49:15	14:05:17	-	-	स्वग्रही
मंगल	00:44:02	शीघ्र	-00:18:52	16:05:26	-	-	स्वग्रही
बुध	-00:17:20	मध्यम	-02:45:00	15:11:48	-	-	-
गुरु	-00:03:30	मध्यम	00:01:50	-22:18:38	-	-	स्वग्रही
शुक्र	-00:08:16	मध्यम	03:11:35	26:37:00	-	-	-
शनि	00:05:03	मध्यम	-02:09:37	-00:03:37	-	-	-
राहू	-00:03:10	-	00:00:00	00:00:00	-	-	स्वग्रही
केतु	-00:03:10	-	00:00:00	00:00:00	-	-	स्वग्रही

लग्न कुंडली

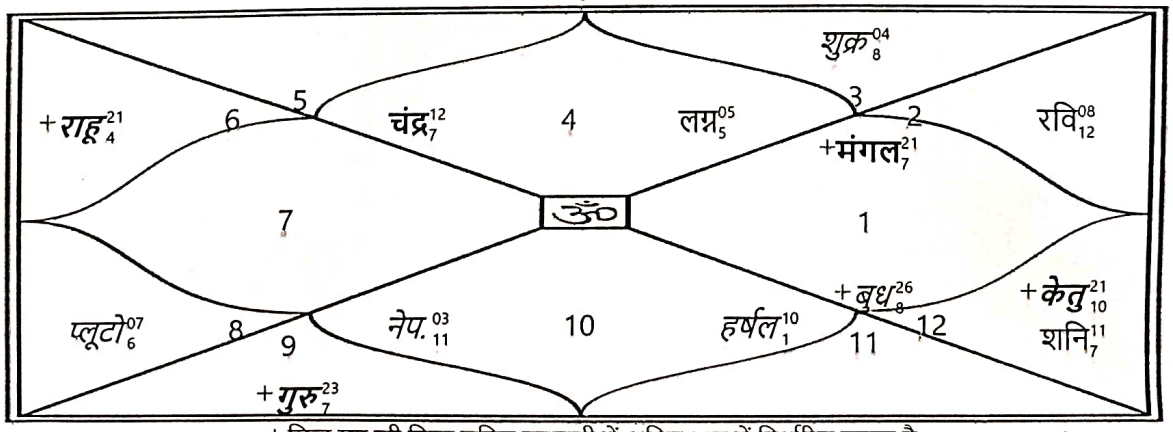

(23/05/1996 10:10:00 , Ulhasnagar/Maharashtra , 019:12:N , 073:10:E

+ चिन्ह ग्रह की दिशा चलित कुण्डली में अग्रिम भाव में निर्धारित करता है

चलित कुंडली

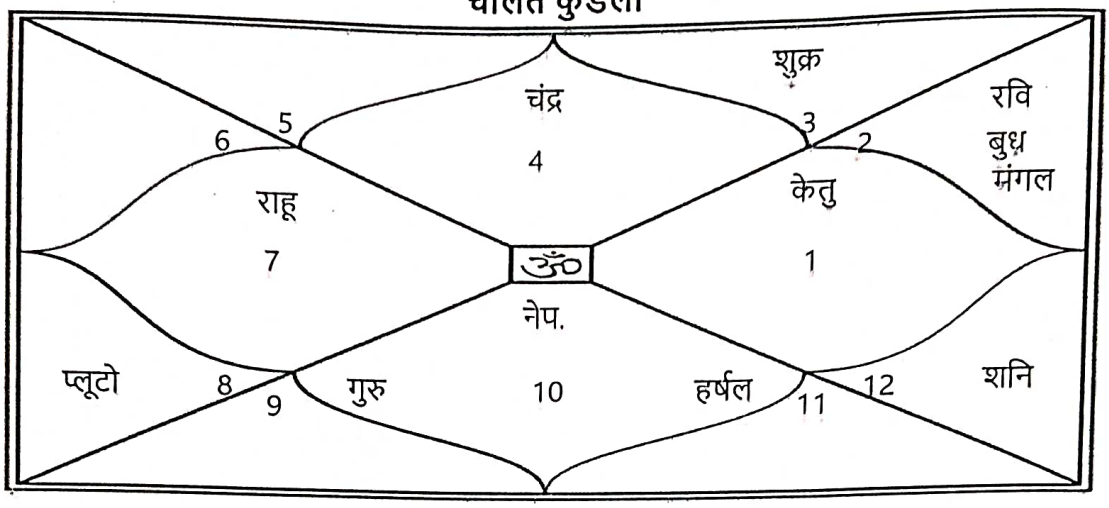

चलित भाव

भाव	आरंभ		मध्य	
1	मिथुन	20:06:45	कर्क	05:40:00
2	कर्क	20:06:45	सिंह	04:33:29
3	सिंह	19:00:13	कन्या	03:26:57
4	कन्या	17:53:42	तुला	02:20:26
5	तुला	17:53:42	वृश्चिक	03:26:57
6	वृश्चिक	19:00:13	धनु	04:33:29
7	धनु	20:06:45	मकर	05:40:00
8	मकर	20:06:45	कुम्भ	04:33:29
9	कुम्भ	19:00:13	मीन	03:26:57
10	मीन	17:53:42	मेष	02:20:26
11	मेष	17:53:42	वृषभ	03:26:58
12	वृषभ	19:00:13	मिथुन	04:33:29

कस्प भाव

कस्प भाव		रा स्वा	न स्वा	उ स्वा
कर्क	05:40:00	चंद्र	शनि	बुध
सिंह	01:16:22	रवि	केतु	शुक्र
कन्या	00:13:35	बुध	रवि	राहू
तुला	02:20:26	शुक्र	मंगल	केतु
वृश्चिक	05:04:32	मंगल	शनि	शनि
धनु	06:12:55	गुरु	केतु	राहू
मकर	05:40:00	शनि	रवि	बुध
कुम्भ	01:16:22	शनि	मंगल	बुध
मीन	00:13:35	गुरु	गुरु	चंद्र
मेष	02:20:26	मंगल	केतु	शुक्र
वृषभ	05:04:32	शुक्र	रवि	शनि
मिथुन	06:12:55	बुध	मंगल	चंद्र

कस्प कुंडली

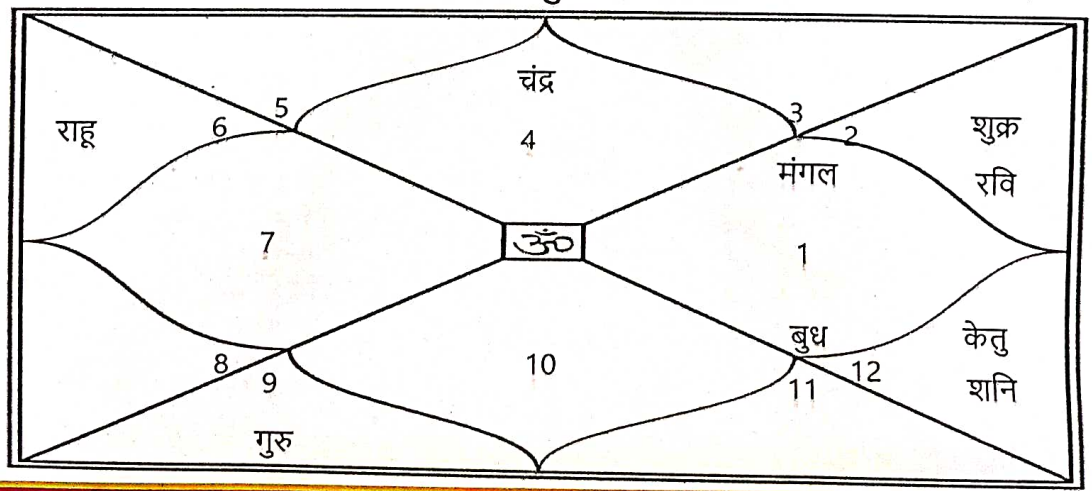

ताराचक्र - नक्षत्र स्वामि

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरी	साधक	वध	मैत्री	अधि-मैत्री
पुष्य	अश्लेशा	मघा	पु.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठ	मूल	पु.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शतातारा	पु.भा.
उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्वसु
शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चंद्र	मंगल	राहू	गुरु

चंद्र राशि कुंडली

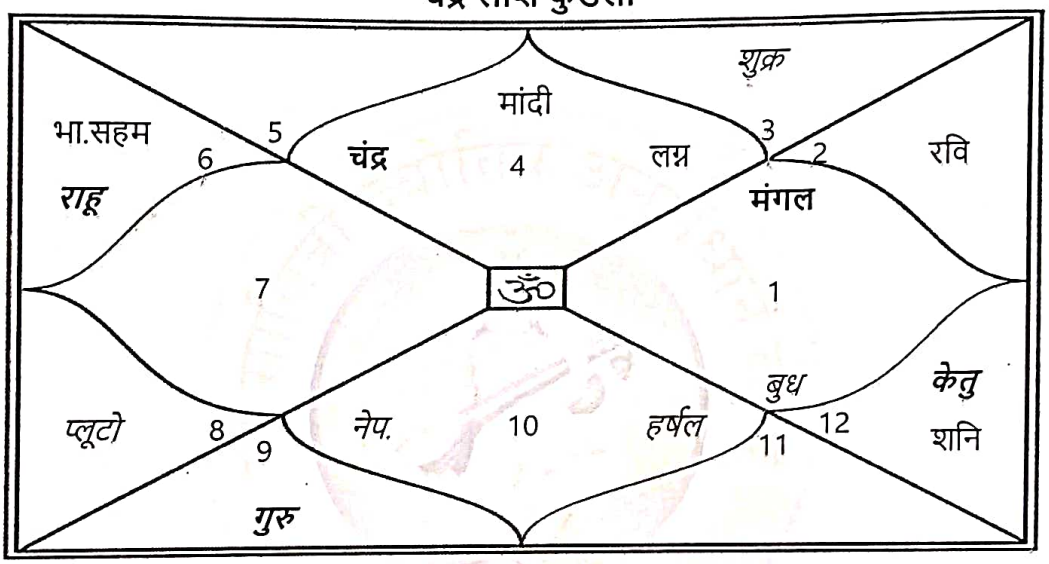

नवमांश कुंडली

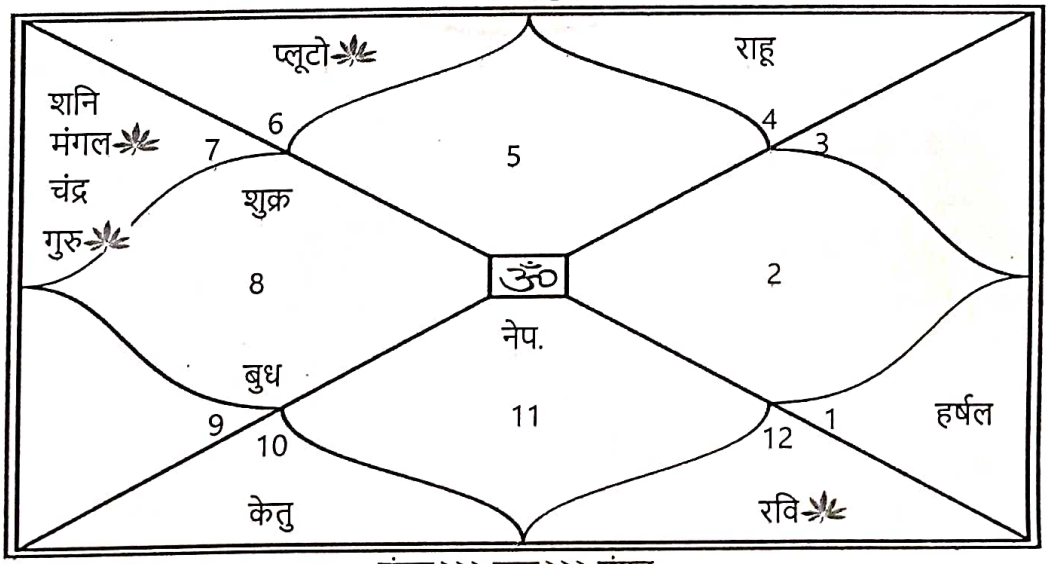

मंगल >>> शुक्र >>> मंगल

Pushkar Navamsa

मांगलिक-दोष परिहार के शास्त्रोक्त नियम

मंगल दोष का निरसन

कोई मंगल दोष नहीं :

1,4,7,8 या 12 घरों में मंगल ग्रह के अभाव के कारण इस कुंडली में मंगल दोष नहीं है।

पितृ दोष विचार

पितृ दोष क्या है :

अनिवार्य रूप से यह अच्छे कर्म का अवरोध है जो पिछले जन्म के कर्मों और भाग्य से आता है जिसे आप इस जीवन में प्राप्त करने के लिए हैं। कहा जाता है कि पितरों द्वारा की गई किसी त्रुटि या भूल के कारण पिछले जन्म और इस जीवन (अर्थात क्रमशः 5वां और 9वां घर) का आशीर्वाद मदद के लिए उपलब्ध नहीं है, उदाहरण के लिए:

1. हमारे पूर्वजों/बच्चों के पूर्व जन्म में, जाने-अनजाने में किए गए बुरे कर्म।
2. हमारे पूर्वजों की माता-पिता की इच्छाओं की पूर्ति का अभाव।
3. कम उम्र में किसी रिश्तेदार के पूर्वजों की अचानक और अप्राकृतिक मृत्यु।

पितृ दोष के प्रभाव :

1. जातक को अपने जीवन को बेहतर बनाने और समृद्ध बनने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है।
2. परिवार में ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जो शादी नहीं करना चाहते हैं या कई प्रयासों के बावजूद शादी के लिए कोई उपयुक्त मैच नहीं मिला है।
3. परिवार के सदस्यों के लिए व्यवसाय/शिक्षा/पेशे में रुचि की कमी, भले ही वे ऐसा करने के लिए योग्य हों।
4. घर पर स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी मुद्दे।

निम्नलिखित स्थितियों से पितृ दोष की उपस्थिति:

1	राहु/केतु नवम भाव में	हाँ
2	राहु/केतु नवम भाव के स्वामी के साथ	
3	नवम भाव के स्वामी के साथ शनि	
4	राहु/केतु के साथ रवि	
5	रवि शनि के साथ संयोजन में	
6	पंचम भाव में अशुभ ग्रह	
7	पंचम भाव के स्वामी के साथ अशुभ ग्रह	
8	6,8,12 में पंचम भाव का स्वामी	
9	राहु/केतु पंचम भाव के स्वामी के साथ	

लग्न कुंडली

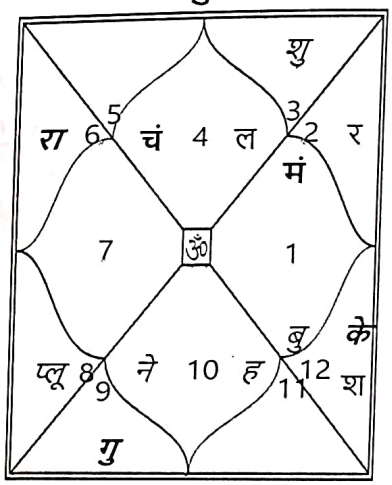

पितृ दोष के उपाय :

पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जातक को कुछ कर्मकांडों की सलाह दी जाती है:

1. ब्राह्मणों को भोजन कराएं, उन्हें धन और लाल वस्त्र दान करें और संक्रांति या अमावस्या के रविवार को पितृ तर्पण करें।
2. पितृ दोष निवारण पूजा की व्यवस्था करें: त्रिपिंडी श्राद्ध, नारायण नागबली पूजा और पितृ विसर्जन।
3. पूर्वजों को याद करने और सम्मान देने के लिए श्राद्ध के अनुष्ठानों को पूरी ईमानदारी और विश्वास के साथ करें।
4. श्राद्ध के दौरान या उनकी मृत्यु तिथि पर 15 दिनों तक पितरों को जल अर्पित करें।
5. पितृ दोष के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए प्रतिदिन बरगद के पेड़ और भगवान शिव को जल अर्पित करें।

नक्षत्र द्वारा संभावनाएँ

पुष्य नक्षत्र :

"वैदिक ज्योतिष में नक्षत्र महत्वपूर्ण होते हैं, जो 27 चंद्रमा के घरों को दर्शाते हैं जो जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति के आधार पर व्यक्ति के लक्षण, भाग्य और जीवन के पहलुओं को प्रभावित करते हैं। वे निर्णय लेने में मार्गदर्शन, शुभ समय निर्धारित करने, और व्यक्तित्व, करियर, स्वास्थ्य, और संबंधों को आकार देने में सहायक होते हैं। नक्षत्र प्राचीन ज्ञान के माध्यम से जीवन की यात्रा को समझने और नेविगेट करने के लिए एक गहन ढांचा प्रदान करते हैं।

तकनीकी विशेषताएं (Technical Features):

1. **स्थिति (Position)** : पुष्य नक्षत्र कर्क राशि में 3°20' से 16°40' तक फैला हुआ है।
2. **शासक ग्रह (Ruling Planet)** : शनि (Saturn), जो अनुशासन, जिम्मेदारी और लंबी अवधि की सफलता को प्रभावित करता है।
3. **देवता (Deity)** : बृहस्पति (Brihaspati), देवताओं के गुरु, जो ज्ञान, शिक्षा और उपदेश का प्रतीक हैं।
4. **प्रतीक (Symbol)** : गाय का उदर, जो पोषण, समृद्धि और उर्वरता का प्रतीक है।
5. **गण (Nature)** : देव (Divine), जो दैवीय गुणों और सकारात्मकता को दर्शाता है।
6. **नाड़ी (Nadi)** : मध्य (Middle), जो संतुलन और सामंजस्य को दर्शाता है।
7. **लक्ष्य (Aim)** : धर्म (Dharma), जो नैतिकता, धर्म, और कर्तव्य की भावना को दर्शाता है।
8. **गुण (Quality)** : सत्व (Sattva), जो पवित्रता, हार्मोनी, और संतुलन से संबंधित है।
9. **तत्व (Element)** : जल (Water), जो भावनात्मक गहराई, अंतर्ज्ञान और अनुकूलनशीलता को दर्शाता है।

भविष्यवाणी की विशेषताएँ (Predictive Features):

1. **व्यक्तित्व लक्षण (Personality Traits)** : पुष्य नक्षत्र में जन्मे लोग स्थिर, विश्वसनीय और अत्यंत धैर्यवान होते हैं। उनमें गहरी आध्यात्मिकता और ज्ञान की खोज होती है।
2. **करियर और व्यवसाय (Career and Profession)** : ये जातक शिक्षा, अनुसंधान, धर्म, और सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में सफल होते हैं। उनकी विश्वसनीयता और कड़ी मेहनत उन्हें वित्त और प्रबंधन में भी सफल बनाती है।
3. **स्वास्थ्य (Health)** : पुष्य नक्षत्र के जातकों को पेट और चेस्ट से संबंधित समस्याओं का सामना

नक्षत्र द्वारा संभावनाएँ

करना पड़ सकता है। उन्हें अपने आहार और स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता होती है।

4. **संबंध (Relationships)** : इन जातकों के संबंध गहरे और स्थिर होते हैं। वे अपने साथी से वफादारी और समर्थन की अपेक्षा करते हैं और अपने परिवार के प्रति अत्यधिक समर्पित होते हैं।
5. **आध्यात्मिकता और विकास (Spirituality and Growth)** : पुष्य नक्षत्र के जातक आध्यात्मिक विकास और आत्म-सुधार की ओर अग्रसर होते हैं। वे जीवन के गहरे अर्थ की खोज में रुचि रखते हैं।
6. **धन और संपत्ति (Wealth and Prosperity):** इन जातकों के पास धन संचय करने की अच्छी क्षमता होती है। वे वित्तीय रूप से स्थिर और सुरक्षित रहते हैं ।

ग्रहफल

सूर्य ग्यारहवें भाव में :

1. **सामाजिक नेटवर्क** : व्यापक सामाजिक नेटवर्क और मित्रों और सहयोगियों के माध्यम से लाभ।
2. **लक्ष्य और आकांक्षाएँ** : दीर्घकालिक लक्ष्यों और सपनों को प्राप्त करने पर केंद्रित।
3. **मानवतावादी हित** : मानवतावादी कारणों में रुचि और समूहों के भीतर सामाजिक लाभों के लिए काम करना।
4. **वित्तीय लाभ** : पेशेवर नेटवर्क या समूह संबद्धताओं के माध्यम से वित्तीय लाभ।
5. **नवीन विचार** : सहयोगी प्रयासों में नवीन और आगे की सोच, विशेष रूप से।
6. **मित्रता** : जीवन दिशा और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण मित्रताएँ।

पहले भाव में चंद्रमा:

1. मजबूत भावनात्मक पहचान; अत्यधिक संवेदनशील और अंतर्ज्ञानी।
2. भावनात्मक और शारीरिक कल्याण आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं।
3. दूसरों के प्रति देखभाल और पोषण की प्रवृत्ति।
4. परिवर्तनशील मूड और स्पष्ट भावनात्मक प्रतिक्रियाएं।
5. सहजता से सार्वजनिक ध्यान आकर्षित करता है; मातृत्व पर्सोना होता है।
6. स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम से भावनात्मक सुरक्षा की तलाश करता है।

दसवें भाव में मंगल:

1. **करियर महत्वाकांक्षा** : करियर और सार्वजनिक स्थिति के प्रति उच्च महत्वाकांक्षा और ऊर्जा।
2. **नेतृत्व गुण** : प्राकृतिक नेतृत्व क्षमताएं, अक्सर अधिकारी पदों की ओर ले जाती हैं।
3. **अधिकारी के साथ संघर्ष** : पेशेवर क्षेत्र में या अधिकारी आंकड़ों के साथ संघर्ष की संभावना।
4. **सार्वजनिक मान्यता** : प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में उपलब्धियों के लिए मान्यता।
5. **उद्यमशीलता की भावना** : उद्यमशीलता या व्यवसायों को संभालने की ओर मजबूत ड्राइव।
6. **करियर में अनुशासन** : करियर लक्ष्यों को प्राप्त करने में अनुशासन और दृढ़ता।

- ***नकारात्मक:*** *करियर में बाधाएँ और सफलता के लिए निर्दयी प्रयास।*
- ***समाधान:*** *नेटवर्किंग और पेशेवर विकास के पाठ्यक्रमों से करियर में बाधाओं को दूर किया जा सकता है। काम पर नैतिक व्यवहार और टीमवर्क से सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा मिलता है।*

ग्रहफल

दसवें भाव में बुध :

1. संचार और विश्लेषणात्मक कौशल के माध्यम से करियर में सफलता को बढ़ावा देता है।
2. बुद्धि के माध्यम से प्रतिष्ठा और सामाजिक स्थिति को बढ़ाता है।
3. पेशेवर उपलब्धियों और मान्यता को प्रोत्साहित करता है।
4. लेखन, शिक्षण, या वाणिज्य में करियर की ओर ले जा सकता है।
5. नेतृत्व गुणों और संगठनात्मक कौशल को मजबूत करता है।
6. करियर लक्ष्यों के प्रति एक महत्वाकांक्षी और व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

छठे भावमें गुरु :

1. दुश्मनों और बाधाओं के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है।
2. स्वास्थ्य में रुचि, विशेषकर निवारक स्वास्थ्य देखभाल में, को प्रोत्साहित करता है।
3. प्रतियोगिताओं और कानूनी लड़ाइयों में सफलता का संकेत देता है।
4. स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों में दूसरों की सेवा को बढ़ावा देता है।
5. पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं को कम कर सकता है या चिकित्सा क्षमताओं को प्रदान कर सकता है।
6. अनुशासित जीवनशैली और दिनचर्या को प्रोत्साहित करता है।

बारहवें भावमें शुक्र :

1. **आध्यात्मिक विकास:** एकांत या ध्यान के माध्यम से आध्यात्मिक विकास और समझ में गहराई।
2. **विदेशी भूमि:** विदेशी भूमियों में समय बिताने या विदेशी संबंधों से लाभ की संभावना।
3. **छिपी प्रतिभाएं:** कला या आध्यात्मिकता से संबंधित छिपी प्रतिभाओं का प्रकटीकरण।
4. **खर्च:** लक्जरी या परोपकारी कारणों से जुड़े उच्च खर्च का संकेत।
5. **आंतरिक शांति:** आध्यात्मिक या परोपकारी प्रयासों के माध्यम से आंतरिक शांति और सौहार्द की तलाश में प्रोत्साहन।
6. **अवचेतन मन:** अवचेतन मन के साथ संबंध में वृद्धि, जिससे अंतर्ज्ञान और रचनात्मकता में सुधार होता है।

नौवें भावमें शनि :

ग्रहफल

1. **उच्च शिक्षा और यात्रा:** उच्च शिक्षा और लंबी यात्राओं में विलंब और चुनौतियां।
2. **धार्मिक और दार्शनिक विचार:** धार्मिक और दार्शनिक विचारों में गहराई से विचार।
3. **कानूनी मुद्दे:** विदेशी भूमि या कानूनी मामलों में संभावित चुनौतियां।
4. **गुरु और शिक्षा:** जीवन में देर से महत्वपूर्ण गुरु या शिक्षक से मुलाकात।
5. **आध्यात्मिक यात्रा:** आध्यात्मिक यात्रा में गहन अन्वेषण और प्रगति।
6. **वैचारिक विस्तार:** विचारों और ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार और गहनता।

- *नकारात्मक प्रभाव: उच्च शिक्षा में बाधाएँ और धार्मिक या दार्शनिक मतभेद।*
- *समाधान: लचीलापन और खुले दिमाग से अध्ययन करें।*

तृतीय भावमें राहु :

1. **साहस और पहल:** साहस और पहल को बढ़ावा देता है, कभी-कभी लापरवाही से।
2. **संचार कौशल:** लेखन और बोलने में संचार क्षमताओं को बढ़ाता है।
3. **भाई-बहनों के साथ संबंध:** भाई-बहनों के साथ संबंधों में तनाव संभव है।
4. **लघु यात्राएँ:** लघु यात्राओं की संभावना में वृद्धि करता है।
5. **शिक्षा और जिज्ञासा:** जिज्ञासा और हाथों-हाथ सीखने की ओर बढ़ावा देता है।

- *नकारात्मक: भाई-बहनों के साथ गलतफहमियाँ और जोखिम भरे कार्यों की प्रवृत्ति हो सकती है।*
- *समाधान: धैर्य विकसित करें और अन्यों के दृष्टिकोणों को ध्यान से सुनें।*

केतु नौवें भाव में:

1. **धर्म और दर्शन:** पारंपरिक धर्म के प्रति उदासीनता लेकिन एक अनूठा आध्यात्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।
2. **पिता:** पिता के साथ संबंध जटिल या दूरी भरा हो सकता है।
3. **उच्च शिक्षा:** उच्च शिक्षा में बाधाएँ या पारंपरिक सीखने में रुचि की कमी।
4. **लंबी यात्राएँ:** आध्यात्मिक या रहस्यमय उद्देश्यों के लिए लंबी यात्राओं में रुचि।

ग्रहफल

5. **भाग्य और भाग्य:** भाग्य और भाग्य में उतार-चढ़ाव, विदेशी भूमि से संभावित लाभ।

- ***नकारात्मक** : विश्वास या उद्देश्य की कमी; उच्च शिक्षा में कठिनाइयाँ।*
- ***समाधान** : विभिन्न दर्शन या आध्यात्मिक पथों का अन्वेषण करें; जीवनभर सीखने को गले लगाएँ।*

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान आपको अपने मित्र और शत्रु का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक और मित्रांको से मित्रता और साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभग्रहों की दशाएं लाभदायक होती है।.

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न भाग्य धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होता है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारंभ करने से उसमें इच्छित सफलता मिलती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शांति तथा सफलता प्राप्त होती है। शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभदिशा में करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभ ज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभ फलदायक सिद्धि हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	8
मित्रांक	7, 9, 1
शुभ वर्ष	23, 32, 41, 50, 59
शुभ दिन	मंगलवार, सोमवार, गुरूवार
शुभ ग्रह	मंगल, चंद्र, गुरू
अशुभ ग्रह	बुध, शनि
मित्र राशि	मीन , मेष
मित्र लग्न	तुला, मकर, मीन, वृक्षभ
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चंद्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
अनुकूल देवता	शंकर
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
दिशा	पश्चिमोत्तर
समय	संध्या
पदार्थ	मिसरी, शंख, कपूर, श्वेतचंदन
अन्न	चावल
द्रव्य	दही

साढेसाती विचार

चंद्रमां से कुंडली में जब गोचर शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय भाव में होती है तो साढेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैय्या कहलाती है। साढेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैय्या का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है यह सामान्य तौर से शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह अंश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। सामान्य तौर से साढेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में दूसरे युवा अवस्था में और तीसरे वृद्धा अवस्था में आती है। प्रथम साढेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है और तृतीय साढेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

पनोती	शनि भाव	प्रवेश	निकास	पाया	11°	13°
साढेसाती	मिथुन	23/07/2002	08/01/2003	सोना		
साढेसाती	मिथुन	07/04/2003	06/09/2004	सोना	12/7/2003	19/4/2004
साढेसाती	कर्क	06/09/2004	13/01/2005	सोना		
साढेसाती	मिथुन	13/01/2005	26/05/2005	लोहा		
साढेसाती	कर्क	26/05/2005	01/11/2006	सोना	24/8/2005	10/6/2006
साढेसाती	सिंह	01/11/2006	10/01/2007	लोहा		
साढेसाती	कर्क	10/01/2007	16/07/2007	तांबा		
साढेसाती	सिंह	16/07/2007	10/09/2009	सोना	15/10/2007	3/8/2008
छोटी पनोती	तुला	15/11/2011	16/05/2012	लोहा		
छोटी पनोती	तुला	04/08/2012	02/11/2014	लोहा	17/11/2012	11/9/2013
छोटी पनोती	कुम्भ	29/04/2022	12/07/2022	चांदी		
छोटी पनोती	कुम्भ	17/01/2023	29/03/2025	चांदी	28/4/2023	16/2/2024
साढेसाती	मिथुन	31/05/2032	13/07/2034	लोहा	3/9/2032	13/6/2033
साढेसाती	कर्क	13/07/2034	27/08/2036	सोना	10/11/2034	27/7/2035
साढेसाती	सिंह	27/08/2036	22/10/2038	लोहा	22/8/2037	15/9/2037
साढेसाती	सिंह	05/04/2039	13/07/2039	चांदी		
छोटी पनोती	तुला	28/01/2041	06/02/2041	चांदी		
छोटी पनोती	तुला	26/09/2041	11/12/2043	तांबा	8/1/2042	25/10/2042
छोटी पनोती	तुला	23/06/2044	30/08/2044	सोना		
छोटी पनोती	कुम्भ	25/02/2052	14/05/2054	सोना	28/2/2053	10/12/2053
छोटी पनोती	कुम्भ	02/09/2054	05/02/2055	चांदी		
साढेसाती	मिथुन	11/07/2061	13/02/2062	तांबा		
साढेसाती	मिथुन	07/03/2062	24/08/2063	तांबा	1/7/2062	24/7/2062
साढेसाती	कर्क	24/08/2063	06/02/2064	चांदी		
साढेसाती	मिथुन	06/02/2064	09/05/2064	तांबा		
साढेसाती	कर्क	09/05/2064	13/10/2065	लोहा	13/8/2064	25/5/2065
साढेसाती	सिंह	13/10/2065	03/02/2066	चांदी		
साढेसाती	कर्क	03/02/2066	03/07/2066	सोना		
साढेसाती	सिंह	03/07/2066	30/08/2068	लोहा	2/10/2066	23/7/2067
छोटी पनोती	तुला	04/11/2070	05/02/2073	चांदी	8/11/2071	27/8/2072
छोटी पनोती	तुला	31/03/2073	23/10/2073	सोना		
छोटी पनोती	कुम्भ	12/04/2081	03/08/2081	तांबा		
छोटी पनोती	कुम्भ	07/01/2082	20/03/2084	चांदी	14/4/2082	6/2/2083
साढेसाती	मिथुन	18/09/2090	25/10/2090	लोहा		
साढेसाती	मिथुन	21/05/2091	02/07/2093	लोहा	19/8/2091	2/6/2092
साढेसाती	कर्क	02/07/2093	18/08/2095	तांबा	7/10/2093	17/7/2094
साढेसाती	सिंह	18/08/2095	18/08/2095	चांदी		
साढेसाती	सिंह	18/08/2095	11/10/2097	चांदी	11/8/2096	4/9/2096
साढेसाती	सिंह	02/05/2098	20/06/2098	सोना		
छोटी पनोती	तुला	26/12/2099	17/03/2100	सोना		
छोटी पनोती	तुला	16/09/2100	03/12/2102	लोहा	23/12/2100	23/12/2100
छोटी पनोती	कुम्भ	17/02/2111	02/05/2113	सोना	21/2/2112	17/3/2112
छोटी पनोती	[illegible]	22/09/2113	25/01/2114	तांबा		

साढेसाती के उपाय

शनि की साढेसाती के अशुभ प्रभावो को कम करनें के लिए दान, पूजन व्रत, मंत्र आदि उपाय किए जा सकतें हैं।

इसके लिए शनिवार को काला कम्बल, उड़द की दाल, काले-तिल, चर्म-पादुका, काला कपडा, मोटा अनाज, तिल तथा लोह का दांन करना चाहिए। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार को व्रत रखना चाहिए। उपवास के दिन उड़द के दाल की बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिए। साथ ही स्वंय या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के २३००० जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ प्राँ प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः

शनि की साढेसाती में शारीरिक, मानसिक पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढता तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए निम्नलिखित महामृत्यंजय मंत्र के १२५००० जप स्वयं किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिए।

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मडमृतात्

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन १०८ जप किये जा सकते है।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ

शनि की साढेसाती के शुत्व को बढ़ाने के लिए ५-१/४ रत्ती का नीलम सोने या पंच धातु (सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा जस्ता) में जडवाकर शनिवार के दिन धारण करना चाहिए। रत्न अंगुली का निम्नभाग अवश्य स्पर्श करें। विकल्प में घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोह की अंगुठी भी धारण कर सकते हैं। अंगुठी एवं हाथ की मध्यमा अंगुली मे धारण करे।

अंगुठी शुक्ल पक्ष मे शनिवार की शाम कतो सूर्यास्त से आधा घंटा पूर्व धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ है। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगुठी धारण करने से शुद्ध दूध एवं गंगाजल में धोना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या १०८ बार जप करना चाहिए।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कमी आएगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होंगी।

शोडषवर्ग कुंडली : पृष्ठ - 1

D2=होरा (सम्पदाविचार)

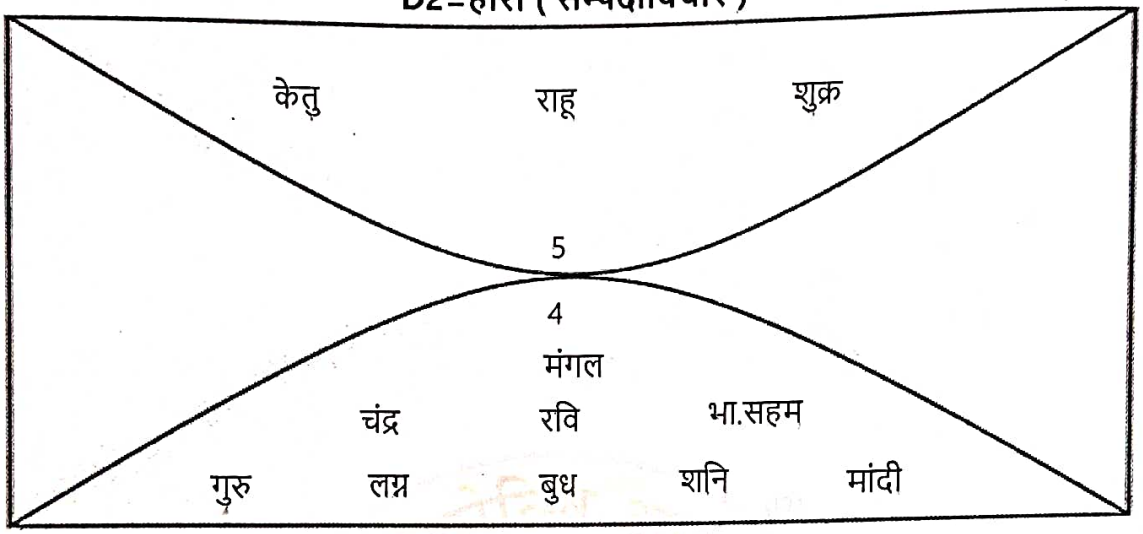

D3=द्रेष्काण (भ्रात्रूसोंख्यम)

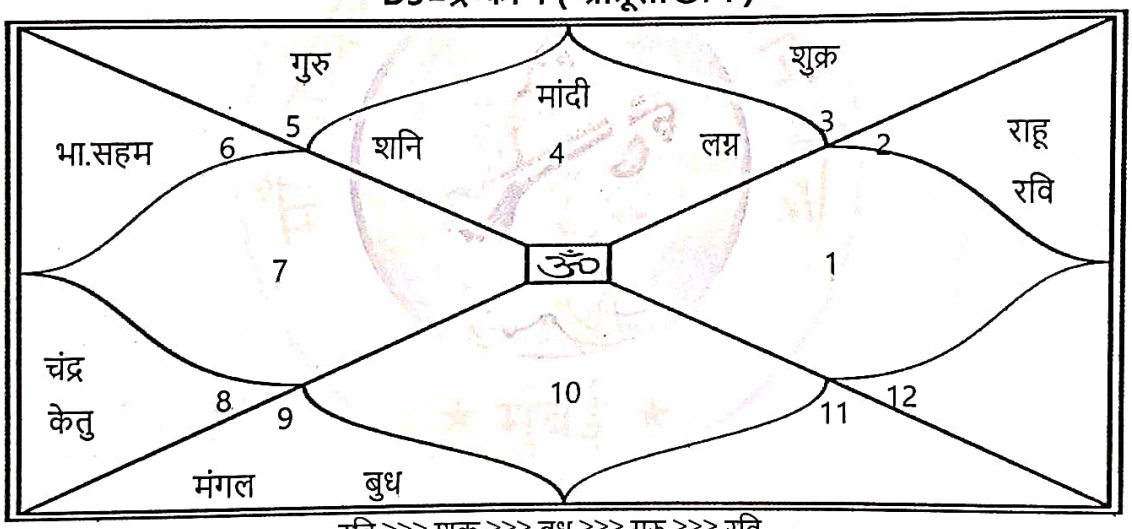

रवि >>> शुक्र >>> बुध >>> गुरु >>> रवि

D7=सप्तमांश (पुत्रपौत्रदिज्ञानम)

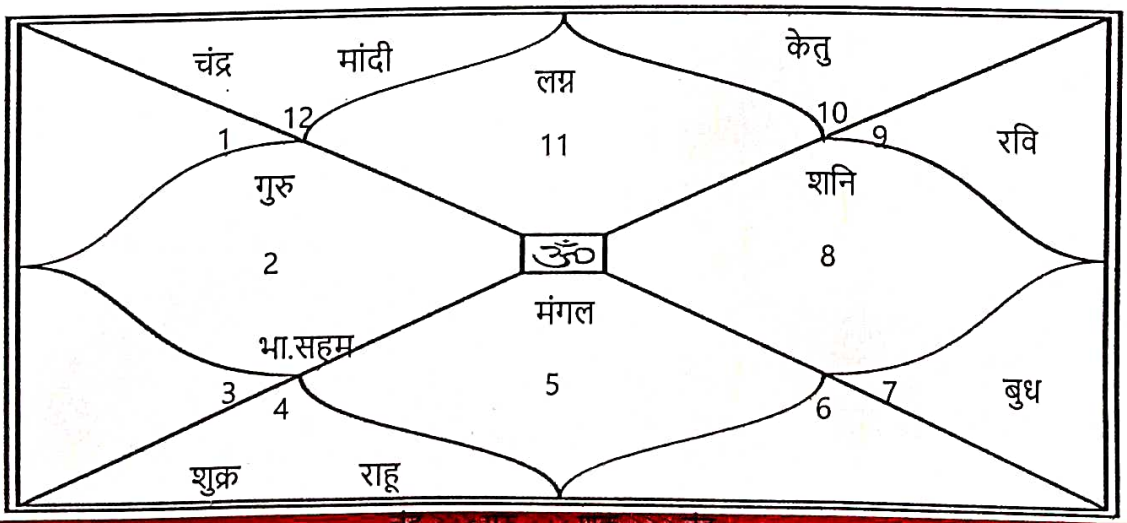

शोडषवर्ग कुंडली : पृष्ठ - 2

D9=नवमांश (कलत्र सौख्यम)

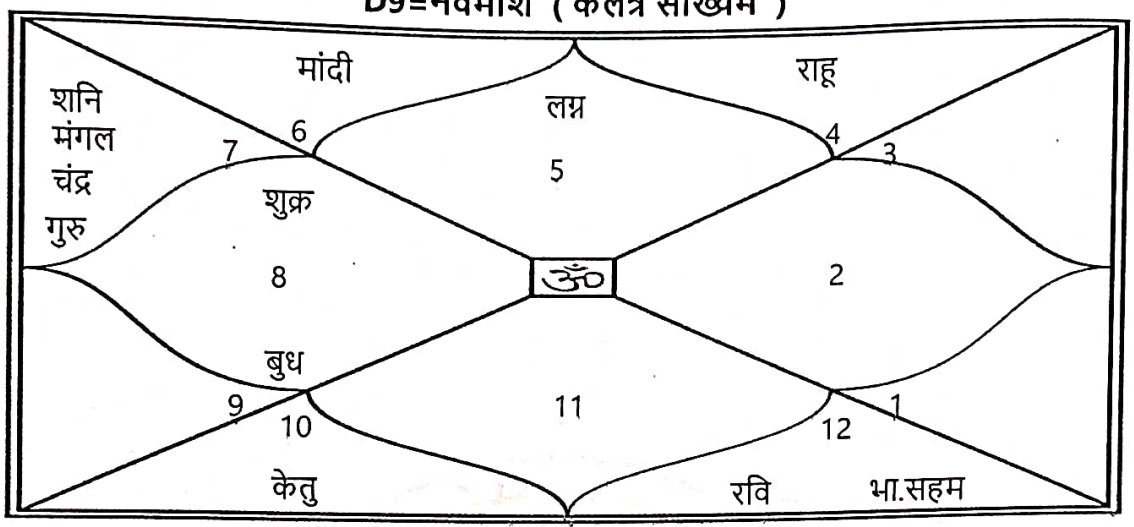

मंगल >>> शुक्र >>> मंगल

D12=द्वादशाम्श (पितृ सौख्यम)

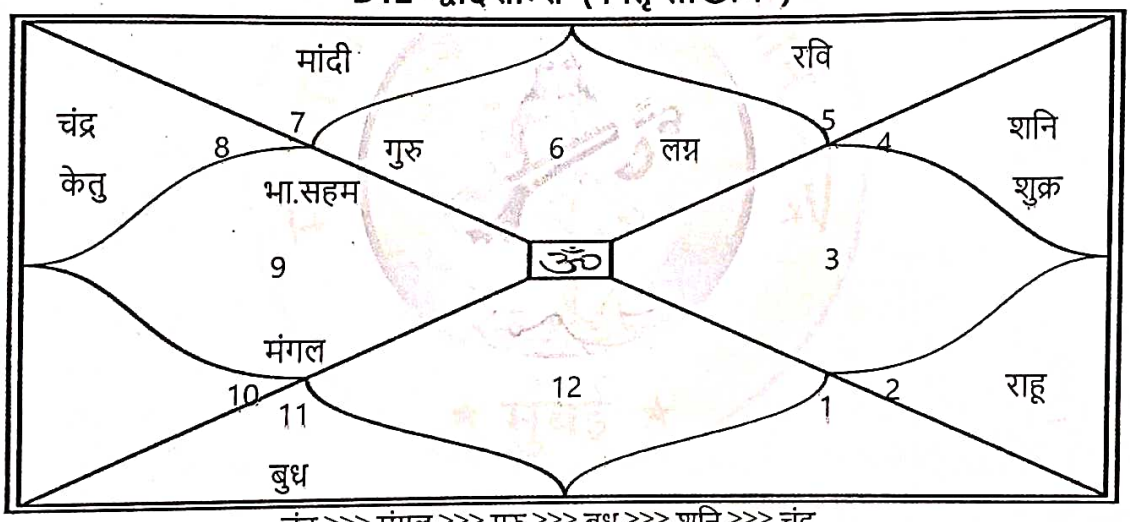

चंद्र >>> मंगल >>> गुरु >>> बुध >>> शनि >>> चंद्र

D30=त्रिशांश (अरिष्ट ज्ञानम)

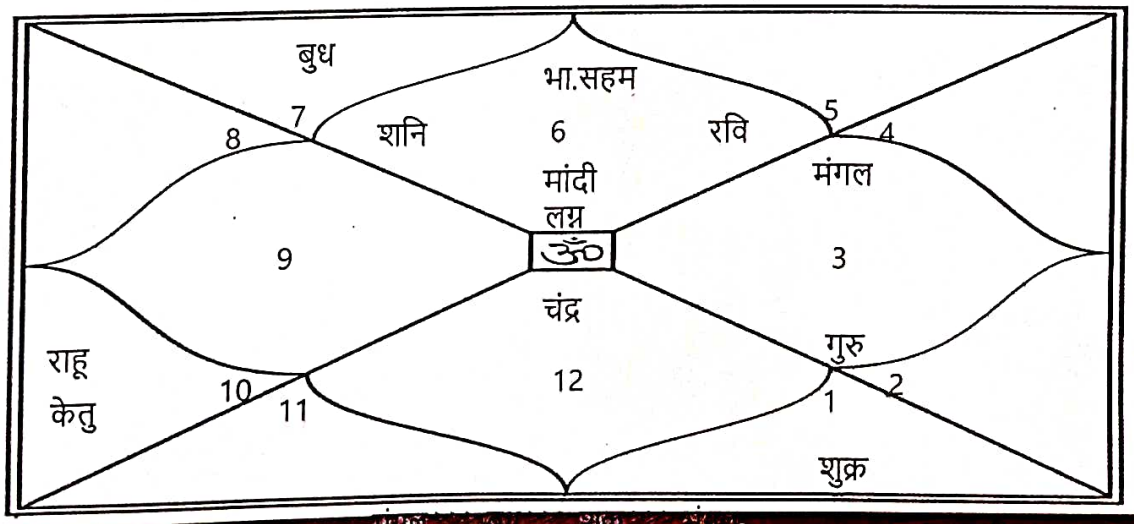

शोडषवर्ग कुंडली : पृष्ठ - 3

D10=दशमांश (राज्य विचार)

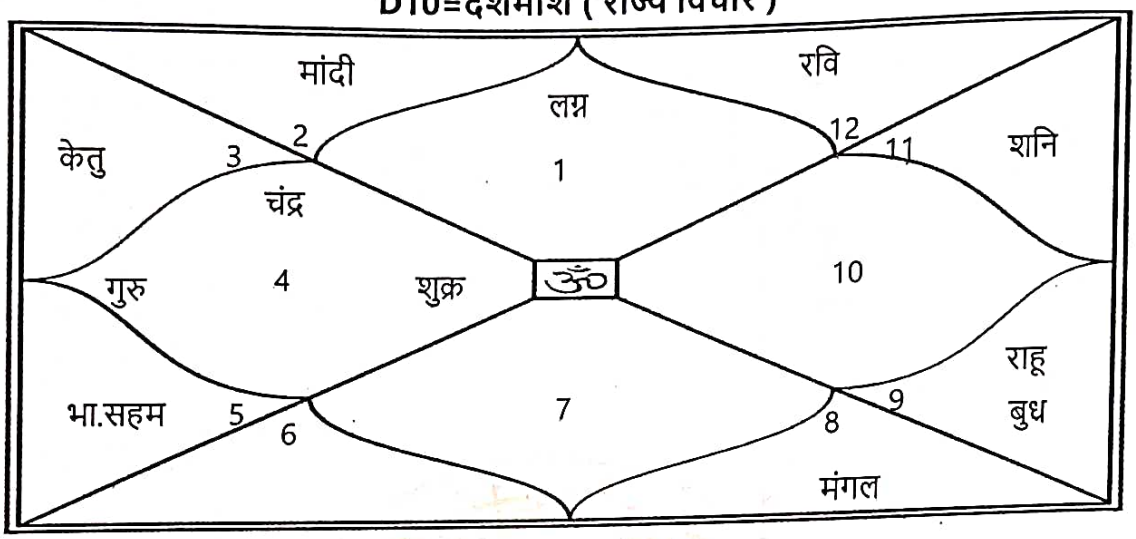

D16=षोडशांश (वाहनसुख विचार)

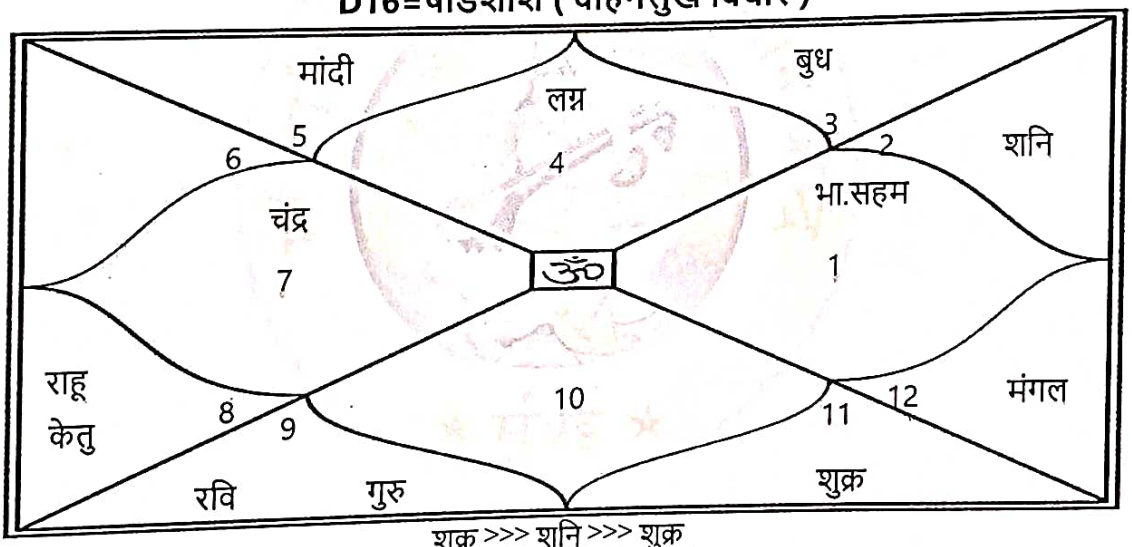

शुक्र >>> शनि >>> शुक्र

D60=षष्ठयांश (सर्वास्थिति विचार)

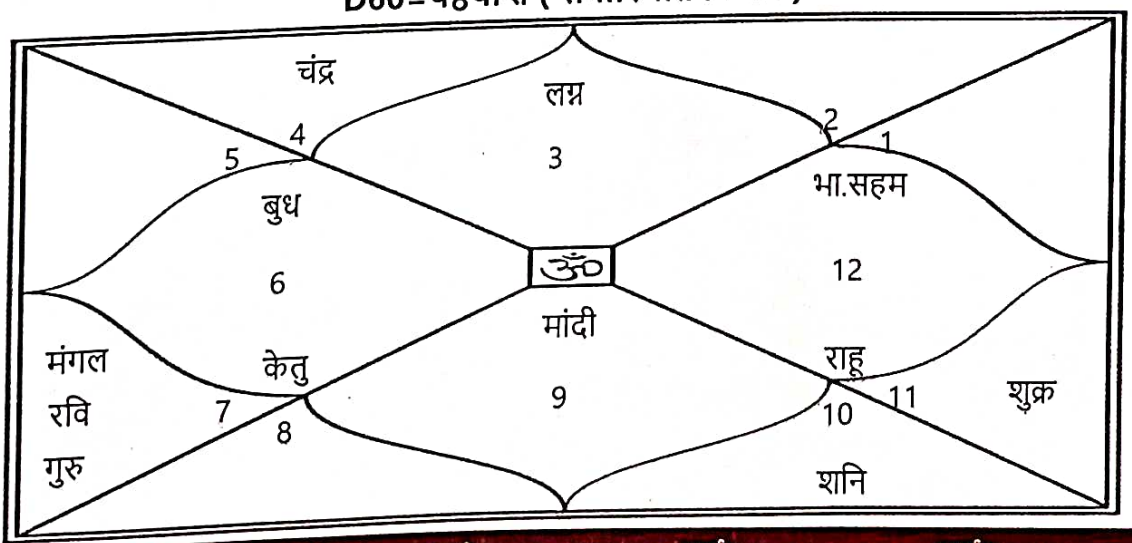

शोडषवर्ग कुंडली : पृष्ठ - 4

D4=चतुर्थांश (भाग्य विचार)

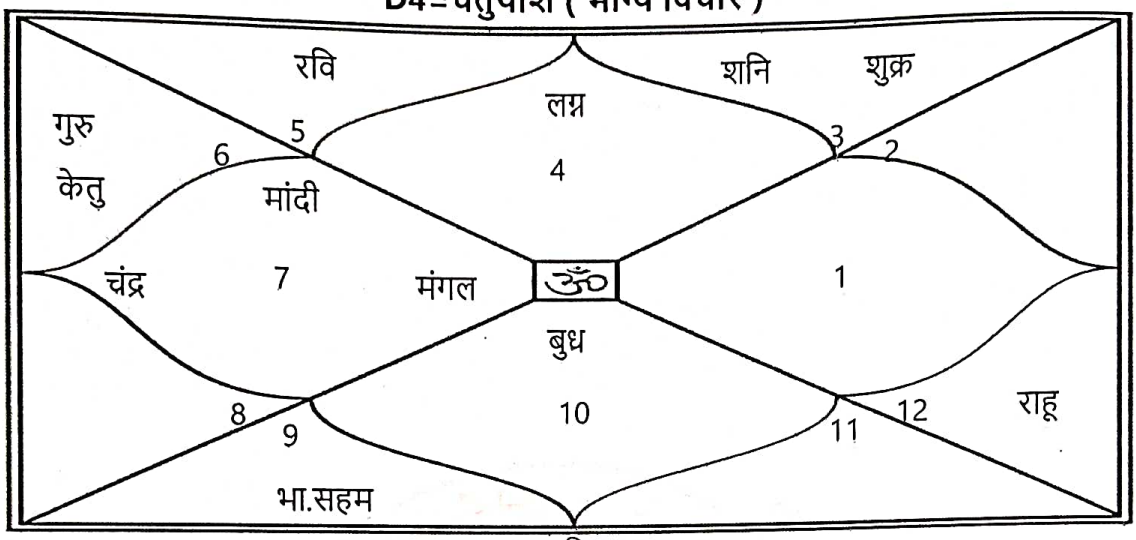

बुध >>> शनि >>> बुध

D20=विंशांश (उपासना ज्ञानम)

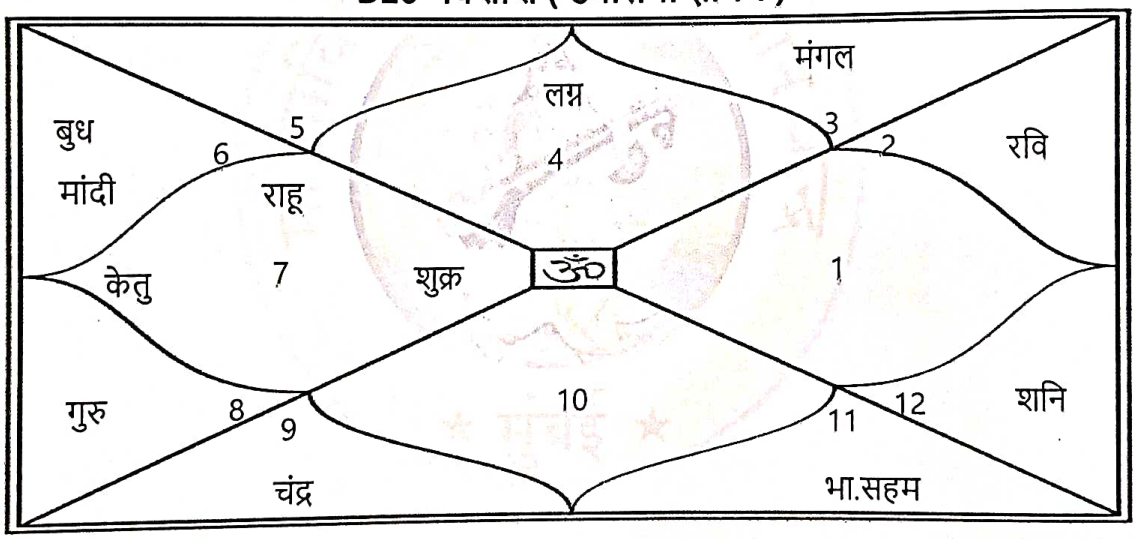

D24=सिध्धांश (विद्या विचार)

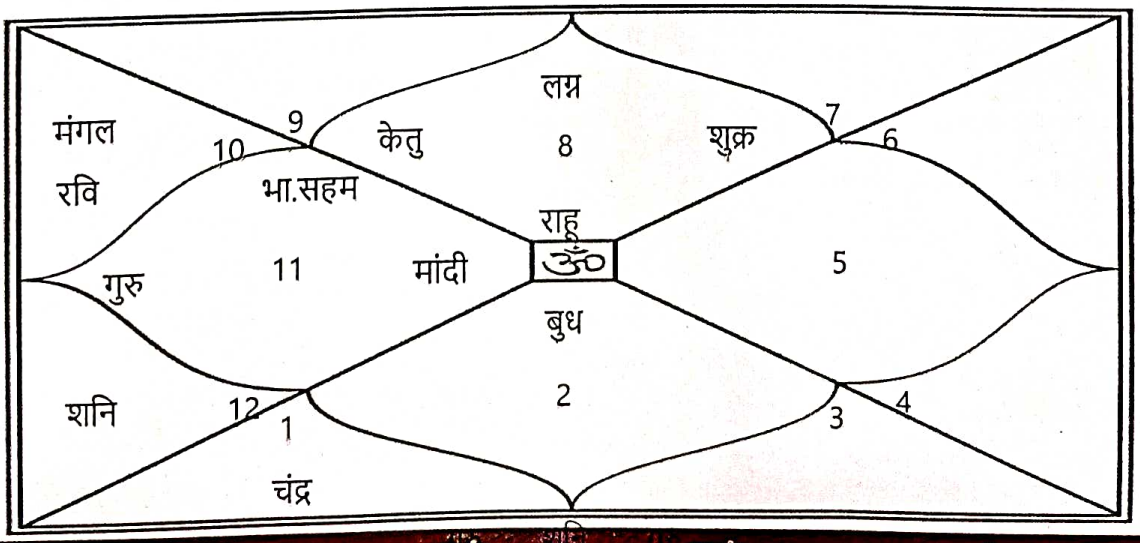

शोडषवर्ग कुंडली : पृष्ठ - 5

D27=सत्तविशांश (शक्ति और पूजा)

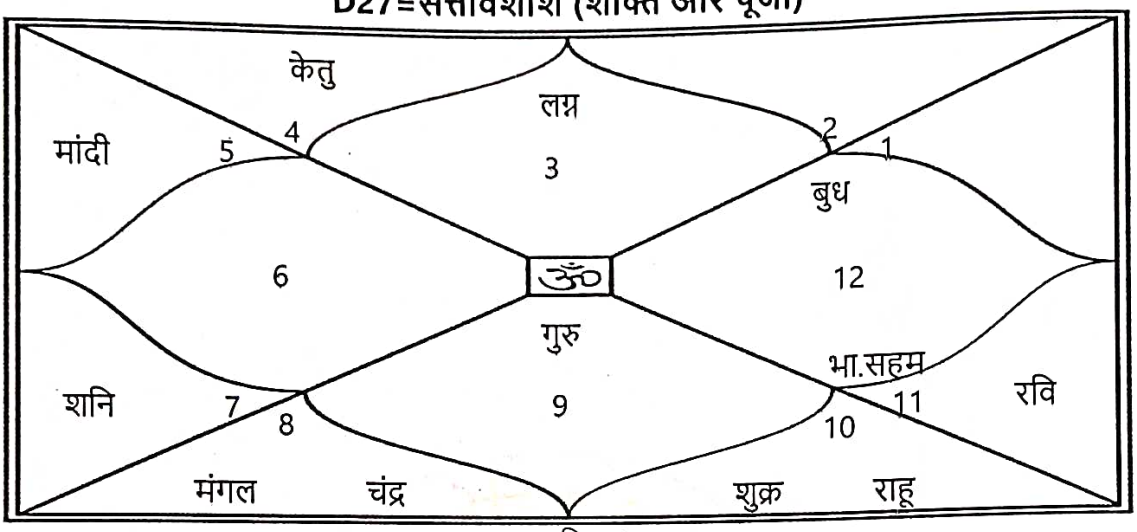

शुक्र >>> शनि >>> शुक्र

D40=खवेदांश (शुभाशुभ ज्ञानम)

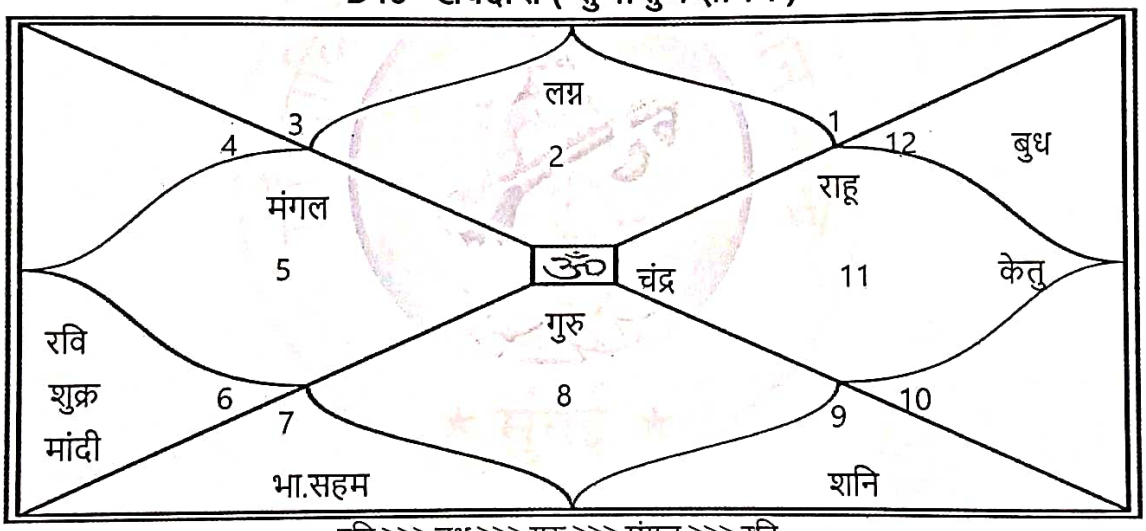

रवि >>> बुध >>> गुरु >>> मंगल >>> रवि

D45=अक्षवेदांश (सर्वास्थिति विचार)

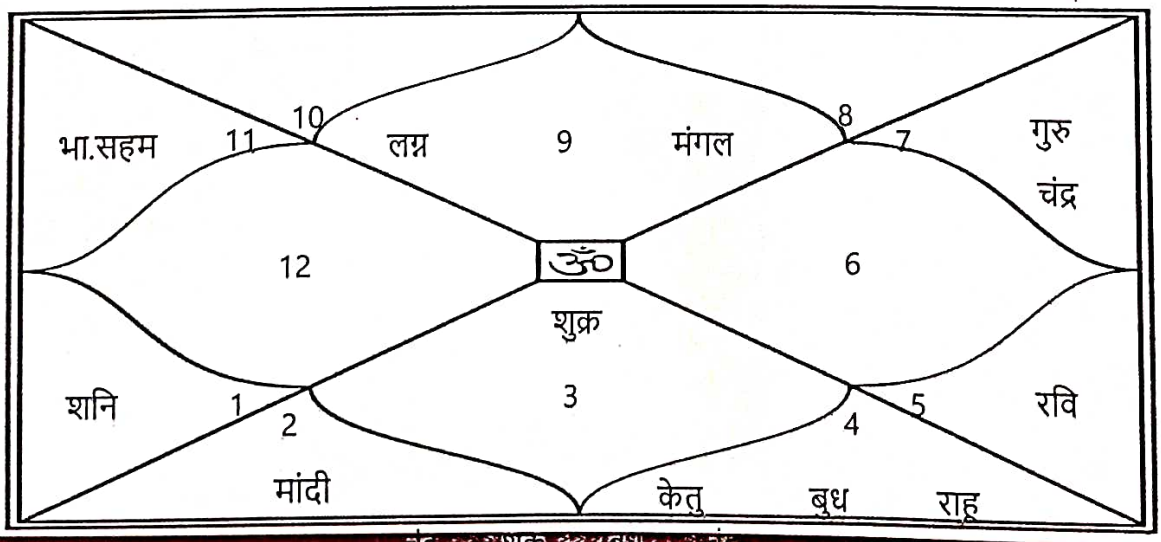

विंशोत्तरी महादशा

(भोग्य दशा : शनि - 06 साल, 03 महीना, 30 दिन)

(भुक्त दशा : शनि - 12 साल, 08 महीना, 01 दिन)

	शनि (19)	23/05/1996 22/09/2002	आयु
-	-	-	-
-	-	-	-
-	-	-	-
-	-	-	-
-	-	-	-
-	-	-	-
+	मंगल	05/05/1997	1
*	राहू	11/03/2000	3
S+	गुरु	22/09/2002	6

	बुध (17)	22/09/2002 22/09/2019	आयु
S	बुध	18/02/2005	8
S+	केतु	15/02/2006	9
S++	शुक्र	16/12/2008	12
+	रवि	22/10/2009	13
++	चंद्र	24/03/2011	14
s--	मंगल	20/03/2012	15
s*	राहू	07/10/2014	18
--	गुरु	12/01/2017	20
++	शनि	22/09/2019	23

	केतु (7)	22/09/2019 22/09/2026	आयु
	केतु	18/02/2020	23
++	शुक्र	20/04/2021	24
*	रवि	25/08/2021	25
--	चंद्र	26/03/2022	25
++	मंगल	23/08/2022	26
s--	राहू	10/09/2023	27
s+	गुरु	16/08/2024	28
--	शनि	25/09/2025	29
+	बुध	22/09/2026	30

	शुक्र (20)	22/09/2026 22/09/2046	आयु
	शुक्र	22/01/2030	33
*	रवि	22/01/2031	34
S+	चंद्र	22/09/2032	36
S+	मंगल	22/11/2033	37
S++	राहू	21/11/2036	40
--	गुरु	23/07/2039	43
s++	शनि	22/09/2042	46
++	बुध	23/07/2045	49
++	केतु	22/09/2046	50

	रवि (6)	22/09/2046 22/09/2052	आयु
	रवि	10/01/2047	50
++	चंद्र	11/07/2047	51
++	मंगल	16/11/2047	51
--	राहू	10/10/2048	52
*	गुरु	29/07/2049	53
*	शनि	11/07/2050	54
++	बुध	17/05/2051	54
*	केतु	22/09/2051	55
s*	शुक्र	22/09/2052	56

	चंद्र (10)	22/09/2052 22/09/2062	आयु
s	चंद्र	23/07/2053	57
s++	मंगल	21/02/2054	57
*	राहू	23/08/2055	59
*	गुरु	22/12/2056	60
--	शनि	23/07/2058	62
*	बुध	23/12/2059	63
--	केतु	23/07/2060	64
S*	शुक्र	23/03/2062	65
S++	रवि	22/09/2062	66

	मंगल (7)	22/09/2062 22/09/2069	आयु
S	मंगल	18/02/2063	66
S--	राहू	08/03/2064	67
S*	गुरु	12/02/2065	68
S*	शनि	23/03/2066	69
S-	बुध	21/03/2067	70
S++	केतु	17/08/2067	71
+	शुक्र	16/10/2068	72
++	रवि	21/02/2069	72
+	चंद्र	22/09/2069	73

	राहू (18)	22/09/2069 22/09/2087	आयु
s	राहू	04/06/2072	76
+	गुरु	29/10/2074	78
*	शनि	04/09/2077	81
*	बुध	23/03/2080	83
--	केतु	10/04/2081	84
++	शुक्र	10/04/2084	87
--	रवि	05/03/2085	88
*	चंद्र	04/09/2086	90
--	मंगल	22/09/2087	91

	गुरु (16)	22/09/2087 22/09/2103	आयु
	गुरु	10/11/2089	93
S+	शनि	23/05/2092	95
S-	बुध	29/08/2094	98
S+	केतु	05/08/2095	99
-	शुक्र	05/04/2098	101
*	रवि	22/01/2099	102
-	चंद्र	23/05/2100	103
s*	मंगल	29/04/2101	104
+	राहू	22/09/2103	107

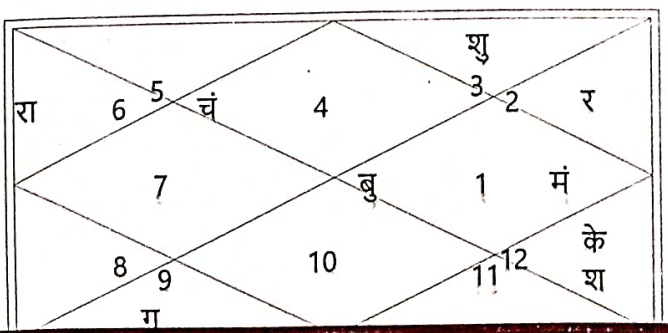

Note:

- Dates specified above are ending dates.
- The sign besides date indicates the following :

S = Sadesati	s = Small Panoti
+ = Friend	- = Enemy
* = Neutral	-- = Bitter Enemy
++ = Intimate	

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर दशा

महादशा - शनि : 23/05/1996 - 22/09/2002

- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -
- - -	- - -	- - -	- - -	- - -

- - -	+ मंगल 05/05/1997	* राहू 11/03/2000	+ गुरु 22/09/2002
- - -	- - -	राहू 08/10/1997	गुरु 12/07/2000
- - -	-- राहू 18/06/1996	+ गुरु 24/02/1998	+ शनि 06/12/2000
- - -	* गुरु 11/08/1996	* शनि 08/08/1998	- बुध 16/04/2001
- - -	* शनि 14/10/1996	* बुध 02/01/1999	+ केतु 09/06/2001
- - -	- बुध 11/12/1996	-- केतु 04/03/1999	- शुक्र 10/11/2001
- - -	++ केतु 03/01/1997	++ शुक्र 24/08/1999	* रवि 26/12/2001
- - -	+ शुक्र 12/03/1997	-- रवि 15/10/1999	- चंद्र 13/03/2002
- - -	++ रवि 01/04/1997	* चंद्र 10/01/2000	* मंगल 06/05/2002
- - -	+ चंद्र 05/05/1997	-- मंगल 11/03/2000	S+ राहू 22/09/2002

महादशा - बुध : 22/09/2002 - 22/09/2019

बुध 18/02/2005	+ केतु 15/02/2006	++ शुक्र 16/12/2008	+ रवि 22/10/2009	++ चंद्र 24/03/201
बुध 25/01/2003	S केतु 11/03/2005	S शुक्र 06/08/2006	S रवि 31/12/2008	चंद्र 04/12/2009
+ केतु 17/03/2003	S++शुक्र 10/05/2005	S* रवि 27/09/2006	S++चंद्र 26/01/2009	++ मंगल 04/01/2010
S++शुक्र 11/08/2003	S* रवि 28/05/2005	S+ चंद्र 22/12/2006	S++मंगल 13/02/2009	* राहू 22/03/2010
S+ रवि 24/09/2003	S-- चंद्र 27/06/2005	S+ मंगल 21/02/2007	S-- राहू 01/04/2009	* गुरु 30/05/2010
S++चंद्र 06/12/2003	S++मंगल 19/07/2005	S++राहू 26/07/2007	S* गुरु 12/05/2009	-- शनि 20/08/2010
S-- मंगल 26/01/2004	S-- राहू 11/09/2005	S-- गुरु 11/12/2007	S* शनि 30/06/2009	* बुध 01/11/2010
S* राहू 06/06/2004	S+ गुरु 29/10/2005	S++शनि 23/05/2008	S++बुध 13/08/2009	-- केतु 02/12/2010
S-- गुरु 01/10/2004	S-- शनि 26/12/2005	S++बुध 16/10/2008	S* केतु 31/08/2009	* शुक्र 26/02/2011
S++शनि 18/02/2005	S+ बुध 15/02/2006	S++केतु 16/12/2008	* शुक्र 22/10/2009	++ रवि 24/03/2011

-- मंगल 20/03/2012	* राहू 07/10/2014	-- गुरु 12/01/2017	++ शनि 22/09/2019
मंगल 14/04/2011	s राहू 07/08/2012	गुरु 26/01/2015	शनि 17/06/2017
-- राहू 07/06/2011	s+ गुरु 09/12/2012	+ शनि 06/06/2015	+ बुध 03/11/2017
* गुरु 25/07/2011	s* शनि 05/05/2013	- बुध 01/10/2015	-- केतु 30/12/2017
* शनि 21/09/2011	s* बुध 14/09/2013	+ केतु 18/11/2015	++ शुक्र 12/06/2018
- बुध 11/11/2011	s-- केतु 08/11/2013	- शुक्र 04/04/2016	* रवि 31/07/2018
s++केतु 02/12/2011	s++शुक्र 12/04/2014	* रवि 16/05/2016	- चंद्र 21/10/2018
s+ शुक्र 01/02/2012	s-- रवि 28/05/2014	- चंद्र 24/07/2016	+ मंगल 18/12/2018
s++रवि 19/02/2012	s* चंद्र 14/08/2014	* मंगल 10/09/2016	* राहू 14/05/2019
s+ चंद्र 20/03/2012	s-- मंगल 07/10/2014	+ राहू 12/01/2017	+ गुरु 22/09/2019

Note : Dates specified above are ending dates, S : Sadesati, s : Small Panoti

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर दशा

महादशा - केतु : 22/09/2019 - 22/09/2026

	केतु	18/02/2020	++	शुक्र	20/04/2021	*	रवि	25/08/2021	--	चंद्र	26/03/2022	++	मंगल	23/08/202
	केतु	01/10/2019		शुक्र	29/04/2020		रवि	26/04/2021		चंद्र	12/09/2021		मंगल	04/04/2022
++	शुक्र	26/10/2019	*	रवि	21/05/2020	++	चंद्र	07/05/2021	++	मंगल	25/09/2021	--	राहू	27/04/2022
*	रवि	02/11/2019	+	चंद्र	25/06/2020	++	मंगल	14/05/2021	*	राहू	27/10/2021	s*	गुरु	16/05/2022
--	चंद्र	15/11/2019	+	मंगल	20/07/2020	--	राहू	02/06/2021	*	गुरु	24/11/2021	s*	शनि	09/06/2022
++	मंगल	23/11/2019	++	राहू	22/09/2020	*	गुरु	19/06/2021	--	शनि	28/12/2021	s-	बुध	30/06/2022
--	राहू	16/12/2019	--	गुरु	18/11/2020	*	शनि	10/07/2021	*	बुध	27/01/2022	s++	केतु	09/07/2022
+	गुरु	05/01/2020	++	शनि	24/01/2021	++	बुध	28/07/2021	--	केतु	08/02/2022	+	शुक्र	03/08/2022
--	शनि	28/01/2020	++	बुध	26/03/2021	*	केतु	04/08/2021	*	शुक्र	16/03/2022	++	रवि	10/08/2022
+	बुध	18/02/2020	++	केतु	20/04/2021	*	शुक्र	25/08/2021	++	रवि	26/03/2022	+	चंद्र	23/08/2022

--	राहू	10/09/2023	+	गुरु	16/08/2024	--	शनि	25/09/2025	+	बुध	22/09/2026
	राहू	19/10/2022	s	गुरु	26/10/2023	s	शनि	19/10/2024		बुध	15/11/2025
+	गुरु	09/12/2022	s+	शनि	19/12/2023	s+	बुध	15/12/2024	+	केतु	06/12/2025
s*	शनि	08/02/2023	s-	बुध	05/02/2024	s--	केतु	08/01/2025	++	शुक्र	05/02/2026
s*	बुध	03/04/2023	s+	केतु	25/02/2024	s++	शुक्र	17/03/2025	+	रवि	23/02/2026
s--	केतु	26/04/2023	s-	शुक्र	22/04/2024	*	रवि	06/04/2025	++	चंद्र	25/03/2026
s++	शुक्र	29/06/2023	s*	रवि	09/05/2024	-	चंद्र	10/05/2025	--	मंगल	15/04/2026
s--	रवि	18/07/2023	s-	चंद्र	06/06/2024	+	मंगल	02/06/2025	*	राहू	08/06/2026
s*	चंद्र	19/08/2023	s*	मंगल	26/06/2024	*	राहू	02/08/2025	--	गुरु	27/07/2026
s--	मंगल	10/09/2023	s+	राहू	16/08/2024	+	गुरु	25/09/2025	++	शनि	22/09/2026

महादशा - शुक्र : 22/09/2026 - 22/09/2046

	शुक्र	22/01/2030	*	रवि	22/01/2031	+	चंद्र	22/09/2032	+	मंगल	22/11/2033	++	राहू	21/11/203
	शुक्र	13/04/2027		रवि	09/02/2030		चंद्र	14/03/2031	S	मंगल	16/10/2032	S	राहू	05/05/2034
*	रवि	13/06/2027	++	चंद्र	11/03/2030	++	मंगल	18/04/2031	S--	राहू	19/12/2032	S+	गुरु	28/09/2034
+	चंद्र	22/09/2027	++	मंगल	02/04/2030	*	राहू	18/07/2031	S*	गुरु	14/02/2033	S*	शनि	21/03/2035
+	मंगल	02/12/2027	--	राहू	26/05/2030	*	गुरु	08/10/2031	S*	शनि	23/04/2033	S*	बुध	23/08/2035
++	राहू	02/06/2028	*	गुरु	14/07/2030	--	शनि	12/01/2032	S-	बुध	22/06/2033	S--	केतु	26/10/2035
--	गुरु	11/11/2028	*	शनि	10/09/2030	*	बुध	07/04/2032	S++	केतु	17/07/2033	S++	शुक्र	25/04/2036
++	शनि	23/05/2029	++	बुध	01/11/2030	--	केतु	13/05/2032	S+	शुक्र	26/09/2033	S--	रवि	19/06/2036
++	बुध	12/11/2029	*	केतु	22/11/2030	S*	शुक्र	22/08/2032	S++	रवि	17/10/2033	S*	चंद्र	19/09/2036
++	केतु	22/01/2030	*	शुक्र	22/01/2031	S++	रवि	22/09/2032	S+	चंद्र	22/11/2033	S--	मंगल	21/11/2036

--	गुरु	23/07/2039	++	शनि	22/09/2042	++	बुध	23/07/2045	++	केतु	22/09/2046
S	गुरु	31/03/2037		शनि	23/01/2040	s	बुध	16/02/2043		केतु	17/08/2045
S+	शनि	02/09/2037	+	बुध	04/07/2040	s+	केतु	17/04/2043	++	शुक्र	27/10/2045
S-	बुध	17/01/2038	--	केतु	10/09/2040	s++	शुक्र	07/10/2043	*	रवि	17/11/2045
S+	केतु	15/03/2038	++	शुक्र	22/03/2041	s+	रवि	27/11/2043	--	चंद्र	23/12/2045
S-	शुक्र	25/08/2038	*	रवि	18/05/2041	++	चंद्र	21/02/2044	++	मंगल	16/01/2046
S*	रवि	12/10/2038	-	चंद्र	23/08/2041	--	मंगल	22/04/2044	--	राहू	21/03/2046
-	चंद्र	02/01/2039	s+	मंगल	29/10/2041	*	राहू	24/09/2044	+	गुरु	17/05/2046
*	मंगल	27/02/2039	s*	राहू	21/04/2042	--	गुरु	09/02/2045	--	शनि	24/07/2046
+	राहू	23/07/2039	s+	गुरु	22/09/2042	++	शनि	23/07/2045	+	बुध	22/09/2046

Note : Dates specified above are ending dates. S : Sadesati, s : Small Panoti

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर दशा

महादशा - रवि : 22/09/2046 - 22/09/2052

रवि	10/01/2047
रवि	28/09/2046
++ चंद्र	07/10/2046
++ मंगल	13/10/2046
-- राहू	29/10/2046
* गुरु	13/11/2046
* शनि	30/11/2046
++ बुध	16/12/2046
* केतु	22/12/2046
* शुक्र	10/01/2047

++ चंद्र	11/07/2047
चंद्र	25/01/2047
++ मंगल	05/02/2047
* राहू	04/03/2047
* गुरु	28/03/2047
-- शनि	26/04/2047
* बुध	22/05/2047
-- केतु	02/06/2047
* शुक्र	02/07/2047
++ रवि	11/07/2047

++ मंगल	16/11/2047
मंगल	19/07/2047
-- राहू	07/08/2047
* गुरु	24/08/2047
* शनि	13/09/2047
- बुध	01/10/2047
++ केतु	09/10/2047
+ शुक्र	30/10/2047
++ रवि	05/11/2047
+ चंद्र	16/11/2047

-- राहू	10/10/2048
राहू	04/01/2048
+ गुरु	17/02/2048
* शनि	09/04/2048
* बुध	26/05/2048
-- केतु	14/06/2048
++ शुक्र	08/08/2048
-- रवि	24/08/2048
* चंद्र	21/09/2048
-- मंगल	10/10/2048

* गुरु	29/07/2049
गुरु	18/11/2048
+ शनि	03/01/2049
- बुध	13/02/2049
+ केतु	02/03/2049
- शुक्र	20/04/2049
* रवि	05/05/2049
- चंद्र	29/05/2049
* मंगल	15/06/2049
+ राहू	29/07/2049

* शनि	11/07/2050
शनि	22/09/2049
+ बुध	10/11/2049
-- केतु	30/11/2049
++ शुक्र	27/01/2050
* रवि	14/02/2050
- चंद्र	14/03/2050
+ मंगल	04/04/2050
* राहू	26/05/2050
+ गुरु	11/07/2050

++ बुध	17/05/2051
बुध	24/08/2050
+ केतु	11/09/2050
++ शुक्र	02/11/2050
+ रवि	17/11/2050
++ चंद्र	13/12/2050
-- मंगल	31/12/2050
* राहू	16/02/2051
-- गुरु	29/03/2051
++ शनि	17/05/2051

* केतु	22/09/2051
केतु	25/05/2051
++ शुक्र	15/06/2051
* रवि	22/06/2051
-- चंद्र	02/07/2051
++ मंगल	10/07/2051
-- राहू	29/07/2051
+ गुरु	15/08/2051
-- शनि	04/09/2051
+ बुध	22/09/2051

* शुक्र	22/09/2052
शुक्र	22/11/2051
* रवि	10/12/2051
+ चंद्र	10/01/2052
+ मंगल	31/01/2052
s++राहू	26/03/2052
s-- गुरु	14/05/2052
s++शनि	11/07/2052
s++बुध	31/08/2052
s++केतु	22/09/2052

महादशा - चंद्र : 22/09/2052 - 22/09/2062

चंद्र	23/07/2053
s चंद्र	17/10/2052
s++मंगल	04/11/2052
s* राहू	19/12/2052
s* गुरु	29/01/2053
s-- शनि	18/03/2053
s* बुध	30/04/2053
s-- केतु	18/05/2053
s* शुक्र	08/07/2053
s++रवि	23/07/2053

++ मंगल	21/02/2054
s मंगल	04/08/2053
s-- राहू	05/09/2053
s* गुरु	04/10/2053
s* शनि	06/11/2053
s- बुध	07/12/2053
s++केतु	19/12/2053
s+ शुक्र	24/01/2054
s++रवि	03/02/2054
s+ चंद्र	21/02/2054

* राहू	23/08/2055
s राहू	14/05/2054
+ गुरु	26/07/2054
s* शनि	21/10/2054
s* बुध	07/01/2055
-- केतु	08/02/2055
++ शुक्र	10/05/2055
-- रवि	06/06/2055
* चंद्र	22/07/2055
-- मंगल	23/08/2055

* गुरु	22/12/2056
गुरु	27/10/2055
+ शनि	12/01/2056
- बुध	21/03/2056
+ केतु	18/04/2056
- शुक्र	08/07/2056
* रवि	02/08/2056
- चंद्र	11/09/2056
* मंगल	10/10/2056
+ राहू	22/12/2056

-- शनि	23/07/205
शनि	23/03/205
+ बुध	13/06/205
-- केतु	17/07/205
++ शुक्र	21/10/205
* रवि	19/11/205
- चंद्र	07/01/205
+ मंगल	09/02/205
* राहू	07/05/205
+ गुरु	23/07/205

* बुध	23/12/2059
बुध	04/10/2058
+ केतु	04/11/2058
++ शुक्र	29/01/2059
+ रवि	24/02/2059
++ चंद्र	08/04/2059
-- मंगल	08/05/2059
* राहू	25/07/2059
-- गुरु	02/10/2059
++ शनि	23/12/2059

-- केतु	23/07/2060
केतु	04/01/2060
++ शुक्र	09/02/2060
* रवि	19/02/2060
-- चंद्र	08/03/2060
++ मंगल	20/03/2060
-- राहू	21/04/2060
+ गुरु	20/05/2060
-- शनि	22/06/2060
+ बुध	23/07/2060

* शुक्र	23/03/2062
शुक्र	01/11/2060
* रवि	02/12/2060
+ चंद्र	21/01/2061
+ मंगल	26/02/2061
++ राहू	28/05/2061
S-- गुरु	17/08/2061
S++शनि	22/11/2061
++ बुध	16/02/2062
S++केतु	23/03/2062

++ रवि	22/09/2062
S रवि	02/04/2062
S++चंद्र	17/04/2062
S++मंगल	27/04/2062
S-- राहू	25/05/2062
S* गुरु	18/06/2062
S* शनि	17/07/2062
S++बुध	12/08/2062
S* केतु	23/08/2062
S* शुक्र	22/09/2062

Note : Dates specified above are ending dates, S : Sadesati, s : Small Panoti

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर दशा

महादशा - मंगल : 22/09/2062 - 22/09/2069

मंगल	18/02/2063	-- राहू	08/03/2064	* गुरु	12/02/2065	* शनि	23/03/2066	- बुध	21/03/2067
S मंगल	01/10/2062	S राहू	17/04/2063	S गुरु	22/04/2064	S शनि	17/04/2065	S बुध	14/05/2066
S-- राहू	23/10/2062	S+ गुरु	07/06/2063	S+ शनि	15/06/2064	S+ बुध	13/06/2065	S+ केतु	04/06/2066
S* गुरु	12/11/2062	S* शनि	07/08/2063	S- बुध	02/08/2064	S-- केतु	07/07/2065	S++शुक्र	03/08/2066
S* शनि	06/12/2062	S* बुध	30/09/2063	S+ केतु	22/08/2064	S++शुक्र	12/09/2065	S+ रवि	21/08/2066
S- बुध	27/12/2062	S-- केतु	22/10/2063	S- शुक्र	18/10/2064	S* रवि	02/10/2065	S++चंद्र	21/09/2066
S++केतु	04/01/2063	S++शुक्र	25/12/2063	S* रवि	04/11/2064	S- चंद्र	05/11/2065	S-- मंगल	12/10/2066
S+ शुक्र	29/01/2063	S-- रवि	13/01/2064	S- चंद्र	03/12/2064	S+ मंगल	29/11/2065	S* राहू	05/12/2066
S++रवि	06/02/2063	S* चंद्र	14/02/2064	S* मंगल	22/12/2064	S* राहू	28/01/2066	S-- गुरु	22/01/2067
S+ चंद्र	18/02/2063	S-- मंगल	08/03/2064	S+ राहू	12/02/2065	S+ गुरु	23/03/2066	S++शनि	21/03/2067

++ केतु	17/08/2067	+ शुक्र	16/10/2068	++ रवि	21/02/2069	+ चंद्र	22/09/2069
S केतु	29/03/2067	S शुक्र	27/10/2067	रवि	22/10/2068	चंद्र	10/03/2069
S++शुक्र	23/04/2067	S* रवि	17/11/2067	++ चंद्र	02/11/2068	++ मंगल	23/03/2069
S* रवि	01/05/2067	S+ चंद्र	23/12/2067	++ मंगल	09/11/2068	* राहू	24/04/2069
S-- चंद्र	13/05/2067	S+ मंगल	16/01/2068	-- राहू	29/11/2068	* गुरु	22/05/2069
S++मंगल	22/05/2067	S++राहू	20/03/2068	* गुरु	16/12/2068	-- शनि	25/06/2069
S-- राहू	13/06/2067	S-- गुरु	16/05/2068	* शनि	05/01/2069	* बुध	25/07/2069
S+ गुरु	03/07/2067	S++शनि	23/07/2068	++ बुध	23/01/2069	-- केतु	07/08/2069
S-- शनि	27/07/2067	++ बुध	21/09/2068	* केतु	30/01/2069	* शुक्र	11/09/2069
S+ बुध	17/08/2067	++ केतु	16/10/2068	* शुक्र	21/02/2069	++ रवि	22/09/2069

महादशा - राहू : 22/09/2069 - 22/09/2087

राहू	04/06/2072	+ गुरु	29/10/2074	* शनि	04/09/2077	* बुध	23/03/2080	-- केतु	10/04/208
राहू	17/02/2070	s गुरु	29/09/2072	शनि	11/04/2075	बुध	13/01/2078	केतु	14/04/2080
+ गुरु	28/06/2070	+ शनि	15/02/2073	+ बुध	06/09/2075	+ केतु	09/03/2078	++ शुक्र	17/06/2080
s* शनि	01/12/2070	s- बुध	19/06/2073	-- केतु	06/11/2075	++ शुक्र	11/08/2078	* रवि	06/07/2080
s* बुध	20/04/2071	s+ केतु	09/08/2073	++ शुक्र	27/04/2076	+ रवि	27/09/2078	-- चंद्र	07/08/2080
s-- केतु	17/06/2071	- शुक्र	02/01/2074	* रवि	18/06/2076	++ चंद्र	13/12/2078	++ मंगल	30/08/2080
s++शुक्र	28/11/2071	* रवि	15/02/2074	- चंद्र	13/09/2076	-- मंगल	06/02/2079	-- राहू	26/10/2080
s-- रवि	16/01/2072	- चंद्र	29/04/2074	+ मंगल	13/11/2076	* राहू	25/06/2079	+ गुरु	16/12/2080
s* चंद्र	07/04/2072	* मंगल	19/06/2074	* राहू	18/04/2077	-- गुरु	27/10/2079	-- शनि	15/02/2081
s-- मंगल	04/06/2072	+ राहू	29/10/2074	+ गुरु	04/09/2077	++ शनि	23/03/2080	+ बुध	10/04/2081

++ शुक्र	10/04/2084	-- रवि	05/03/2085	* चंद्र	04/09/2086	-- मंगल	22/09/2087
शुक्र	10/10/2081	रवि	27/04/2084	चंद्र	20/04/2085	मंगल	26/09/2086
* रवि	04/12/2081	++ चंद्र	24/05/2084	++ मंगल	22/05/2085	-- राहू	23/11/2086
s+ चंद्र	05/03/2082	++ मंगल	12/06/2084	* राहू	12/08/2085	* गुरु	13/01/2087
s+ मंगल	08/05/2082	-- राहू	01/08/2084	* गुरु	24/10/2085	* शनि	15/03/2087
s++राहू	19/10/2082	* गुरु	13/09/2084	-- शनि	19/01/2086	- बुध	08/05/2087
s-- गुरु	15/03/2083	* शनि	04/11/2084	* बुध	06/04/2086	++ केतु	30/05/2087
s++शनि	04/09/2083	++ बुध	21/12/2084	-- केतु	08/05/2086	+ शुक्र	02/08/2087
s++बुध	06/02/2084	* केतु	09/01/2085	* शुक्र	07/08/2086	++ रवि	21/08/2087
++ केतु	10/04/2084	* शुक्र	05/03/2085	++ रवि	04/09/2086	+ चंद्र	22/09/2087

Note : Dates specified above are ending dates. S : Sadesati, s : Small Panoti

Friend Enemy Neutral ++ Intimate Bitter Enemy

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर दशा

महादशा - गुरु : 22/09/2087 - 22/09/2103

	गुरु	10/11/2089	+	शनि	23/05/2092	-	बुध	29/08/2094	+	केतु	05/08/2095	-	शुक्र	05/04/2098
	गुरु	04/01/2088		शनि	05/04/2090	S	बुध	17/09/2092	S	केतु	18/09/2094	S	शुक्र	14/01/2096
+	शनि	07/05/2088	+	बुध	14/08/2090	S+	केतु	04/11/2092	S++	शुक्र	13/11/2094	S*	रवि	03/03/2096
-	बुध	25/08/2088	S--	केतु	07/10/2090	S++	शुक्र	22/03/2093	S*	रवि	30/11/2094	S+	चंद्र	23/05/2096
+	केतु	09/10/2088	++	शुक्र	10/03/2091	S+	रवि	03/05/2093	S--	चंद्र	29/12/2094	S+	मंगल	19/07/2096
-	शुक्र	16/02/2089	*	रवि	26/04/2091	S++	चंद्र	11/07/2093	S++	मंगल	18/01/2095	S++	राहू	12/12/2096
*	रवि	27/03/2089	S-	चंद्र	12/07/2091	S--	मंगल	28/08/2093	S--	राहू	10/03/2095	S--	गुरु	21/04/2097
-	चंद्र	31/05/2089	S+	मंगल	04/09/2091	S*	राहू	30/12/2093	S+	गुरु	24/04/2095	S++	शनि	22/09/2097
*	मंगल	16/07/2089	S*	राहू	20/01/2092	S--	गुरु	20/04/2094	S--	शनि	17/06/2095	++	बुध	07/02/2098
+	राहू	10/11/2089	S+	गुरु	23/05/2092	S++	शनि	29/08/2094	S+	बुध	05/08/2095	++	केतु	05/04/2098

*	रवि	22/01/2099	-	चंद्र	23/05/2100	*	मंगल	29/04/2101	+	राहू	22/09/2103
	रवि	19/04/2098		चंद्र	03/03/2099		मंगल	12/06/2100	s	राहू	07/09/2101
S++	चंद्र	14/05/2098	++	मंगल	01/04/2099	--	राहू	02/08/2100	s+	गुरु	02/01/2102
S++	मंगल	31/05/2098	*	राहू	13/06/2099	s*	गुरु	16/09/2100	s*	शनि	21/05/2102
--	राहू	13/07/2098	*	गुरु	17/08/2099	s*	शनि	09/11/2100	s*	बुध	22/09/2102
*	गुरु	21/08/2098	--	शनि	02/11/2099	s-	बुध	28/12/2100	s--	केतु	12/11/2102
*	शनि	07/10/2098	s*	बुध	10/01/2100	s++	केतु	16/01/2101	++	शुक्र	07/04/2103
++	बुध	17/11/2098	s--	केतु	07/02/2100	s+	शुक्र	14/03/2101	--	रवि	21/05/2103
*	केतु	04/12/2098	*	शुक्र	28/04/2100	s++	रवि	31/03/2101	*	चंद्र	02/08/2103
*	शुक्र	22/01/2099	++	रवि	23/05/2100	s+	चंद्र	29/04/2101	--	मंगल	22/09/2103

Note : Dates specified above are ending dates, S : Sadesati, s : Small Panoti

तनु भाव

जल तत्व

1

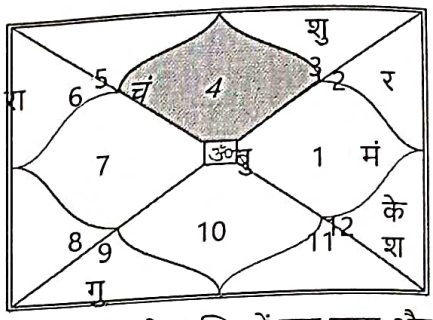

पहले भाव का महत्व, कर्क राशि, कर्क लग्न में। "तनु भाव।"

1. **व्यक्तित्व और शारीरिक लक्षण (Personality and Physical Appearance):** कर्क राशि के पहले घर में होने से जातक को एक भावुक और संवेदनशील व्यक्तित्व प्रदान होता है। ऐसे जातक अक्सर चेहरे पर भावनाओं का प्रदर्शन करते हैं और उनकी आँखें विशेष रूप अभिव्यक्तिपूर्ण होती हैं। कर्क लग्न होने से इस प्रभाव को और भी बढ़ाया जाता है, जिससे व्यक्ति में एक नरम और स्नेही छवि बनती है। संयुक्त प्रभाव यह होता है कि जातक अत्यधिक अनुकूलनीय होते हैं और आसानी से दूसरों के साथ घुलमिल जाते हैं।
2. **भावनात्मक स्थिति (Emotional State):** कर्क राशि के पहले घर में होने का अर्थ है कि जातक की भावनाएँ गहरी और परिवर्तनशील होती हैं। ऐसे जातक अपनी भावनाओं को गहराई से महसूस करते हैं और कभी-कभी मूड स्विंग्स का अनुभव कर सकते हैं। कर्क लग्न इसे और भी प्रबल करता है, जिससे जातक बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण और समझदार बन जाते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने और दूसरों के भावनात्मक अवस्थाओं के प्रति अत्यधिक सचेत रहते हैं।
3. **पारिवारिक जीवन (Family Life):** कर्क राशि पारिवारिक जीवन और घर के प्रति गहरी भावनाओं का प्रतीक है। पहले घर में कर्क राशि होने से जातक को अपने परिवार के प्रति एक गहरी निष्ठा और समर्पण मिलता है। कर्क लग्न होने से यह प्रवृत्ति और भी मजबूत होती है, जिससे जातक पारिवारिक बंधनों और घरेलू सुख-सुविधाओं को बहुत महत्व देते हैं। संयुक्त प्रभाव यह होता है कि जातक एक स्थिर और सुरक्षित पारिवारिक जीवन की ओर अग्रसर होते हैं।
4. **करियर और पेशेवर जीवन (Career and Professional Life):** कर्क राशि का पहला घर पेशेवर जीवन में सहानुभूति और देखभाल करने की क्षमता को दर्शाता है। जातक ऐसे करियर में सफल हो सकते हैं जहां उन्हें दूसरों की मदद करने का अवसर मिले, जैसे कि चिकित्सा, शिक्षा, या समाज सेवा। कर्क लग्न होने से ये प्रवृत्तियाँ और भी प्रबल होती हैं, जिससे जातक अपने करियर में गहरी संतुष्टि प्राप्त करते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पेशेवर जीवन में उच्च स्तर की सहानुभूति और देखभाल के साथ सफलता प्राप्त करते हैं।
5. **स्वास्थ्य (Health):** कर्क राशि का पहला घर स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है, खासकर पेट और छाती के क्षेत्र में। जातक को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता होती है। कर्क लग्न होने से यह प्रवृत्ति और भी मजबूत होती है, जिससे जातक को अपने स्वास्थ्य के प्रति और भी अधिक सचेत रहना चाहिए। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक को अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए प्रोएक्टिव रहने की आवश्यकता होती है, खासकर पाचन तंत्र और श्वास प्रणाली के संबंध में।
6. **वित्तीय स्थिति (Financial Situation):** कर्क राशि के पहले घर में होने से वित्तीय स्थिरता की इच्छा मजबूत होती है। जातक सुरक्षा की तलाश में होते हैं और अपने वित्तीय भविष्य के प्रति सावधानी बरतते हैं। कर्क लग्न होने से यह प्रवृत्ति और भी बढ़ जाती है, जिससे जातक वित्तीय सुरक्षा और स्थिरता के प्रति अधिक सजग होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने वित्तीय निर्णयों में सावधानी और बुद्धिमानी बरतते हैं।
7. **आध्यात्मिकता और धार्मिक विचार (Spirituality and Religious Beliefs):** कर्क राशि के पहले घर में होने से आध्यात्मिकता और धार्मिक विचारों के प्रति एक गहरी रुचि और संवेदनशीलता होती है। जातक अपने आध्यात्मिक और धार्मिक मार्गदर्शन के प्रति गहराई से जुड़ाव महसूस करते हैं। कर्क लग्न होने से यह प्रवृत्ति और भी प्रगाढ होती

तनु भाव

जल तत्व

1

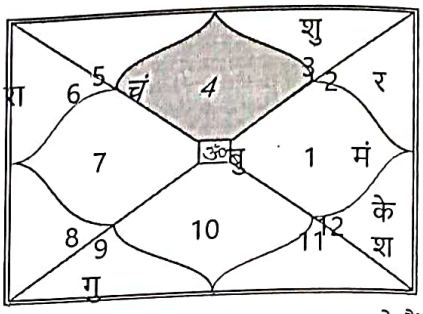

है, जिससे जातक अपने जीवन में आध्यात्मिकता और धार्मिकता को एक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने जीवन में आध्यात्मिक शांति और संतोष की तलाश में रहते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न वाले जातक भावुक, सहानुभूतिपूर्ण, और बंधनों के प्रति समर्पित होते हैं। वे अपने पेशेवर जीवन में सहानुभूति और देखभाल के साथ सफलता प्राप्त करते हैं और वित्तीय स्थिरता के प्रति सजग रहते हैं।

नकारात्मक पहलू: इन जातकों को अपनी भावनात्मक स्थिरता और स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे मूड स्विंग्स और पाचन संबंधी समस्याओं का अनुभव कर सकते हैं।

सुझाव: कर्क लग्न वाले जातकों को अपने भावनात्मक संतुलन को मजबूत बनाने के लिए ध्यान और योग प्रथाओं को अपनाना चाहिए। वित्तीय निर्णय लेते समय सावधानी बरतनी चाहिए और स्वास्थ्य के प्रति प्रोएक्टिव रहना चाहिए।

चंद्र पहले भाव में, कर्क राशि में, कर्क लग्न में।

" वैदिक ज्योतिष में चंद्र ग्रह (चंद्रमा) का मन पर गहरा प्रभाव होता है, जो हमारी भावनाओं और अंतर्ज्ञान को आकार देता है। मन को नियंत्रित करके, हम चंद्र के प्रभाव को संचालित कर सकते हैं, जिससे हमारे जीवन को सुधारने की क्षमता मिलती है। 'मौन' इस नियंत्रण की कुंजी है, जो न केवल बाहरी शांति बल्कि आंतरिक शांति और स्थिरता की अवस्था है। मौन के अभ्यास से, हम अपने विचारों और भावनाओं पर गहराई से ध्यान दे सकते हैं, जिससे चंद्र के नकारात्मक प्रभावों को कम करने और सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाने में मदद मिलती है। मौन का अभ्यास ध्यान, गहरी सांस लेने की तकनीकों, या प्रकृति में समय बिताने जैसे साधनों से किया जा सकता है। यह हमें आत्म-चिंतन के लिए एक स्थान प्रदान करता है, जहाँ हम अपने आप को बेहतर समझ सकते हैं और अधिक संतुलित और सार्थक जीवन जी सकते हैं। "

चंद्र ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *भावनाओं, अंतर्ज्ञान और मातृत्व गुणों का प्रतीक।*
- *भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है।*
- *सार्वजनिक संबंधों और मातृ संबंधों में मजबूती प्रदान करता है।*
- *रचनात्मकता, कल्पना और कलात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करता है।*
- *मानसिक शांति, घरेलू सुख और संतोष का समर्थन करता है।*

चंद्र ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *भावनात्मक अस्थिरता, मूड स्विंग्स और अतिसंवेदनशीलता को जन्म दे सकता है।*
- *निर्भरता, चिपकने की प्रवृत्ति और छोड़ने में कठिनाई का कारण बन सकता है।*

तनु भाव

जल तत्व

1

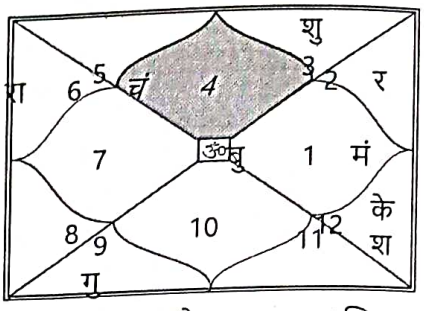

- अतिप्रतिक्रिया, तर्कहीन भय और असुरक्षा को बढ़ावा दे सकता है।
- पलायनवाद, आलस्य और दिशाहीनता को प्रोत्साहित करता है।
- मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिससे अवसाद या चिंता हो सकती है।

1. **आत्म-विश्वास और भावनात्मक स्थिरता (Self-confidence and Stability):** चंद्र जब कर्क राशि में प्रथम भाव में होता है, तो जातक के भीतर आत्म-विश्वास और भावनात्मक स्थिरता बढ़ जाती है। कर्क राशि चंद्र की स्वराशि होती है, इसलिए चंद्र यहाँ पर सशक्त और सकारात्मक प्रभाव देता है।
2. **सहज ज्ञान और अंतर्ज्ञान (Intuition and Instinct):** चंद्र का यह स्थान जातक को उच्च स्तरीय सहज ज्ञान और अंतर्ज्ञान प्रदान करता है। ये व्यक्ति अपने आस-पास के माहौल और लोगों की भावनाओं को गहराई से समझ सकते हैं।
3. **भावनात्मक सुरक्षा की आवश्यकता (Need for Emotional Security):** चंद्र की यह स्थिति जातक को भावनात्मक सुरक्षा की गहरी आवश्यकता महसूस कराती है। ये व्यक्ति अपने परिवार और निकट के संबंधों के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं।
4. **सामाजिक और पारिवारिक संबंध (Social and Familial Connections):** कर्क राशि का प्रभाव जातक को पारिवारिक और सामाजिक जीवन में गहराई से जुड़ने की प्रवृत्ति देता है। ये व्यक्ति पारिवारिक मूल्यों और परंपराओं को महत्व देते हैं।
5. **भावनाओं की गहराई (Depth of Emotions):** चंद्र की यह स्थिति जातक को गहन भावनात्मक गहराई प्रदान करती है। ये व्यक्ति अपनी भावनाओं को गहराई से अनुभव करते हैं और व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
6. **आत्म-चिंतन और आत्म-सुधार (Self-reflection and Self-improvement):** चंद्र ग्रह की यह स्थिति जातक को आत्म-चिंतन और आत्म-सुधार की ओर प्रेरित करती है। ये व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और जीवन को बेहतर बनाने के लिए स्वयं पर काम करने के इच्छुक होते हैं।

अतिरिक्त पठन

1. **चंद्र का सप्तम दृष्टि (Moon's 7th Aspect):** चंद्र से सप्तम भाव पर दृष्टि होने से जातक के विवाह और साझेदारी के मामलों में प्रभाव पड़ता है। यह साझेदारियों में सहयोग और समझदारी लाने का संकेत देता है।
2. **चंद्र की कर्क राशि (Moon's Cancer Sign):** कर्क चंद्र की स्वराशि है, इसलिए यहां चंद्र का प्रभाव सबसे अधिक अनुकूल होता है।
3. **चंद्र स्थित राशि के स्वामी का प्रभाव (Effect of the Lord of the Sign where Moon is Placed):** चूँकि चंद्र कर्क में है, इसलिए चंद्र स्वयं ही इस राशि का स्वामी है। इससे जातक को आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का भाव मिलता है।
4. **लग्न राशि के स्वामी का प्रभाव (Effect of the Lord of the Lagna Sign):** कर्क लग्न होने से चंद्र ही लग्नेश है। इससे जातक के व्यक्तित्व और जीवन पर चंद्र का गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे उन्हें जीवन में सुरक्षा और स्थिरता की भावना मिलती है।

सुझाव

तनु भाव

जल तत्व

1

1. **भावनात्मक संतुलन:** अपनी भावनाओं को संतुलित रखने और अत्यधिक संवेदनशीलता से बचने की कोशिश करें।
2. **पारिवारिक संबंधों में निवेश:** पारिवारिक संबंधों और मित्रों के साथ संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान दें।
3. **आत्म-चिंतन और आत्म-सुधार:** नियमित आत्म-चिंतन के लिए समय निकालें और व्यक्तिगत विकास पर काम करें।

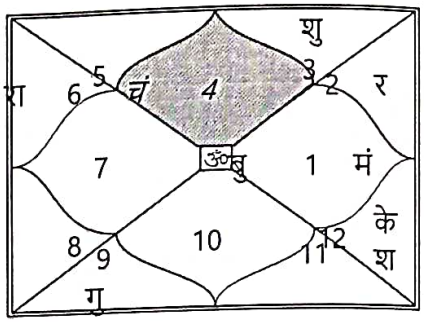

सम्पूर्ण जीवन दर्पण गोल्ड

धन भाव

अग्नि तत्व

2

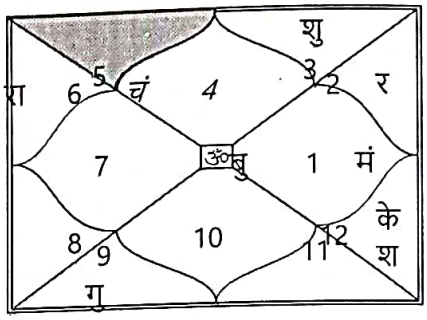

दूसरे भाव का महत्व, सिंह राशि, कर्क लग्न में। "धन भाव।"

1. **धन और संपत्ति (Wealth and Possessions):** सिंह राशि के दूसरे घर में होने से जातक को धन संचय करने की एक मजबूत इच्छा होती है। सिंह राशि रॉयल्टी और गरिमा का प्रतीक है, जिससे जातक अपने धन का उपयोग जीवन की बेहतरी के लिए करना चाहते हैं। कर्क लग्न से यह धन संचय पारिवारिक सुरक्षा और सुख-सुविधा के लिए होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने और अपने परिवार के लिए एक स्थिर वित्तीय आधार बनाने में सक्षम होते हैं।
2. **पारिवारिक जीवन (Family Life):** सिंह राशि में दूसरा घर होने से जातक पारिवारिक जीवन में नेतृत्व की भूमिका निभाते हैं। वे अपने परिवार के प्रति गर्व और समर्पण की भावना रखते हैं। कर्क लग्न के साथ, यह नेतृत्व भावनात्मक संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने परिवार की देखभाल के लिए एक मजबूत और सहायक आधार प्रदान करते हैं।
3. **वाणी और संचार (Speech and Communication):** सिंह राशि का दूसरा घर जातक को एक प्रभावशाली वाणी प्रदान करता है। वे अपनी बातों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करते हैं। कर्क लग्न के साथ, इस वाणी में भावनात्मक गहराई भी शामिल होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक दूसरों के साथ संवाद करते समय गहरी समझ और आत्मविश्वास दिखाते हैं।
4. **मूल्य और संस्कार (Values and Ethics):** सिंह राशि में दूसरा घर होने से जातक में उच्च नैतिक मूल्य और आत्मसम्मान की भावना होती है। कर्क लग्न होने से ये मूल्य पारिवारिक परंपराओं और भावनात्मक सुरक्षा से गहराई से जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने और अपने परिवार के लिए उच्च आदर्शों और मूल्यों का पालन करते हैं।
5. **आत्मविश्वास (Self-Confidence):** सिंह राशि के दूसरे घर में होने से जातक में आत्मविश्वास की मजबूत भावना होती है। कर्क लग्न होने से यह आत्मविश्वास न केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए बल्कि पारिवारिक सुख-सुविधा के लिए भी होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता और साहस के साथ कार्य करते हैं।
6. **सामाजिक स्थिति (Social Status):** सिंह राशि के दूसरे घर में होने से जातक समाज में उच्च स्थिति और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह सामाजिक स्थिति पारिवारिक और भावनात्मक संबंधों के माध्यम से भी प्रकट होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए कार्य करते हैं।
7. **शिक्षा और ज्ञान (Education and Knowledge):** सिंह राशि के दूसरे घर में होने से जातक में ज्ञान की प्राप्ति और शिक्षा के प्रति उत्साह होता है। कर्क लग्न होने से यह शिक्षा न केवल आत्म-विकास के लिए बल्कि पारिवारिक और सामाजिक उन्नति के लिए भी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी शिक्षा और ज्ञान का उपयोग अपने और अपने समुदाय के जीवन को बेहतर बनाने के लिए करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और सिंह राशि का यह संयोजन जातक को धन संचय, पारिवारिक नेतृत्व, प्रभावशाली वाणी, उच्च नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास, सामाजिक स्थिति और शिक्षा के क्षेत्र में मजबूत बनाता है।

धन भाव

अग्नि तत्व

2

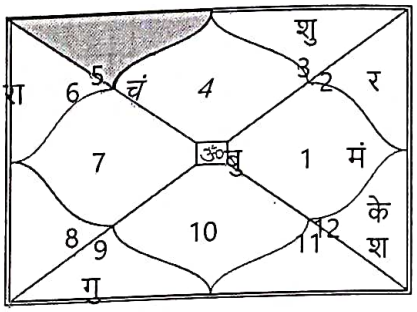

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ अति आत्मविश्वास और अहंकार के रूप में हो सकती हैं, जिससे जातक को अपनी वाणी और क्रियाओं में संयम बरतने की आवश्यकता होती है।

सुझाव: जातकों को अपने आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमताओं का सकारात्मक उपयोग करने की सलाह दी जाती है। वाणी और कार्यों में संयम और विनम्रता बरतना चाहिए। पारिवारिक और सामाजिक संबंधों

भावनात्मक संवेदनशीलता और सहानुभूति को महत्व देना चाहिए।

सहज भाव

पृथ्वी तत्व

3

तीसरे भाव का महत्व, कन्या राशि, कर्क लग्न में। "सहज भाव।"

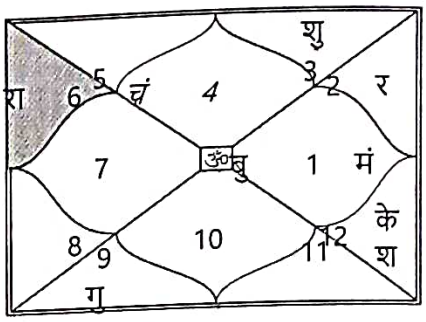

1. **संचार कौशल (Communication Skills):** कन्या राशि के तीसरे घर में होने से जातक को विस्तृत और सटीक संचार कौशल प्राप्त होता है। कर्क लग्न होने से यह संचार भावनात्मक गहराई के साथ होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी बातों को दूसरों तक प्रभावी ढंग पहुँचाने में सक्षम होते हैं, विशेषकर जब वे अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं।
2. **भाई-बहनों के साथ संबंध (Relationship with Siblings):** कन्या राशि में तीसरा घर होने से जातक और उनके भाई-बहनों के बीच एक विश्लेषणात्मक और कभी-कभी आलोचनात्मक संबंध हो सकता है। कर्क लग्न होने से ये संबंध भावनात्मक गहराई और सहानुभूति से भरे होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने भाई-बहनों के साथ गहरे और अर्थपूर्ण संबंध बनाने में सक्षम होते हैं, जिसमें वे एक-दूसरे के प्रति सहायक और समझदार होते हैं।
3. **छोटी यात्राएँ (Short Trips):** कन्या राशि के तीसरे घर में होने से जातक को ज्ञान प्राप्ति और अनुभव संग्रह के लिए छोटी यात्राओं में रुचि होती है। कर्क लग्न होने से ये यात्राएँ भावनात्मक खोज और परिवार के साथ संबंधों को मजबूत करने का एक साधन भी बन जाती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक छोटी यात्राओं के माध्यम से नई जानकारियाँ और अनुभव प्राप्त करते हैं, जो उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को समृद्ध करते हैं।
4. **मानसिक क्षमता (Mental Abilities):** कन्या राशि में तीसरा घर होने से जातक में विश्लेषणात्मक सोच और विस्तृत ध्यान देने की क्षमता होती है। कर्क लग्न होने से इस मानसिक क्षमता में भावनात्मक अंतर्दृष्टि जुड़ जाती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने विचारों और भावनाओं को समझने और व्यक्त करने में माहिर होते हैं, जिससे वे दूसरों के साथ गहरे संबंध बना सकते हैं।
5. **लेखन और प्रकाशन (Writing and Publishing):** कन्या राशि के तीसरे घर में होने से जातक में विस्तृत और सटीक लेखन कौशल होता है। कर्क लग्न होने से इस लेखन में भावनात्मक गहराई और अंतर्दृष्टि जुड़ जाती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने विचारों और अनुभवों को लेखन के माध्यम से प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं, जिससे वे अपने क्षेत्र में मान्यता प्राप्त कर सकते हैं।
6. **शिक्षा और अध्ययन (Education and Learning):** कन्या राशि के तीसरे घर में होने से जातक में गहन अध्ययन और शिक्षा के प्रति रुचि होती है। कर्क लग्न होने से यह अध्ययन और शिक्षा न केवल ज्ञान के लिए बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने ज्ञान और अध्ययन के माध्यम से व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में विकास करते हैं।
7. **तकनीकी कौशल और नवाचार (Technical Skills and Innovation):** कन्या राशि के तीसरे घर में होने से जातक में तकनीकी कौशल और नवाचार की प्रवृत्ति होती है। कर्क लग्न होने से ये कौशल और नवाचार भावनात्मक संवेदनशीलता और अंतर्दृष्टि के साथ संयोजित होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी रचनात्मकता और तकनीकी कौशल का उपयोग करके नवीन समाधान और उत्पादों को विकसित कर सकते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और कन्या राशि का यह संयोजन जातक को उत्कृष्ट संचार कौशल, विश्लेषणात्मक सोच, गहन शिक्षा, और तकनीकी कौशल प्रदान करता है। इससे जातक अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सहज भाव

पृथ्वी तत्व

3

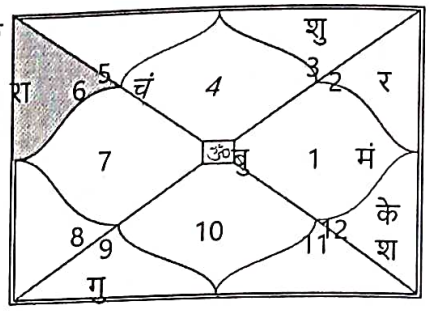

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियों में अत्यधिक आलोचनात्मकता और परफेक्शनिज़्म शामिल हो सकते हैं, जो जातक को असंतोष और तनाव का अनुभव करा सकते हैं।

सुझाव: जातकों को अपने विश्लेषणात्मक सोच और परफेक्शनिज़्म को संतुलित करने के लिए अधिक लचीलापन और सहनशीलता विकसित करनी चाहिए। भावनात्मक संवेदनशीलता और सहानुभूति को अपने में लाने की कोशिश करनी चाहिए।

राहू : भाव - 3 , राशि - कन्या , लग्न - कर्क

"राहु की शिक्षाएँ कर्म और हमारे क्रियाकलापों के परिणामों की अवधारणा को उजागर करती हैं, विशेष रूप से वे क्रियाएँ जो स्वार्थी प्रेरणाओं या छल से प्रेरित होती हैं। राहु हमें परिवर्तन को अपनाने और जीवन की अनिश्चितताओं के प्रति खुले रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, हमें सिखाता है कि विकास अक्सर हमारे डरों का सामना करने और अज्ञात में कदम रखने से आता है। मूल रूप से, राहु का दर्शन हमारी इच्छाओं की गहराइयों को खोजने, नवाचार करने और पारंपरिक सीमाओं को पार करने का आह्वान है । यह हमें सफलता की क्षणभंगुर प्रकृति पर विचार करने और हमारे पीछा किए जाने वाले उद्देश्यों के अंतिम मूल्य पर मनन करने के लिए आमंत्रित करता है।"

राहु ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *नवाचार, मौलिकता और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।*
- *महत्वाकांक्षा, सफलता की इच्छा, और असाधारण चीजों को हासिल करने की प्रेरणा देता है।*
- *नए विचारों की खोज, परंपरागत सीमाओं को तोड़ने, और अज्ञात की खोज को प्रोत्साहित करता है।*
- *अप्रत्याशित लाभ और अचानक सफलता में सहायता करता है।*
- *परिवर्तनशीलता और बदलते परिवेश में अनुकूलन की क्षमता को बढ़ाता है।*

राहु ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *भ्रम, अवास्तविक अपेक्षाएँ और अत्यधिक इच्छाओं का कारण बन सकता है।*
- *सामग्रीवाद, सत्ता, और मान्यता की अत्यधिक इच्छा को बढ़ावा देता है, जिससे अनैतिक कार्य हो सकते हैं।*
- *दूसरों का शोषण, छल, और मनिपुलेशन को बढ़ावा देता है।*
- *असंतोष, बेचैनी, और बाहरी सुखों की निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है।*
- *भय, पैरानॉया, और मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों का कारण बन सकता है।*

1. **साहस और पराक्रम में वृद्धि** (Increase in Courage and Valor)
   - राहु का तीसरे भाव में होना जातक को अधिक साहसी और पराक्रमी बना सकता है।
   - सावधानी: अत्यधिक साहसिकता के कारण अनावश्यक जोखिम न उठाएं।
2. **संचार कौशल में सुधार** (Improvement in Communication Skills)

सहज भाव

पृथ्वी तत्व

3

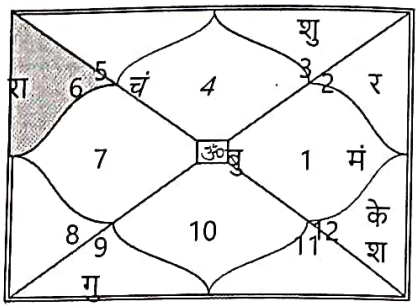

- तीसरे भाव में राहु संचार कौशल में सुधार और वाक् चातुर्य बढ़ा सकता है।
- सावधानी: शब्दों का चयन सोच समझकर करें, क्योंकि गलत संचार से गलतफहमियाँ हो सकती हैं।

3. **भाई-बहनों के साथ संबंधों में उतार-चढ़ाव** (Fluctuations in Relationships with Siblings)

- राहु की स्थिति से भाई-बहनों के साथ संबंधों में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं।
  - सावधानी: संबंधों में समझदारी और संवेदनशीलता बरतें।

4. **यात्राओं में वृद्धि** (Increase in Travels)
   - तीसरे भाव में राहु अधिक यात्राओं का संकेत देता है, विशेषकर छोटी दूरी की यात्राएँ।
   - सावधानी: यात्रा के दौरान स्वास्थ्य और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।
5. **उद्यमिता और नवाचार में रुचि** (Interest in Entrepreneurship and Innovation)
   - राहु उद्यमिता और नवाचार के प्रति गहरी रुचि और प्रेरणा प्रदान कर सकता है।
   - सावधानी: नए व्यापारिक उद्यमों में जल्दबाजी में निवेश न करें।
6. **सामाजिक नेटवर्किंग में वृद्धि** (Expansion in Social Networking)
   - तीसरे भाव में राहु सामाजिक नेटवर्किंग और मित्र मंडली में विस्तार का संकेत देता है।
   - सावधानी: सामाजिक संबंधों में गुणवत्ता पर ध्यान दें, न कि केवल मात्रा पर।
7. **तकनीकी और डिजिटल माध्यमों में रुचि** (Interest in Technical and Digital Mediums)
   - राहु की स्थिति तकनीकी और डिजिटल माध्यमों में गहरी रुचि उत्पन्न कर सकती है।
   - सावधानी: डिजिटल दुनिया में समय बिताने के साथ-साथ वास्तविक दुनिया के संबंधों को भी महत्व दें।
8. **साहित्य और लेखन में रुचि** (Interest in Literature and Writing)
   - तीसरे भाव में राहु साहित्य और लेखन के प्रति रुचि बढ़ा सकता है।
   - सावधानी: लेखन में विवादास्पद विषयों पर लिखते समय संयम बरतें।
9. **आत्म-विश्वास में वृद्धि** (Boost in Self-Confidence)
   - राहु का तीसरे भाव में होना जातक के आत्म-विश्वास में वृद्धि कर सकता है।
   - सावधानी: आत्म-विश्वास के अतिरेक से अहंकार न बनने दें।

सुख भाव

4

चौथे भाव का महत्व, तुला राशि, कर्क लग्न में। "सुख भाव।"

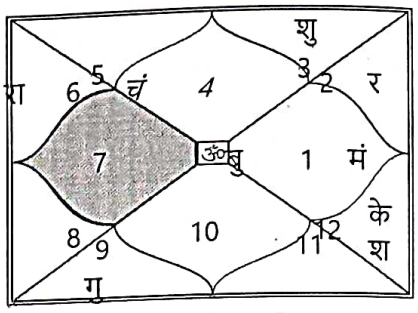

1. **घर और परिवार (Home and Family):** तुला राशि के चौथे घर में होने से जातक को सुंदर और सामंजस्यपूर्ण घरेलू जीवन की इच्छा होती है। कर्क लग्न होने से यह इच्छा और भी प्रबल होती है, क्योंकि कर्क भी घर और परिवार से गहराई से जुड़ा हुआ है। संयुक्त प्रभाव यह है कि अपने घर और परिवार में सौंदर्य और सामंजस्य को महत्व देते हैं, जिससे एक सुखी और संतुलित घरेलू वातावरण बनता है।
2. **भूमि/संपत्ति (Land/Property):** तुला राशि में चौथा घर होने से जातक को संपत्ति और भूमि में सौंदर्य और सुख-सुविधा की तलाश होती है। कर्क लग्न होने से ये इच्छाएँ भावनात्मक सुरक्षा की ओर भी इशारा करती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक ऐसी संपत्तियों की तलाश करते हैं जो न केवल सौंदर्यशास्त्र में उच्च होती हैं बल्कि भावनात्मक रूप से भी संतोषजनक होती हैं।
3. **माता (Mother):** तुला राशि में चौथा घर होने से माता के साथ संबंध सौंदर्य और सामंजस्य पर आधारित होते हैं। कर्क लग्न होने से यह संबंध और भी गहरा और भावनात्मक हो जाता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि माता और जातक के बीच एक गहरा भावनात्मक बंधन होता है, जो समर्थन और समझ के साथ मजबूत होता है।
4. **आराम और सुख-सुविधा (Comfort and Amenities):** तुला राशि के चौथे घर में होने से जातक अपने निवास स्थान में सुख-सुविधा और आराम की तलाश करते हैं। कर्क लग्न होने से यह आराम भावनात्मक सुरक्षा की भावना से भी जुड़ा होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक एक ऐसे घर की तलाश करते हैं जो न केवल शारीरिक रूप से आरामदायक हो बल्कि उन्हें भावनात्मक रूप से भी संतुष्टि प्रदान करे।
5. **वाहन (Vehicles):** तुला राशि में चौथा घर होने से जातक को सुंदर और आरामदायक वाहनों में रुचि होती है। कर्क लग्न होने से ये वाहन न केवल स्टेटस सिंबल के रूप में बल्कि पारिवारिक सुख-सुविधा के लिए भी महत्वपूर्ण होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक ऐसे वाहन चुनते हैं जो उनकी सौंदर्यशास्त्रीय पसंद और पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
6. **आंतरिक शांति और स्थिरता (Inner Peace and Stability):** तुला राशि के चौथे घर में होने से जातक आंतरिक शांति और मानसिक स्थिरता की तलाश करते हैं। कर्क लग्न होने से यह तलाश और भी गहरी हो जाती है, क्योंकि कर्क भावनात्मक सुरक्षा और संतुष्टि पर जोर देता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने जीवन में ऐसे तत्वों को महत्व देते हैं जो उन्हें आंतरिक शांति और स्थिरता प्रदान करते हैं।
7. **पारिवारिक संबंध (Family Relations):** तुला राशि में चौथा घर होने से जातक पारिवारिक संबंधों में सामंजस्य और संतुलन की तलाश करते हैं। कर्क लग्न होने से ये संबंध भावनात्मक गहराई और समर्थन के साथ भी जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पारिवारिक संबंधों में संवाद और समझदारी के माध्यम से सामंजस्य और संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और तुला राशि का यह संयोजन जातक को सौंदर्य, सामंजस्य, और भावनात्मक संतुष्टि के प्रति गहरी समझ और मूल्यांकन प्रदान करता है। इससे जातक अपने घरेलू और पारिवारिक जीवन में संतुलन और सामंजस्य बनाने में सफल होते हैं।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियों में अत्यधिक सौंदर्यशास्त्र और सामंजस्य की तलाश में वास्तविकता से

सुख भाव

वायु तत्व

4

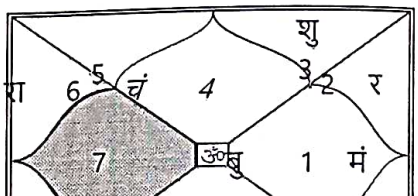

दूर होना शामिल हो सकता है, जो व्यावहारिकता की कमी का कारण बन सकता है।

सुझाव: जातकों को अपने सौंदर्य और सामंजस्य की तलाश में व्यावहारिकता और यथार्थवाद को भी महत्व देना चाहिए। पारिवारिक संबंधों में संवाद और समझदारी को बढ़ावा देते हुए, भावनात्मक संतुष्टि और सुरक्षा की तलाश करनी चाहिए।

पुत्र भाव

जल तत्व

5

पांचवें भाव का महत्व, वृश्चिक राशि, कर्क लग्न में। "पुत्र भाव।"

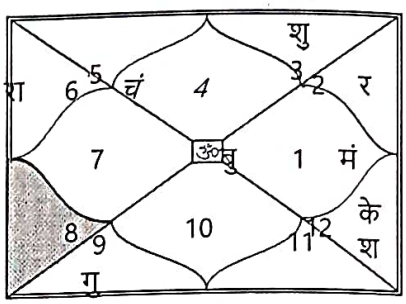

1. **संतान (Children):** वृश्चिक राशि के पांचवें घर में होने से जातक की संतान से संबंधित जीवन में गहनता और जुनून देखने को मिलता है। कर्क लग्न होने से यह संबंध और भी भावनात्मक हो जाता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी संतान के साथ गहरे भावनात्मक बंधन अनुभव करते हैं और उनके जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के लिए तैयार रहते हैं।
2. **सृजनात्मकता (Creativity):** वृश्चिक राशि में पांचवें घर होने से जातक में गहन और जुनूनी सृजनात्मकता की प्रवृत्ति होती है। कर्क लग्न होने से यह सृजनात्मकता भावनात्मक गहराई के साथ आती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से गहन भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, जो उनके और दूसरों के जीवन में परिवर्तन ला सकती है।
3. **प्रेम संबंध (Love Affairs):** वृश्चिक राशि के पांचवें घर में होने से जातक के प्रेम संबंध गहन, जुनूनी और अक्सर परिवर्तनशील होते हैं। कर्क लग्न होने से ये संबंध और भी भावनात्मक और सुरक्षात्मक हो जाते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने प्रेम संबंधों में गहरी भावनात्मक गहराई और समर्पण का अनुभव करते हैं, जिससे वे जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।
4. **शिक्षा (Education):** वृश्चिक राशि में पांचवें घर होने से जातक की शिक्षा में गहन अध्ययन और जुनून की प्रवृत्ति होती है। कर्क लग्न होने से यह अध्ययन भावनात्मक और अध्यात्मिक विषयों की ओर झुकाव रखता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी शिक्षा और अध्ययन में गहराई और जुनून के साथ लगते हैं, जिससे वे अपने चुने हुए क्षेत्रों में गहरी समझ और विशेषज्ञता हासिल करते हैं।
5. **धर्म और अध्यात्मिकता (Religion and Spirituality):** वृश्चिक राशि में पांचवें घर होने से जातक में धर्म और अध्यात्मिकता के प्रति गहन जुनून और खोज होती है। कर्क लग्न होने से यह खोज भावनात्मक सुरक्षा और संतुष्टि की तलाश में होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अध्यात्मिक और धार्मिक पथों में गहरी अंतर्दृष्टि और ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिससे वे अपने और दूसरों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।
6. **मनोरंजन और जोखिम लेने की प्रवृत्ति (Entertainment and Risk-taking):** वृश्चिक राशि के पांचवें घर में होने से जातक में मनोरंजन और जोखिम लेने की प्रवृत्ति गहन और जुनूनी होती है। कर्क लग्न होने से यह प्रवृत्ति भावनात्मक रूप से गहराई तक जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक जीवन में जोखिम लेने और नए अनुभवों की खोज में गहन जुनून और भावनात्मक गहराई का अनुभव करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और वृश्चिक राशि का यह संयोजन जातक को गहन भावनात्मक गहराई, जुनून, और जीवन के प्रति गहन अनुभव प्रदान करता है। इससे जातक अपने और दूसरों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियों में अत्यधिक जुनून और गहनता के कारण भावनात्मक अस्थिरता और जीवन में अतिरिक्त जोखिम लेने की प्रवृत्ति शामिल हो सकती है।

सुझाव: जातकों को अपने जुनून और गहनता को संतुलित करने के लिए ध्यान और आत्म-चिंतन की प्रथाओं को अपनाना चाहिए। जीवन में जोखिम लेने से पहले सोच-विचार करना और भावनात्मक संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण

KARUNA UPADHYAY

पुत्र भाव

5

जल तत्व

है।

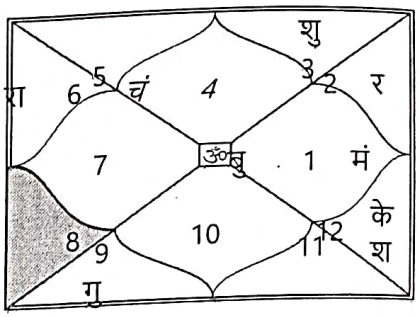

शत्रु भाव

अग्नि तत्व

6

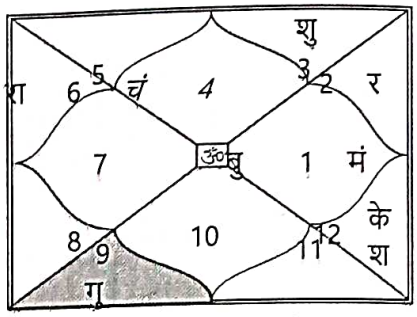

छठे भाव का महत्व, धनु राशि, कर्क लग्न में। "शत्रु भाव।"

1. **रोग (Diseases):** धनु राशि के छठे घर में होने से जातक को स्वास्थ्य से संबंधित चुनौतियाँ आ सकती हैं, जिनका सामना वे आशावाद और सकारात्मकता के साथ करते हैं। कर्क लग्न होने से यह चुनौतियाँ भावनात्मक स्वास्थ्य से भी जुड़ी हो सकती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि अपने स्वास्थ्य की चुनौतियों का सामना करते समय आशावाद और धैर्य के साथ उपचार की खोज करते हैं।
2. **ऋण (Debts):** धनु राशि में छठा घर होने से जातक को वित्तीय चुनौतियों और ऋणों से संबंधित मुद्दे आ सकते हैं। कर्क लग्न होने से ये चुनौतियाँ भावनात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने वित्तीय मुद्दों का समाधान खोजने में आशावाद और व्यावहारिक सोच का उपयोग करते हैं।
3. **शत्रु (Enemies):** धनु राशि के छठे घर में होने से जातक को शत्रुओं और प्रतिस्पर्धियों के साथ सामना हो सकता है, लेकिन वे इनसे धार्मिकता और नैतिकता के साथ निपटते हैं। कर्क लग्न होने से यह संघर्ष भावनात्मक स्तर पर भी हो सकता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने शत्रुओं का सामना करते समय आत्मविश्वास और नैतिक मूल्यों के साथ कार्य करते हैं।
4. **सेवा (Service):** धनु राशि में छठा घर होने से जातक में सेवा और मदद करने की गहरी इच्छा होती है, विशेष रूप से धार्मिक और नैतिक कारणों में। कर्क लग्न होने से यह सेवा भावनात्मक और निजी स्तर पर भी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने कार्यक्षेत्र और दैनिक जीवन में दूसरों की मदद करने में गहरी संतुष्टि महसूस करते हैं।
5. **कार्यक्षेत्र (Workplace):** धनु राशि में छठा घर होने से जातक का कार्यक्षेत्र व्यापक और विस्तारित हो सकता है, जहाँ वे अपने ज्ञान और धार्मिकता को लागू करते हैं। कर्क लग्न होने से यह काम भावनात्मक संतुष्टि की ओर भी इशारा करता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने कार्यक्षेत्र में नैतिकता और आशावाद के साथ प्रगति करते हैं।
6. **दैनिक दिनचर्या (Daily Routine):** धनु राशि में छठा घर होने से जातक की दैनिक दिनचर्या में व्यापकता और लचीलापन होता है, जिसमें वे अपने विश्वासों और आदर्शों के अनुसार जीवन जीते हैं। कर्क लग्न होने से यह दिनचर्या भावनात्मक और पारिवारिक जरूरतों के अनुकूल भी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी दैनिक दिनचर्या में नैतिकता और आशावाद को शामिल करते हुए एक संतुलित और संतुष्ट जीवन जीते हैं।
7. **पालतू जानवर (Pets):** धनु राशि में छठा घर होने से जातक को पालतू जानवरों से गहरा लगाव हो सकता है, जिसमें वे उनकी देखभाल और सेवा करते हैं। कर्क लग्न होने से यह लगाव भावनात्मक संतुष्टि और सुरक्षा की भावना से भी जुड़ा होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पालतू जानवरों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध विकसित करते हैं, जो उन्हें आनंद और संतोष प्रदान करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और धनु राशि का यह संयोजन जातक को आशावाद, नैतिकता, और विस्तार की दृष्टि प्रदान करता है, जिससे वे अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करते समय सकारात्मक और उत्साहित रहते हैं।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ अत्यधिक आशावाद और वित्तीय या भावनात्मक चुनौतियों के प्रति अव्यावहारिकता में निहित हो सकती हैं।

शत्रु भाव

अग्नि तत्व

6

सुझाव: जातकों को अपने आशावाद और नैतिकता को व्यावहारिकता के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है। चुनौतियों का सामना करते समय धैर्य और यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, साथ ही साथ अपने भावनात्मक और वित्तीय स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए।

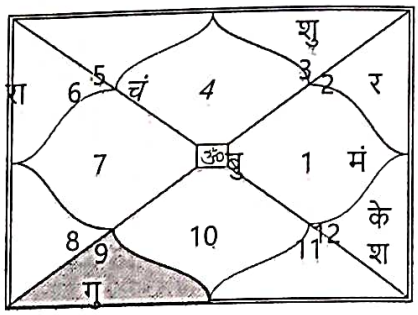

गुरु : भाव - 6 , राशि - धनु , लग्न - कर्क

"वैदिक ज्योतिष में, ग्रह गुरु को देवताओं का शिक्षक माना जाता है, जो ज्ञान, ज्ञानोदय और दयालुता का प्रतीक है। गुरु का दार्शनिक सार ज्ञान की खोज, चेतना के विस्तार और उन नैतिक और नैतिक सिद्धांतों के साथ गहराई से बुना गया है जो मानव जीवन को निर्देशित करते हैं। यह उच्च मन, सत्य की खोज और ब्रह्मांड की विस्तृत प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है। गुरु हमें भौतिक से परे देखने, आध्यात्मिक को अपनाने और प्रकाश और ज्ञान के प्राणियों के रूप में अपनी क्षमता को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।"

गुरु ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *ज्ञान, ज्ञानोदय, और उदारता का प्रतीक।*
- *ज्ञान की खोज, चेतना का विस्तार, और मानव जीवन को मार्गदर्शन करने वाले नैतिक और नैतिक सिद्धांतों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ।*
- *उच्च मन, सत्य की खोज, और ब्रह्मांड की विस्तृत प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है।*

गुरु ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *अत्यधिक आशावाद और अवास्तविक अपेक्षाओं का कारण बन सकता है।*
- *आलस्य और ध्यान की कमी को जन्म दे सकता है।*
- *बड़ी तस्वीर पर अत्यधिक जोर देने के कारण विवरणों की उपेक्षा हो सकती है।*
- *अत्यधिक विश्वास या आसानी से विश्वास कर लेने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित कर सकता है।*

1. **स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियाँ** (Health Challenges)
   - गुरु का छठे भाव में होना स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियों का संकेत दे सकता है।
   - सावधानी: स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें।
2. **ऋण से संघर्ष** (Struggle with Debt)
   - यह स्थिति ऋण और आर्थिक दबावों में वृद्धि कर सकती है।
   - सावधानी: अत्यधिक खर्च और ऋण से बचें।
3. **शत्रुओं पर विजय** (Victory Over Enemies)
   - गुरु छठे भाव में शत्रुओं पर विजय और कानूनी विवादों में सफलता दिला सकता है।
   - सावधानी: अहंकार और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा से बचें।
4. **सेवा क्षेत्र में सफलता** (Success in Service Sector)
   - यह स्थान सेवा क्षेत्र और नौकरी में सफलता के योग बनाता है।
   - सावधानी: कार्यस्थल पर अत्यधिक तनाव से बचें।

शत्रु भाव

अग्नि तत्व

6

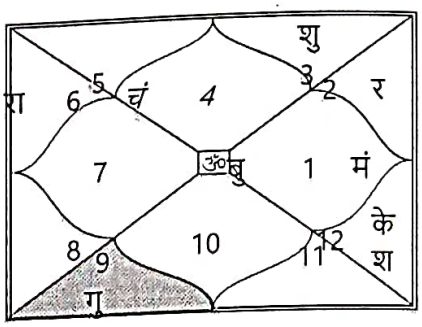

5. **कठिन परिश्रम की आवश्यकता** (Need for Hard Work)
   - गुरु छठे भाव में जीवन में सफलता के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता को दर्शाता है।
   - सावधानी: अत्यधिक काम के बोझ से स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।
6. **पालतू जानवरों से सुख** (Happiness from Pets)

- गुरु छठे भाव में होने पर पालतू जानवरों से विशेष सुख और संतोष मिल सकता है।
  - सावधानी: पालतू जानवरों के प्रति अत्यधिक खर्च से बचें।

7. **सामाजिक सेवा में रुचि** (Interest in Social Service)
   - यह स्थिति सामाजिक सेवा और मानवता के प्रति समर्पण की भावना को बढ़ावा देती है।
   - सावधानी: सामाजिक सेवा में अपनी सीमाओं का ध्यान रखें।
8. **आत्म-सुधार की यात्रा** (Journey of Self-Improvement)
   - गुरु छठे भाव में आत्म-सुधार और व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित करता है।
   - सावधानी: आत्म-सुधार के प्रयास में अत्यधिक आलोचनात्मक न बनें।
9. **स्वास्थ्य जागरूकता में वृद्धि** (Increased Health Awareness)
   - इस स्थिति से स्वास्थ्य और फिटनेस के प्रति जागरूकता बढ़ती है।
   - सावधानी: स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक जुनूनी न हों।
10. **विदेश यात्रा के योग** (Prospects for Foreign Travel)
    - गुरु छठे भाव में कभी-कभी विदेश यात्रा या विदेश में अध्ययन/कार्य के अवसर प्रदान करता है।
    - सावधानी: विदेश यात्रा के दौरान स्वास्थ्य और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

कलत्र भाव

पृथ्वी तत्व

7

सातवें भाव का महत्व, मकर राशि, कर्क लग्न में। "कलत्र भाव।"

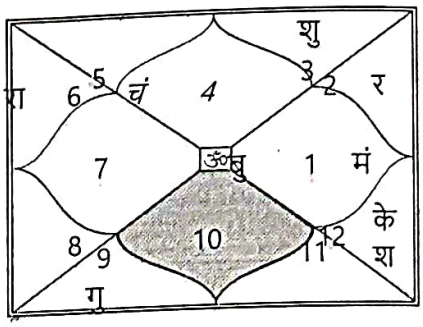

1. **विवाह (Marriage):** मकर राशि के सातवें घर में होने से ज़ातक का विवाहित जीवन स्थिरता, गंभीरता और जिम्मेदारियों पर आधारित होता है। कर्क लग्न होने से यह संबंध भावनात्मक गहराई और संवेदनशीलता से भी युक्त होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने विवाहित में स्थिरता और भावनात्मक समर्थन दोनों की तलाश करते हैं।
2. **साझेदारी (Partnership):** मकर राशि में सातवें घर होने से व्यावसायिक और निजी साझेदारियाँ गंभीरता और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता पर आधारित होती हैं। कर्क लग्न होने से जातक इन साझेदारियों में भावनात्मक सुरक्षा और समर्थन की भी तलाश करते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि ज़ातक अपनी साझेदारियों में दीर्घकालिक स्थिरता और भावनात्मक संतुष्टि दोनों को महत्व देते हैं।
3. **व्यापारिक संबंध (Business Relationships):** मकर राशि के सातवें घर में होने से जातक के व्यापारिक संबंध अनुशासन, कठोर परिश्रम, और प्रतिबद्धता पर आधारित होते हैं। कर्क लग्न होने से ये संबंध भावनात्मक समझ और सहयोग पर भी निर्भर करते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने व्यापारिक संबंधों में लंबी अवधि की सफलता और भावनात्मक सहयोग की तलाश करते हैं।
4. **सार्वजनिक छवि (Public Image):** मकर राशि के सातवें घर में होने से जातक की सार्वजनिक छवि गंभीरता, जिम्मेदारी, और प्रोफेशनलिज्म को दर्शाती है। कर्क लग्न होने से यह छवि भावनात्मक ईमानदारी और संवेदनशीलता से भी जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी सार्वजनिक छवि में संतुलन और सम्मान की तलाश करते हैं।
5. **लंबी यात्राएं (Long Journeys):** मकर राशि के सातवें घर में होने से ज़ातक की लंबी यात्राएं अक्सर व्यावसायिक या जिम्मेदारी के उद्देश्यों से संबंधित होती हैं। कर्क लग्न होने से ये यात्राएं भावनात्मक विकास और सीखने की अवसर भी प्रदान करती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी लंबी यात्राओं में व्यावसायिक सफलता और भावनात्मक संतुष्टि दोनों की तलाश करते हैं।
6. **विरोधी (Opponents):** मकर राशि के सातवें घर में होने से जातक के विरोधी उनके साथ संघर्ष में गंभीरता और ठोस रणनीति का उपयोग करते हैं। कर्क लग्न होने से जातक इन संघर्षों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति का उपयोग करते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने विरोधियों के साथ संघर्षों में धैर्य और रणनीतिक सोच के साथ आगे बढ़ते हैं।
7. **कानूनी मामले (Legal Matters):** मकर राशि के सातवें घर में होने से जातक के कानूनी मामले गंभीरता, व्यवस्था, और जिम्मेदारी के साथ निपटाए जाते हैं। कर्क लग्न होने से ये मामले भावनात्मक समर्थन और समझ की भी आवश्यकता रखते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने कानूनी मामलों को गंभीरता और विवेक के साथ संभालते हैं, साथ ही भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और मकर राशि का यह संयोजन जातक को गंभीरता, जिम्मेदारी, और अनुशासन के साथ अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को संभालने की क्षमता प्रदान करता है, साथ ही भावनात्मक गहराई और संवेदनशीलता को भी बढ़ाता है।

कलत्र भाव

पृथ्वी तत्व

7

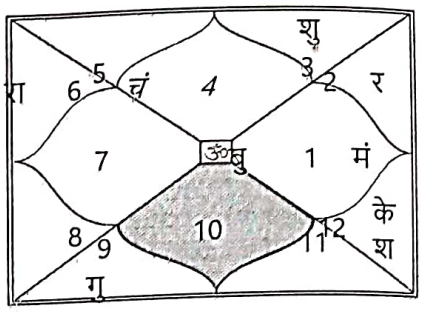

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियों में अत्यधिक गंभीरता और जिम्मेदारियों के बोझ से भावनात्मक तनाव और थकान शामिल हो सकती है।

सुझाव: जातकों को अपने जीवन में संतुलन बनाने की कोशिश करनी चाहिए, जिसमें जिम्मेदारियों के साथ-साथ आत्म-देखभाल और मनोरंजन के लिए भी समय निकालना शामिल है। भावनात्मक समर्थन खुले संवाद को महत्व देने से व्यक्तिगत और पेशेवर संबंधों में संतुष्टि बढ़ सकती है।

KARUNA UPADHYAY

रंध्र भाव

8

आठवें भाव का महत्व, कुंभ राशि, कर्क लग्न में। "मृत्यु भाव।"

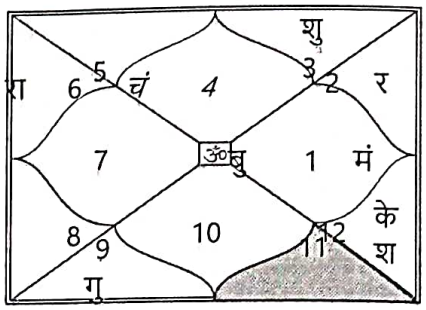

1. **मृत्यु और पुनर्जन्म (Death and Rebirth):** कुंभ राशि के आठवें घर में होने से जातक मृत्यु और पुनर्जन्म के विषयों के प्रति एक नवीन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह दृष्टिकोण भावनात्मक गहराई और अंतर्ज्ञान से युक्त होता है। संयुक्त प्रभाव यह है ज़ातक ज़ीवन और मृत्यु के चक्र को समझने में आध्यात्मिक रूपांतरण का अनुभव करते हैं।
2. **पारलौकिक मामले (Occult Matters):** कुंभ राशि में आठवें घर होने से ज़ातक पारलौकिक विज्ञान और गुप्त ज्ञान में गहरी रुचि रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह रुचि भावनात्मक संवेदनशीलता और अंतर्ज्ञान के साथ संयोजित होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि ज़ातक गुप्त विज्ञानों के माध्यम से जीवन के गहरे रहस्यों को समझने में सक्षम होते हैं।
3. **विरासत (Inheritance):** कुंभ राशि के आठवें घर में होने से ज़ातक को विरासत और साझेदार की संपत्ति से संबंधित मामलों में अप्रत्याशित और अभिनव परिणाम मिल सकते हैं। कर्क लग्न होने से ये मामले भावनात्मक सुरक्षा और परिवार के संबंधों से गहराई से जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक विरासत और साझेदार की संपत्ति से संबंधित मामलों में व्यावहारिकता और भावनात्मक संवेदनशीलता के साथ निपटते हैं।
4. **आध्यात्मिक रूपांतरण (Spiritual Transformation):** कुंभ राशि में आठवें घर होने से ज़ातक आध्यात्मिक रूपांतरण और विकास की गहरी यात्रा का अनुभव करते हैं। कर्क लग्न होने से यह यात्रा भावनात्मक गहराई और अंतर्ज्ञान के साथ संयोजित होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने आध्यात्मिक विकास में गहराई और व्यापकता का अनुभव करते हैं।
5. **कानूनी मामले (Legal Matters):** कुंभ राशि में आठवें घर होने से जातक के कानूनी मामलों में अप्रत्याशित परिणाम और अभिनव समाधान सामने आ सकते हैं। कर्क लग्न होने से ये मामले भावनात्मक प्रभाव और पारिवारिक संबंधों से जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक कानूनी मामलों में रचनात्मकता और अनुशासन के साथ निपटते हैं।
6. **गुप्त विज्ञान (Occult Sciences):** कुंभ राशि में आठवें घर होने से जातक गुप्त विज्ञान और आध्यात्मिक खोज में गहरी रुचि रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह ख़ोज भावनात्मक और अंतर्ज्ञानी दृष्टिकोण से संचालित होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक गुप्त विज्ञानों के माध्यम से जीवन के गहरे रहस्यों को समझने में सक्षम होते हैं।
7. **साझेदार की संपत्ति (Partner's Wealth):** कुंभ राशि में आठवें घर होने से जातक के साझेदार की संपत्ति से संबंधित मामलों में अप्रत्याशित परिवर्तन और विकास हो सकता है। कर्क लग्न होने से ये परिवर्तन भावनात्मक संतुलन और पारिवारिक सुरक्षा की ओर इशारा करते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक और उनके साझेदार वित्तीय मामलों में रचनात्मकता और व्यावहारिकता का संतुलन बनाए रखते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और कुंभ राशि का यह संयोजन जातक को आध्यात्मिक रूपांतरण, गुप्त विज्ञानों में गहरी रुचि, और वित्तीय मामलों में रचनात्मक समाधान की ओर ले जाता है, साथ ही भावनात्मक गहराई और अंतर्ज्ञान को बढ़ाता है।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ अप्रत्याशित परिवर्तनों और आध्यात्मिक या वित्तीय मामलों में

रंध्र भाव

8

अस्थिरता में निहित हो सकती हैं।

सुझाव: जातकों को अपने आध्यात्मिक और गुप्त विज्ञान के अध्ययन में गहराई से जुड़े रहने के साथ-साथ वित्तीय मामलों में रचनात्मकता और व्यावहारिकता का संतुलन बनाए रखने की सलाह दी जाती है। अप्रत्याशित परिवर्तनों के प्रति खुले दिमाग और अनुकूलनशील रहना भी महत्वपूर्ण है।

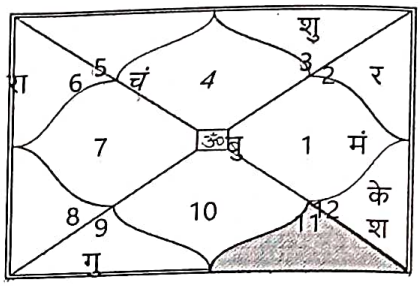

धर्म भाव

जल तत्व

9

नौवें भाव का महत्व, मीन राशि, कर्क लग्न में। "धर्म भाव।"

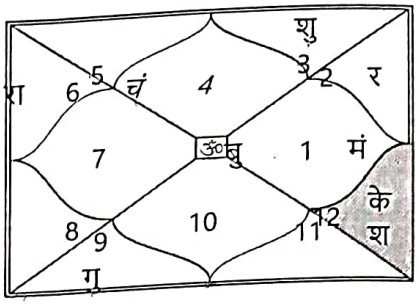

1. **धर्म और दर्शन (Religion and Philosophy):** मीन राशि के नौवें घर में होने से जातक धर्म और दर्शन में गहरी रुचि रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह रुचि भावनात्मक गहराई और अंतर्ज्ञान के साथ जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान की में गहराई और व्यापकता का अनुभव करते हैं।
2. **उच्च शिक्षा (Higher Education):** मीन राशि में नौवें घर होने से जातक उच्च शिक्षा और ज्ञान की खोज में गहरी रुचि रखते हैं। कर्क लग्न होने से यह खोज भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास से भी जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी उच्च शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास को प्राथमिकता देते हैं।
3. **विदेश यात्राएं (Foreign Travels):** मीन राशि के नौवें घर में होने से जातक को विदेश यात्राओं के माध्यम से ज्ञान और आध्यात्मिकता की खोज में गहरी रुचि होती है। कर्क लग्न होने से ये यात्राएं भावनात्मक और अंतरात्मा की खोज से भी जुड़ी होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक विदेश यात्राओं के माध्यम से ज्ञान और आध्यात्मिक अनुभवों का विस्तार करते हैं।
4. **आध्यात्मिकता (Spirituality):** मीन राशि में नौवें घर होने से जातक में आध्यात्मिक खोज और विकास की गहरी इच्छा होती है। कर्क लग्न होने से यह खोज भावनात्मक समझ और अंतर्ज्ञान के साथ संयोजित होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने आध्यात्मिक विकास में गहराई और व्यापकता का अनुभव करते हैं।
5. **गुरु या धार्मिक गुरु (Gurus or Spiritual Teachers):** मीन राशि के नौवें घर में होने से जातक को गुरुओं और धार्मिक गुरुओं से गहरा संबंध और ज्ञान प्राप्त होता है। कर्क लग्न होने से ये संबंध भावनात्मक बंधन और अंतरात्मा की खोज से भी जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने गुरुओं के माध्यम से ज्ञान और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।
6. **कानून (Law):** मीन राशि के नौवें घर में होने से जातक को कानून और न्याय के क्षेत्र में गहरी रुचि और नैतिक दृष्टिकोण होता है। कर्क लग्न होने से यह रुचि भावनात्मक न्याय और समानता की तलाश से जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक कानूनी और न्यायिक मामलों में नैतिकता और आध्यात्मिकता के संयोजन के साथ कार्य करते हैं।
7. **विदेश में अध्ययन और रहन-सहन (Study and Living Abroad):** मीन राशि के नौवें घर में होने से जातक को विदेश में अध्ययन और जीवन यापन के अवसर मिल सकते हैं, जिससे उन्हें विस्तारित ज्ञान और आध्यात्मिक विकास का अनुभव होता है। कर्क लग्न होने से ये अनुभव भावनात्मक विकास और गहरी समझ के साथ जुड़े होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक विदेश में अपने अध्ययन और जीवन यापन के माध्यम से व्यापक ज्ञान और आध्यात्मिक विकास प्राप्त करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और मीन राशि का यह संयोजन जातक को धर्म, दर्शन, उच्च शिक्षा, आध्यात्मिकता, और विदेश यात्राओं में गहरी रुचि और विकास की संभावना प्रदान करता है। यह ज्ञान और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ भावनात्मक अस्थिरता और व्यावहारिकता की कमी में निहित हो सकती हैं, विशेष रूप से जब आध्यात्मिक और दार्शनिक खोजों में अत्यधिक लीनता हो।

धर्म भाव

जल तत्व

9

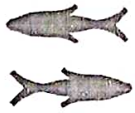

सुझाव: जातकों को अपनी आध्यात्मिक और दार्शनिक खोजों में गहराई और व्यापकता की तलाश करते समय व्यावहारिकता और भूमिगत रहने की आवश्यकता है। ज्ञान और आध्यात्मिक विकास के संतुलन के साथ भावनात्मक संतुलन और व्यक्तिगत विकास पर भी ध्यान देना चाहिए।

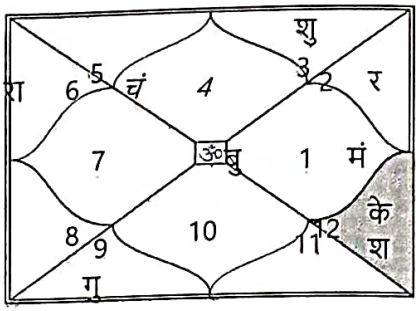

शनि : भाव - 9 , राशि - मीन , लग्न - कर्क

"शनि का दर्शन एकांत और चिंतन के महत्व को आध्यात्मिक विकास और आत्म-साक्षात्कार के साधन के रूप में बल देता है। यह विचार का समर्थन करता है कि सांसारिक इच्छाओं और भौतिक पीछा से विरक्ति के माध्यम से, व्यक्ति आंतरिक शांति और पूर्णता पा सकते हैं। यह हमें जीवन की चुनौतियों को विकास के अवसरों के रूप में स्वीकार करने, लचीलापन विकसित करने, और अपने लक्ष्यों की ओर परिश्रमपूर्वक काम करने के लिए आमंत्रित करता है। शनि के पाठों के माध्यम से, हम सीखते हैं कि ज्ञान की राह अनुशासन, समर्पण, और हमारे कर्मिक कर्तव्यों की स्वीकृति से प्रशस्त होती है।"

शनि ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *अनुशासन, जिम्मेदारी, और धैर्य को बढ़ावा देता है।*
- *कठिन परिश्रम, सहनशीलता, और दृढ़ संकल्प में सहायता करता है।*
- *लंबी अवधि के लक्ष्यों को प्राप्त करने में धैर्य और स्थिर प्रयास के माध्यम से मदद करता है।*
- *न्याय, उचितता, और अखंडता की भावना को प्रोत्साहित करता है।*
- *जीवन में स्थिरता, संरचना, और क्रम को लाने में मदद करता है।*

शनि ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *देरी, बाधाओं, और चुनौतियों का कारण बन सकता है।*
- *सीमाओं, प्रतिबंधों, और कठिनाइयों की भावना पैदा कर सकता है।*
- *निराशावाद, भय, और अवसाद को जन्म दे सकता है।*
- *शारीरिक बीमारियों या पुरानी स्थितियों का कारण बन सकता है।*

1. **धार्मिक और आध्यात्मिक रुचि में वृद्धि** (Increase in Religious and Spiritual Interest)
   - जातक में धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों के प्रति गहरी रुचि विकसित होती है।
   - सावधानी: अंधविश्वास से बचें और ज्ञान की वास्तविक समझ विकसित करें।
2. **उच्च शिक्षा में बाधाएं** (Obstacles in Higher Education)
   - उच्च शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं, विशेषकर विदेश में अध्ययन करने की कोशिश में।
   - सावधानी: लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहें और विकल्पों का पता लगाएं।
3. **विदेश यात्रा में विलंब** (Delay in Foreign Travels)
   - विदेश यात्रा के अवसरों में विलंब हो सकता है।
   - सावधानी: यात्रा से संबंधित योजनाओं को धैर्यपूर्वक और सावधानी से तैयार करें।
4. **पिता के साथ संबंधों में चुनौतियाँ** (Challenges in Relationship with Father)

धर्म भाव

जल तत्व

9

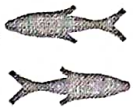

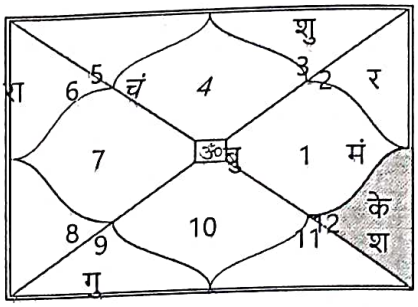

- पिता के साथ संबंधों में तनाव और चुनौतियाँ हो सकती हैं।
- सावधानी: संवाद और समझदारी के माध्यम से संबंधों को मजबूत करें।

5. **धार्मिक और नैतिक मूल्यों में दृढ़ता** (Firmness in Religious and Moral Values)
   - जातक धार्मिक और नैतिक मूल्यों में दृढ़ता दिखा सकता है।

- सावधानी: विचारों की विविधता को स्वीकार करें और उदारता बनाए रखें।

6. **दार्शनिक विचारों में रुचि** (Interest in Philosophical Thoughts)
   - जातक को दार्शनिक विचारों और चिंतन में गहरी रुचि हो सकती है।
   - सावधानी: विचारों को व्यावहारिक जीवन में लागू करने का प्रयास करें।
7. **कर्म और भाग्य में विश्वास** (Belief in Karma and Destiny)
   - जातक कर्म और भाग्य में गहरा विश्वास रखता है।
   - सावधानी: कर्म पर ध्यान केंद्रित करें और भाग्य पर अत्यधिक निर्भरता से बचें।
8. **लंबी अवधि के लक्ष्यों में सफलता** (Success in Long-term Goals)
   - लंबी अवधि के लक्ष्यों और योजनाओं में सफलता मिल सकती है।
   - सावधानी: धैर्य रखें और अपने प्रयासों को निरंतर बनाए रखें।
9. **सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन** (Fulfillment of Social Responsibilities)
   - जातक सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में सक्षम होता है।
   - सावधानी: सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखें।
10. **विदेश में अध्ययन और कार्य के अवसर** (Opportunities for Study and Work Abroad)
    - विदेश में अध्ययन और कार्य के अवसर मिल सकते हैं, लेकिन इसमें समय लग सकता है।
    - सावधानी: अवसरों का पूरी तैयारी और योजना के साथ लाभ उठाएं।

केतु : भाव - 9 , राशि - मीन , लग्न - कर्क

"केतु का दर्शन समर्पण और स्वीकृति के मूल्य को सिखाता है। यह हमें हमारे सबसे गहरे डरों का सामना करने और उन्हें मुक्त करने की चुनौती देता है, यह समझने के लिए कि सच्ची स्वतंत्रता हमारे लगावों को छोड़ने से आती है, यहां तक कि हमारी अपनी पहचानों को भी। केतु के पाठ अक्सर अलगाव या हानि के अनुभवों के माध्यम से सीखे जाते हैं, जहां परिणामी पीड़ा गहन आध्यात्मिक विकास और इस एहसास के लिए एक प्रेरक के रूप में काम करती है कि सभी बाहरी लगाव अस्थायी हैं। केतु का प्रभाव आत्म-चिंतन, आत्म-खोज, और इस दुनिया के नहीं ज्ञान की खोज को प्रोत्साहित करता है। यह हमारे उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जो दिव्यता में वापस जाना चाहता है, हमें क्षणभंगुर को छोड़ने और शाश्वत पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है।"

केतु ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *आध्यात्मिक विकास और आत्म-साक्षात्कार को बढ़ावा देता है।*
- *अंतर्दृष्टि, आत्म-खोज, और गहरे ज्ञान की खोज को प्रोत्साहित करता है।*

धर्म भाव

जल तत्व

9

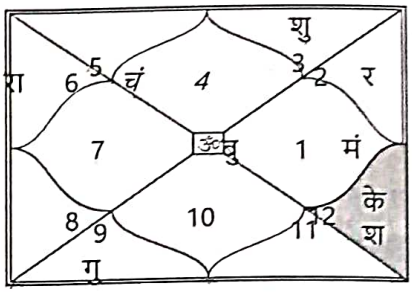

- मोक्ष या आत्मिक मुक्ति की दिशा में मार्गदर्शन करता है।
- लगावों से मुक्ति और आंतरिक शांति की ओर ले जाता है।
- अतीत के कर्मों से सीखने और उन्हें समझने में मदद करता है।

केतु ग्रह के नकारात्मक पहलू

- अलगाव और एकांत की भावनाओं को जन्म दे सकता है।
- जीवन में उद्देश्य की कमी या दिशाहीनता का कारण बन सकता है।
- भौतिक दुनिया से विमुख होने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।
- भ्रम और आध्यात्मिक पथ पर भटकाव का कारण बन सकता है।

1. **धार्मिक और आध्यात्मिक रुचि में परिवर्तन** (Changes in Religious and Spiritual Interests)
   - धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताओं में गहरे परिवर्तन हो सकते हैं।
   - सावधानी: नई आध्यात्मिक दिशाओं का अन्वेषण करते समय खुले दिमाग के साथ संतुलन बनाए रखें।
2. **उच्च शिक्षा में बाधाएं** (Obstacles in Higher Education)
   - उच्च शिक्षा में अप्रत्याशित बाधाएं या विलंब हो सकते हैं।
   - सावधानी: शिक्षा में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए धैर्य और लचीलापन रखें।
3. **विदेश यात्रा में रुचि** (Interest in Foreign Travels)
   - विदेश यात्रा या विदेश में अध्ययन/कार्य के अवसर बढ़ सकते हैं।
   - सावधानी: विदेश यात्राओं की योजना बनाते समय व्यावहारिक पहलुओं की गहन जांच करें।
4. **पिता के साथ संबंधों में चुनौतियाँ** (Challenges in Relationship with Father)
   - पिता या पितृतुल्य व्यक्ति के साथ संबंधों में दूरियां या चुनौतियाँ हो सकती हैं।
   - सावधानी: संवाद और समझदारी से पिता के साथ संबंधों में सुधार करें।
5. **धार्मिक और फिलॉसफिकल मतभेद** (Religious and Philosophical Disagreements)
   - धार्मिक और दार्शनिक मतभेदों का सामना करना पड़ सकता है, विशेषकर गुरुओं या शिक्षकों के साथ।
   - सावधानी: मतभेदों को समझने और स्वीकार करने के लिए खुले दिमाग और सहिष्णुता रखें।
6. **अध्यात्म में गहरी खोज** (Deep Dive into Spirituality)
   - अध्यात्मिक खोज और आत्म-अन्वेषण में गहरी रुचि हो सकती है।
   - सावधानी: अध्यात्मिक खोज में व्यावहारिक जीवन की उपेक्षा न करें।
7. **अचानक और अप्रत्याशित घटनाएँ** (Sudden and Unexpected Events)
   - जीवन में अचानक और अप्रत्याशित घटनाएँ हो सकती हैं, जो बड़े परिवर्तन ला सकती हैं।
   - सावधानी: अप्रत्याशित परिवर्तनों के प्रति अनुकूलनशील रहें और लचीलापन बनाए रखें।
8. **सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन** (Change in Social Values)
   - सामाजिक मूल्यों और नैतिकता के प्रति अपने विचारों में परिवर्तन कर सकते हैं।
   - सावधानी: सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन करते समय संतुलन और समझदारी बनाए रखें।
9. **गहरे रहस्यों में रुचि** (Interest in Deep Mysteries)
   - जीवन और मृत्यु, रहस्यवाद, और अन्य गहरे रहस्यों में गहरी रुचि हो सकती है।
   - सावधानी: गहरे रहस्यों की खोज में अपनी मानसिक और भावनात्मक स्थिरता का ध्यान रखें।

जल तत्व

9

10. **विरासत और परंपरा से विमुख** (Detachment from Legacy and Tradition)
    - पारंपरिक विचारों और विरासत से विमुखता या अलगाव महसूस कर सकते हैं।
    - सावधानी: परंपराओं से विमुख होते समय अपनी जड़ों के प्रति सम्मान बनाए रखें।

कर्म भाव

अग्नि तत्व

10

दसवें भाव का महत्व, मेष राशि, कर्क लग्न में। "कर्म भाव।"

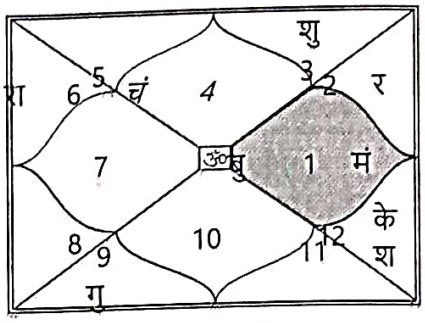

1. **करियर और पेशेवर जीवन (Career and Professional Life):** मेष राशि के दसवें घर में होने से ज़ातक में करियर में आगे बढ़ने की गहरी इच्छा और पहल करने की क्षमता होती है। कर्क लग्न होने से यह करियर भावनात्मक संतोष और परिवार की भलाई से जुड़ा होता है। संयुक्त यह है कि जातक अपने करियर में नेतृत्व की भूमिका निभाने और अपने और अपने परिवार के लिए एक मजबूत आधार बनाने की दिशा में उत्साहित होते हैं।
2. **सार्वजनिक छवि (Public Image):** मेष राशि के दसवें घर में होने से ज़ातक की सार्वजनिक छवि साहसी, उद्यमी और नेतृत्वकारी होती है। कर्क लग्न होने से यह छवि भावनात्मक संवेदनशीलता और देखभाल करने वाली प्रकृति से भी युक्त होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक समाज में एक सकारात्मक और प्रेरणादायक छवि बनाने में सफल होते हैं।
3. **अथॉरिटी और उपलब्धियां (Authority and Achievements):** मेष राशि में दसवें घर होने से ज़ातक में अथॉरिटी के प्रति स्वाभाविक आकर्षण और उच्च उपलब्धियों की इच्छा होती है। कर्क लग्न होने से ये उपलब्धियां परिवार और समाज की भलाई से जुड़ी होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि ज़ातक अपने क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त करने और समाज में योगदान देने के लिए प्रेरित होते हैं।
4. **माता-पिता (Parents):** मेष राशि के दसवें घर में होने से जातक का पिता या पालक अथॉरिटी का प्रतीक होता है, जिससे ज़ातक को प्रेरणा और दिशा मिलती है। कर्क लग्न होने से इस संबंध में भावनात्मक गहराई और सहयोग भी शामिल होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने माता-पिता से प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जो उनके करियर और जीवन में सफलता की ओर ले जाता है।
5. **सामाजिक स्थिति (Social Status):** मेष राशि के दसवें घर में होने से जातक की सामाजिक स्थिति उनकी पहल, साहस, और नेतृत्व क्षमता से निर्धारित होती है। कर्क लग्न होने से यह स्थिति भावनात्मक समर्थन और समाज के प्रति देखभाल के माध्यम से भी परिभाषित होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक समाज में एक सम्मानित और प्रेरणादायक स्थान प्राप्त करते हैं।
6. **व्यावसायिक निर्णय (Professional Decisions):** मेष राशि में दसवें घर होने से जातक अपने व्यावसायिक निर्णयों में साहसी और आत्मविश्वासी होते हैं। कर्क लग्न होने से ये निर्णय भावनात्मक अंतर्ज्ञान और परिवार के हितों को ध्यान में रखकर लिए ज़ाते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पेशेवर जीवन में नेतृत्व और नवाचार के साथ आगे बढ़ते हैं, साथ ही पारिवारिक मूल्यों को भी महत्व देते हैं।
7. **कार्यक्षेत्र में चुनौतियाँ (Challenges in the Workplace):** मेष राशि के दसवें घर में होने से जातक को कार्यक्षेत्र में चुनौतियाँ और प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है। कर्क लग्न होने से ये चुनौतियाँ भावनात्मक रूप से संवेदनशील हो सकती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक इन चुनौतियों का सामना करते समय साहस, आत्मविश्वास और भावनात्मक गहराई के साथ आगे बढ़ते हैं, जिससे वे अपने करियर में उच्च सफलता प्राप्त करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और मेष राशि का यह संयोजन जातक को करियर और पेशेवर जीवन में नेतृत्व, साहस, और आत्मविश्वास प्रदान करता है, साथ ही भावनात्मक संतोष और परिवारिक मूल्यों को महत्व देता है।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ कार्यक्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और चुनौतियों का सामना करते समय

कर्म भाव

अग्नि तत्व

10

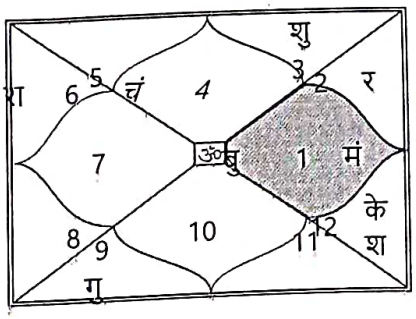

भावनात्मक संवेदनशीलता में निहित हो सकती हैं।

सुझाव: जातकों को अपने करियर और पेशेवर जीवन में साहसी और आत्मविश्वासी बने रहते हुए भी भावनात्मक संतुलन और पारिवारिक मूल्यों को महत्व देना चाहिए। चुनौतियों का सामना करते समय धैर्य और लचीलापन बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

मंगल : भाव - 10 , राशि - मेष , लग्न - कर्क

"वैदिक ज्योतिष में मंगल रूपांतरण की अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार अग्नि शुद्धिकरण करती है, उसी प्रकार मंगल द्वारा दर्शाए गए चुनौतियों और संघर्षों का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र को शुद्ध करना है, अशुद्धियों को जलाकर सच्ची शक्ति के सार को पीछे छोड़ना। यह ग्रह सिखाता है कि संघर्ष के माध्यम से आध्यात्मिक विकास का अवसर और अपनी सच्ची क्षमता का एहसास होता है। मंगल हमें साहसपूर्वक जीने, दृढ़ विश्वास के साथ कार्य करने, और अपनी इच्छाशक्ति की परिवर्तनशील शक्ति को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।"

मंगल ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *साहस, बहादुरी, और दृढ़ संकल्प को बढ़ावा देता है।*
- *ऊर्जा, जीवनशक्ति, और शारीरिक शक्ति में वृद्धि करता है।*
- *आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता में सुधार करता है।*
- *लक्ष्यों को प्राप्त करने और बाधाओं को पार करने में मदद करता है।*
- *नेतृत्व की गुणवत्ता और आदेश देने की क्षमता में मजबूती प्रदान करता है।*
- *तकनीकी और मैकेनिकल कौशल का समर्थन करता है।*

मंगल ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *आक्रामकता, संघर्ष, और क्रोध की समस्याओं को जन्म दे सकता है।*
- *आवेगी और जल्दबाजी में निर्णय लेने का कारण बन सकता है।*
- *लापरवाही के कारण दुर्घटनाओं या चोटों का जोखिम बढ़ाता है।*
- *दूसरों पर हावी होने और नियंत्रण करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।*
- *अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है।*

1. **करियर में उच्च सफलता** (High Success in Career)
   - ज़ातक को अपने करियर में उच्च सफलता और मान-सम्मान प्राप्त होता है।
   - सावधानी: सफलता के प्रति अहंकारी न बनें।
2. **नेतृत्व क्षमता** (Leadership Ability)
   - जातक में जन्मजात नेतृत्व क्षमता होती है, जो उन्हें प्रबंधन और नेतृत्व के पदों पर सफल बनाती है।
   - सावधानी: नेतृत्व करते समय सहकर्मियों की राय और भावनाओं का सम्मान करें।
3. **कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प** (Hard Work and Determination)
   - जातक कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

कर्म भाव

अग्नि तत्व

10

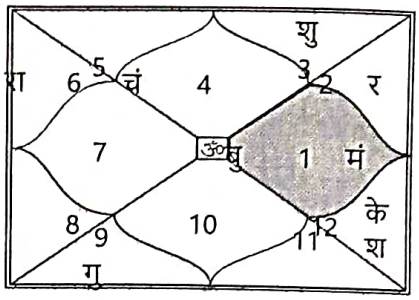

- सावधानी: अत्यधिक काम के चक्कर में स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन की उपेक्षा न करें।

4. **सामाजिक स्थिति में वृद्धि** (Enhancement in Social Status)
   - जातक की सामाजिक स्थिति में वृद्धि होती है, और उन्हें समाज में मान्यता प्राप्त होती है।
   - सावधानी: सामाजिक स्थिति का उपयोग दूसरों की मदद के करें, न कि दिखावे के लिए।
5. **उद्यमिता में सफलता** (Success in Entrepreneurship)
   - जातक उद्यमिता और व्यवसाय में उच्च सफलता प्राप्त करता है।
   - सावधानी: व्यावसायिक जोखिमों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करें।
6. **प्रतिष्ठा में वृद्धि** (Increase in Prestige)
   - जातक की प्रतिष्ठा और ख्याति में वृद्धि होती है, विशेषकर उनके करियर के क्षेत्र में।
   - सावधानी: प्रतिष्ठा के पीछे दौड़ में अपने मूल्यों और नैतिकता को न खोएं।
7. **आत्मनिर्भरता** (Self-reliance)
   - जातक अपने करियर और जीवन में आत्मनिर्भर होता है।
   - सावधानी: आत्मनिर्भरता के चक्कर में दूसरों की मदद लेने से न हिचकिचाएं।
8. **साहसिक कार्यों में रुचि** (Interest in Adventurous Activities)
   - जातक को साहसिक और जोखिम भरे कार्यों में रुचि होती है।
   - सावधानी: जोखिम भरे कार्यों में सुरक्षा मानकों का पालन करें।
9. **अधिकार और सत्ता में वृद्धि** (Increase in Authority and Power)
   - जातक को अपने करियर में अधिकार और सत्ता में वृद्धि प्राप्त होती है।
   - सावधानी: सत्ता का उपयोग जिम्मेदारी से करें और दुरुपयोग से बचें।
10. **समाज में योगदान** (Contribution to Society)
    - जातक समाज में सकारात्मक योगदान देने की क्षमता रखता है।
    - सावधानी: समाज सेवा में अपनी व्यक्तिगत और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखें।

बुध : भाव - 10 , राशि - मेष , लग्न - कर्क

"बुध हमें जिज्ञासा विकसित करने, सीखने को अपनाने और हर रूप में समझ की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह हमें याद दिलाता है कि मन सृजन और परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, जो बुद्धि और ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का समाधान करने और बाधाओं को पार करने में सक्षम है। ब्रह्मांड के नृत्य में, बुध अनुकूलनशीलता और बहुमुखी प्रतिभा का प्रतीक है, हमें हमारे विचारों और क्रियाओं में लचीला रहने के लिए आग्रह करता है। बुध का दर्शन विचार और क्रिया के बीच संतुलन पर जोर देता है, हमें याद दिलाता है कि जबकि ज्ञान शक्ति है, यह आवेदन के माध्यम से ही है कि ज्ञान वास्तव में साकार होता है।"

बुध ग्रह के सकारात्मक पहलू

कर्म भाव

अग्नि तत्व

10

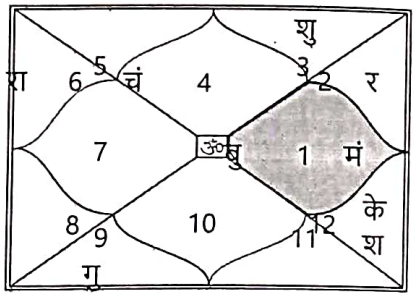

- संचार कौशल में वृद्धि, व्यक्तियों को वाक्पटु और सुवक्ता बनाता है।
- विश्लेषणात्मक और तार्किक सोच में सुधार, समस्या सुलझाने में मदद करता है।
- तेजी से सीखने की क्षमता और अनुकूलनशीलता में वृद्धि।
- बौद्धिक जिज्ञासा और सीखने की गहरी इच्छा को बढ़ावा देता है।
- व्यापार और वाणिज्य में कौशल और व्यावसायिक बुद्धिमत्ता में

बुध ग्रह के नकारात्मक पहलू

- अत्यधिक सोच और चिंता को जन्म दे सकता है, जिससे तनाव होता है।
- निर्णय लेने में असमर्थता या विचारों का बिखराव हो सकता है।
- चालाकी या धोखेबाज़ी की प्रवृत्ति का कारण बन सकता है।
- अति सक्रिय मन के कारण घबराहट या चिंता हो सकती है।
- उथलापन को प्रोत्साहित करता है, गहरी समझ या संबंधों को रोकता है।

1. **करियर में सफलता** (Success in Career)
   - बुध का दशम भाव में होना जातक को अपने करियर में उल्लेखनीय सफलता और प्रगति प्रदान करता है।
   - सावधानी: करियर की सफलता के पीछे नैतिकता और ईमानदारी को न भूलें।
2. **व्यावसायिक कुशलता** (Professional Expertise)
   - जातक अपने व्यावसायिक क्षेत्र में विशेषज्ञता और कुशलता प्राप्त करते हैं।
   - सावधानी: अत्यधिक काम के बोझ से व्यक्तिगत जीवन प्रभावित न हो।
3. **सामाजिक प्रतिष्ठा** (Social Prestige)
   - यह स्थान जातक को समाज में उच्च प्रतिष्ठा और मान-सम्मान प्रदान करता है।
   - सावधानी: सामाजिक प्रतिष्ठा के पीछे अहंकार न पालें।
4. **संचार कौशल में उत्कृष्टता** (Excellence in Communication Skills)
   - बुध का दशम भाव में होने से जातक में संचार कौशल विशेष रूप से विकसित होता है, जो उन्हें व्यावसायिक रूप से लाभान्वित करता है।
   - सावधानी: संचार में स्पष्टता और सत्यता बनाए रखें।
5. **बौद्धिक क्षमताओं का विकास** (Development of Intellectual Abilities)
   - जातक की बौद्धिक क्षमताएँ और विश्लेषणात्मक सोच में वृद्धि होती है, जो उन्हें जटिल समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाती है।
   - सावधानी: बौद्धिकता के अहंकार से बचें।
6. **नेतृत्व क्षमता** (Leadership Ability)
   - बुध का यह स्थान जातक में नेतृत्व क्षमता को बढ़ाता है, जिससे वे अपने क्षेत्र में नेता के रूप में उभर सकते हैं।
   - सावधानी: नेतृत्व में अधिकारवादी रवैया न अपनाएं।
7. **वित्तीय स्थिरता** (Financial Stability)

कर्म भाव

अग्नि तत्व

10

- जातक को अपने पेशेवर प्रयासों के माध्यम से वित्तीय स्थिरता और सफलता प्राप्त होती है।
- सावधानी: वित्तीय सफलता के प्रति सतर्क और जिम्मेदार रहें।

8. **शिक्षा और प्रशिक्षण में योगदान** (Contribution to Education and Training)
    - जातक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, विशेषकर अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र में।
    - सावधानी: ज्ञान साझा करते समय विनम्रता और सहिष्णुता बनाए रखें।

लाभ भाव

पृथ्वी तत्व

11

ग्यारहवें भाव का महत्व, वृषभ राशि, कर्क लग्न में। "लाभ भाव।"

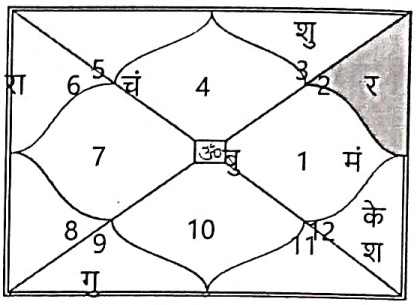

1. **आय और लाभ (Income and Gains):** वृषभ राशि के ग्यारहवें घर में होने से जातक की आय और लाभ में स्थिरता और वृद्धि होती है। कर्क लग्न होने से यह आय भावनात्मक संतोष और पारिवारिक सुरक्षा से जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने पेशेवर जीवन में और दीर्घकालिक लाभ की तलाश करते हैं।
2. **मित्र (Friends):** वृषभ राशि में ग्यारहवें घर होने से जातक के मित्र स्थिर, विश्वसनीय, और मूल्यों के साझेदार होते हैं। कर्क लग्न होने से ये मित्रताएँ भावनात्मक गहराई और देखभाल से भरी होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने सामाजिक नेटवर्क में गहरे और स्थायी संबंध बनाते हैं।
3. **आशाएं और इच्छाएं (Hopes and Wishes):** वृषभ राशि के ग्यारहवें घर में होने से जातक की आशाएं और इच्छाएं स्थिरता, सुरक्षा, और सौंदर्य से जुड़ी होती हैं। कर्क लग्न होने से ये आशाएं भावनात्मक संतोष और पारिवारिक खुशहाली से भी जुड़ी होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने जीवन में स्थिरता और खुशहाली की ओर अग्रसर होते हैं।
4. **समूह संबंध (Group Relations):** वृषभ राशि में ग्यारहवें घर होने से जातक समूहों और संगठनों में विश्वसनीय और स्थिर सदस्य होते हैं। कर्क लग्न होने से ये संबंध भावनात्मक गहराई और पारस्परिक सहयोग से युक्त होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने समूह संबंधों में विश्वास और सहयोग के माध्यम से लंबी अवधि की योजनाओं को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाते हैं।
5. **लंबी अवधि की योजनाएं (Long-term Plans):** वृषभ राशि में ग्यारहवें घर होने से जातक की लंबी अवधि की योजनाएँ स्थिरता, सुरक्षा, और विकास पर केंद्रित होती हैं। कर्क लग्न होने से ये योजनाएँ भावनात्मक संतोष और पारिवारिक सुख की ओर भी निर्देशित होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी लंबी अवधि की योजनाओं को धैर्य और दृढ़ता के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़ाते हैं।
6. **सामाजिक नेटवर्क (Social Network):** वृषभ राशि में ग्यारहवें घर होने से जातक का सामाजिक नेटवर्क स्थिर, विश्वसनीय, और मूल्यवान होता है। कर्क लग्न होने से यह नेटवर्क भावनात्मक समर्थन और पारस्परिक सहयोग से भरा होता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करते हैं।
7. **सामाजिक स्थिति (Social Status):** वृषभ राशि में ग्यारहवें घर होने से जातक की सामाजिक स्थिति स्थिरता, विश्वसनीयता, और मूल्यों के प्रति समर्पण पर आधारित होती है। कर्क लग्न होने से यह स्थिति भावनात्मक संतोष और पारिवारिक खुशहाली से भी जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी सामाजिक स्थिति में स्थिरता और सम्मान प्राप्त करते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और वृषभ राशि का यह संयोजन जातक को स्थिरता, सुरक्षा, और मूल्यवान सामाजिक संबंधों की ओर ले जाता है, साथ ही भावनात्मक संतोष और पारिवारिक खुशहाली को बढ़ावा देता है।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ अत्यधिक स्थिरता की इच्छा में निहित हो सकती हैं, जिससे नवाचार और विकास के अवसरों की उपेक्षा हो सकती है।

सुझाव: जातकों को अपनी स्थिरता और सुरक्षा की तलाश को बनाए रखते हुए भी नई चीजों के प्रति खुले रहने और

लाभ भाव

पृथ्वी तत्व

11

नवाचार को अपनाने की आवश्यकता है। व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के लिए लचीलापन और अनुकूलनशीलता महत्वपूर्ण है।

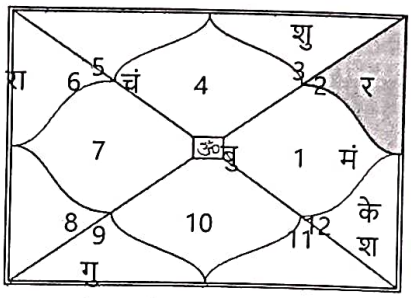

सूर्य ग्यारहवें भाव में, वृषभ राशि में, कर्क लग्न में।

सूर्य का विश्लेषण:

1. **सूर्य की विशेषताएं** : सूर्य जीवन शक्ति, आत्मा, सत्ता, और ऊर्जा का प्रतीक है। यह व्यक्तित्व, पिता, और सरकारी संबंधों को प्रभावित करता है।
2. **ग्यारहवां भाव** : यह भाव आशाओं, सपनों, मित्रों, और सामाजिक सर्कल से संबंधित है। यह समुदाय और सामाजिक लक्ष्यों के साथ-साथ व्यक्ति की आकांक्षाओं को भी दर्शाता है।
3. **वृषभ राशि** : शुक्र ग्रह की राशि वृषभ, स्थिरता, सुख-साधनों, धन-संपदा, और भौतिक सुखों का प्रतिनिधित्व करती है।
4. **कर्क लग्न** : कर्क लग्न भावनाओं, सहजता, परिवार, और घर से संबंधित है, जिसे चंद्रमा नियंत्रित करता है।

महत्वपूर्ण मुद्दे (सूर्य के वृषभ राशि में ग्यारहवें भाव और कर्क लग्न में होने के परिणाम):

1. **सामाजिक संबंध और नेटवर्किंग (Social Relationships and Networking)** : मित्रों और सामाजिक सर्कल में स्थायित्व और दीर्घकालिक संबंधों की तलाश।
2. **आशाओं और सपनों में भौतिकता (Materialism in Hopes and Dreams)** : आशाओं और सपनों में भौतिक सुखों और धन-संपदा की इच्छा।
3. **समुदाय और सामाजिक लक्ष्यों में योगदान (Contribution to Community and Social Goals)** : समुदाय और सामाजिक लक्ष्यों के प्रति स्थिरता और योगदान की भावना।
4. **व्यक्तिगत आकांक्षाओं में स्थिरता (Stability in Personal Aspirations)** : व्यक्तिगत आकांक्षाओं और लक्ष्यों में स्थिरता और व्यावहारिकता।
5. **मित्रों के साथ सुख-साधनों का आनंद (Enjoyment of Luxuries with Friends)** : मित्रों और सामाजिक सर्कल के साथ भौतिक सुखों और साधनों का आनंद।
6. **धन-संपदा और संसाधनों में साझेदारी (Partnership in Wealth and Resources)** : साझेदारी और समूहों में धन-संपदा और संसाधनों के प्रबंधन में सहयोग।
7. **सामाजिक स्थिति में भौतिक सफलता (Material Success in Social Status)** : सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में भौतिक सफलता और स्थिरता की तलाश।

सकारात्मक पहलू:

- सामाजिक संबंधों में स्थायित्व और दीर्घकालिक बंधन।
- आशाओं और सपनों में भौतिक और व्यावहारिक लक्ष्यों की प्राप्ति।

लाभ भाव

पृथ्वी तत्व

11

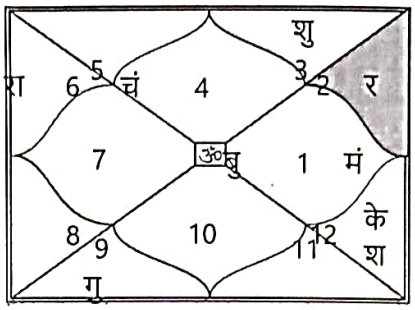

- समुदाय और सामाजिक लक्ष्यों के प्रति सकारात्मक योगदान।

नकारात्मक पहलू:

- भौतिकता में अत्यधिक लगाव, जो आध्यात्मिक और गहरे अनुभवों को नज़रअंदाज कर सकता है।
- सामाजिक और मित्रता संबंधों में भौतिक सफलता को अत्यधिक महत्व देना।

सुझाव:

- भौतिक सुखों और आध्यात्मिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखें।
- सामाजिक संबंधों में गहराई और अर्थपूर्ण बातचीत की तलाश करें, न कि केवल भौतिक सफलता पर ध्यान केंद्रित करें।
- समुदाय और सामाजिक लक्ष्यों में योगदान देते समय नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिकता को महत्व दें।

व्यय भाव

12

वायु तत्व

बारहवें भाव का महत्व, मिथुन राशि, कर्क लग्न में। "व्यय भाव।"

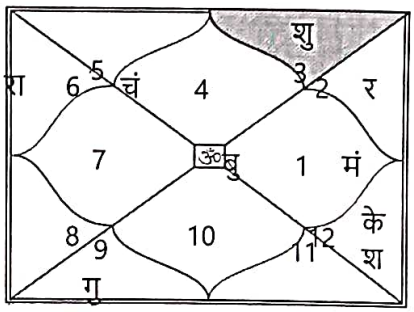

1. **व्यक्तिगत नुकसान (Personal Loss):** मिथुन राशि के बारहवें घर में होने से जातक को व्यक्तिगत नुकसान और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। कर्क लग्न होने से ये चुनौतियाँ भावनात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक इन चुनौतियों का करते समय संचार और बौद्धिकता का उपयोग करते हैं।
2. **गुप्त शत्रु (Secret Enemies):** मिथुन राशि में बारहवें घर होने से जातक के गुप्त शत्रु हो सकते हैं, जिनकी पहचान करना मुश्किल होता है। कर्क लग्न होने से जातक इन शत्रुओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपनी बौद्धिकता और संचार कौशल का उपयोग करके इन चुनौतियों से निपटते हैं।
3. **आध्यात्मिकता और मोक्ष (Spirituality and Liberation):** मिथुन राशि के बारहवें घर में होने से जातक में आध्यात्मिकता की गहरी खोज और मोक्ष की इच्छा होती है। कर्क लग्न होने से यह खोज भावनात्मक और अंतर्ज्ञानी दृष्टिकोण से युक्त होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने आध्यात्मिक यात्रा में गहराई और व्यापकता का अनुभव करते हैं।
4. **विदेशी मामले (Foreign Affairs):** मिथुन राशि में बारहवें घर होने से जातक को विदेशी मामलों और यात्राओं में रुचि हो सकती है। कर्क लग्न होने से ये यात्राएं भावनात्मक विकास और अंतर्ज्ञान के लिए भी महत्वपूर्ण होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक विदेशी संबंधों और यात्राओं के माध्यम से नए अनुभवों और ज्ञान का विस्तार करते हैं।
5. **अलगाव (Isolation):** मिथुन राशि में बारहवें घर होने से जातक को समय-समय पर अलगाव की अनुभूति हो सकती है। कर्क लग्न होने से यह अलगाव भावनात्मक संवेदनशीलता और आत्म-साक्षात्कार के लिए एक अवसर बन सकता है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक इस समय का उपयोग आत्म-विकास और आत्म-ज्ञान के लिए करते हैं।
6. **आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization):** मिथुन राशि में बारहवें घर होने से जातक में आत्म-साक्षात्कार और आत्म-ज्ञान की खोज तीव्र होती है। कर्क लग्न होने से यह खोज भावनात्मक गहराई और अंतर्ज्ञान के साथ जुड़ी होती है। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अपने आत्म-ज्ञान और आत्म-विकास की यात्रा में गहराई और व्यापकता का अनुभव करते हैं।
7. **अलगाव और चिंतन (Solitude and Contemplation):** मिथुन राशि में बारहवें घर होने से जातक को अलगाव और चिंतन की अवस्थाओं में गहरी रुचि होती है। कर्क लग्न होने से ये अवस्थाएं भावनात्मक संवेदनशीलता और आत्म-साक्षात्कार के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। संयुक्त प्रभाव यह है कि जातक अलगाव और चिंतन के माध्यम से अपने आप को बेहतर समझते हैं और आध्यात्मिक विकास की ओर बढ़ते हैं।

समग्र सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Overall Positives and Negatives):

सकारात्मक पहलू: कर्क लग्न और मिथुन राशि का यह संयोजन जातक को बौद्धिकता, संचार कौशल, और अनुकूलनशीलता के माध्यम से व्यक्तिगत चुनौतियों और आध्यात्मिक खोज में सफलता प्रदान करता है।

नकारात्मक पहलू: इस संयोजन की चुनौतियाँ अलगाव और गुप्त शत्रुओं से संबंधित हो सकती हैं, जिनका सामना करते समय भावनात्मक संवेदनशीलता बढ़ सकती है।

सुझाव: जातकों को अपने बौद्धिक और संचार कौशल का उपयोग करते हुए व्यक्तिगत चुनौतियों से निपटने और

व्यय भाव

12

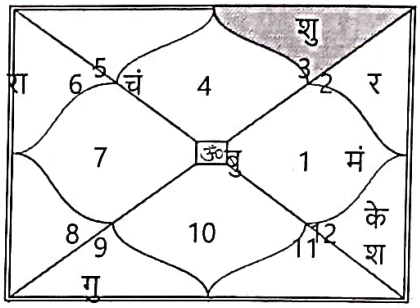

आध्यात्मिक खोज को आगे बढ़ाने की सलाह दी जाती है। अलगाव के क्षणों का उपयोग आत्म-चिंतन और आत्म-साक्षात्कार के लिए करना चाहिए।

शुक्र : भाव - 12 , राशि - मिथुन , लग्न - कर्क

"शुक्र का दर्शन संबंधों के महत्व और उन्हें दयालुता, समझदारी और धैर्य के साथ पोषित करने की अहमियत पर जोर देता है। यह सिखाता है कि सच्ची हमारे संबंधों की गुणवत्ता में निहित है और प्रेम और सामंजस्य हमारे पास मौजूद सबसे बड़े खजाने हैं। यह हमें आमंत्रित करता है कि हम अपने आस-पास की दुनिया की समृद्धि की सराहना करें, अपनी सृजनात्मकता को व्यक्त करें, और सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा दें। शुक्र हमें अनुग्रह के साथ जीने की प्रेरणा देता है, भौतिक और आध्यात्मिक के बीच संतुलन खोजने के लिए कहता है, और जीवन के साधारण सुखों में आनंद खोजने के लिए कहता है, हमें याद दिलाता है कि प्रेम और सौंदर्य के माध्यम से, हम दिव्यता को छू सकते हैं।"

शुक्र ग्रह के सकारात्मक पहलू

- *प्रेम, सौंदर्य, और संबंधों में सामंजस्य को बढ़ावा देता है।*
- *कलात्मक प्रतिभा और सौंदर्य की सराहना में वृद्धि करता है।*
- *धन, विलासिता, और आराम लाता है।*
- *वैवाहिक सुख और साझेदारी में सफलता का समर्थन करता है।*
- *कूटनीति, आकर्षण, और सामाजिक कृपा को प्रोत्साहित करता है।*

शुक्र ग्रह के नकारात्मक पहलू

- *इंद्रिय सुखों और भौतिकवाद में अति लिप्तता का कारण बन सकता है।*
- *आलस्य, व्यर्थता, और उथलापन को जन्म दे सकता है।*
- *अत्यधिक चिंता सामाजिक स्थिति और उपस्थिति के प्रति को प्रोत्साहित करता है।*
- *विलासिता पर अत्यधिक खर्च के कारण वित्तीय कठिनाइयों का कारण बन सकता है।*
- *जो है उससे संतुष्ट न होने की प्रवृत्ति, हमेशा अधिक चाहने की ओर ले जा सकता है।*

1. **आध्यात्मिकता और अंतर्मुखी प्रवृत्ति** (Spirituality and Introversion)
    - जातक में गहरी आध्यात्मिकता और अंतर्मुखी प्रवृत्ति होती है।
    - सावधानी: अत्यधिक अंतर्मुखता से सामाजिक अलगाव की स्थिति न बनने दें।
2. **गुप्त संबंध और रहस्यमय अनुभव** (Secret Relationships and Mystical Experiences)
    - जातक के जीवन में गुप्त संबंध और रहस्यमय अनुभव हो सकते हैं।
    - सावधानी: गुप्त संबंधों के कारण व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में जटिलताएँ न उत्पन्न होने दें।
3. **विदेश में लाभ** (Gains in Foreign Lands)
    - जातक को विदेश में रहने या यात्रा करने से लाभ हो सकता है।
    - सावधानी: विदेशी भूमि में निवेश और व्यवसाय करते समय सावधानी बरतें।
4. **आत्म-साक्षात्कार और आत्म-खोज** (Self-Realization and Self-Discovery)

व्यय भाव

12

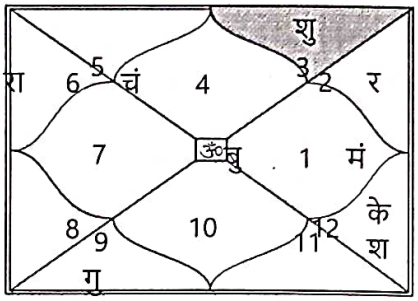

- जातक आत्म-साक्षात्कार और आत्म-खोज की यात्रा पर होता है।
- सावधानी: आत्म-खोज की प्रक्रिया में व्यावहारिक जीवन की उपेक्षा न करें।

5. **विलासिता और सुख-सुविधाओं की ओर आकर्षण** (Attraction to Luxury and Comforts)

- जातक को विलासिता और सुख-सुविधाओं की ओर गहरा आकर्षण होता है।
  - सावधानी: विलासिता में अत्यधिक खर्च से वित्तीय समस्याएँ न उत्पन्न होने दें।

6. **चैरिटी और दान में रुचि** (Interest in Charity and Philanthropy)
   - जातक दान और चैरिटी में रुचि रखता है, और इसके माध्यम से आत्मिक संतोष प्राप्त करता है।
   - सावधानी: दान और चैरिटी करते समय अपनी वित्तीय क्षमता का ध्यान रखें।
7. **कला और सौंदर्य में गहरी रुचि** (Deep Interest in Art and Aesthetics)
   - जातक कला और सौंदर्य में गहरी रुचि रखता है, और इसके माध्यम से व्यक्तिगत संतोष प्राप्त करता है।
   - सावधानी: कलात्मक शौक में अत्यधिक समय और धन व्यय न करें।
8. **आंतरिक शांति और संतोष** (Inner Peace and Satisfaction)
   - जातक आंतरिक शांति और गहरे संतोष की अनुभूति करता है।
   - सावधानी: आंतरिक शांति की खोज में व्यावहारिक जीवन की जिम्मेदारियों से विमुख न हों।
9. **गुप्त ज्ञान और अध्यात्म में रुचि** (Interest in Esoteric Knowledge and Spirituality)
   - जातक गुप्त ज्ञान और अध्यात्म में गहरी रुचि रखता है।
   - सावधानी: अध्यात्मिक और गुप्त ज्ञान की खोज में संतुलन बनाए रखें।
10. **सपनों और कल्पनाओं की दुनिया में रुचि** (Interest in the World of Dreams and Fantasies)
    - जातक सपनों और कल्पनाओं की दुनिया में गहरी रुचि रखता है, और इसके माध्यम से रचनात्मक प्रेरणा प्राप्त करता है।
    - सावधानी: सपनों और कल्पनाओं में इतना न खोएं कि वास्तविकता से संपर्क टूट जाए।

योगायोग निष्कर्ष : लग्न कुंडली

अनफा योग

यदि चन्द्रमा से १२वें भाव में ग्रह स्थित हों तो, अनफा योग का बनता है। आप शारीरिक रूप से सुदृढ़ तथा सुडौल देहयष्टि प्राप्त हैं, आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा तथा अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। स्वभाववश आप विनम्र, उदार और अन्य लोगों के प्रति सम्मान रखते हैं। अच्छे वस्त्र-परिधान तथा संवेदनात्मक आमोद-प्रमोद आपके शौक़ में शामिल हैं। बाद के जीवन में आप त्याग और सादगी का अनुभव करेंगे।

दुरुधरा योग

यदि चन्द्रमा के दोनों ओर ग्रह स्थित हों तो, दुरुधारा योग बनता है। जातक सुख-सुविधा सम्पन्न होता है। आपको जन्म से ही विपुल धन-सम्पत्ति, वाहन, अधिकार, प्रतिष्ठा व शोहरत विभिन्न प्रमाण में मिलते हैं।

अधि योग

यदि चन्द्रमा से ६ठे, ७वें तथा ८वें भावों में शुभ ग्रह स्थित हों तो, अधि योग बनता है। जातक एक कठोर तथा जिद्दी व्यक्ति होगा और जीवन में कई उतर चढ़ाव का सामना करना होगा ।

वसुमती योग

यदि लग्न से या चन्द्रमा से उपचय (३, ६, १० और ११) स्थानों में शुभ ग्रह पड़े हों तब वसुमती योग निर्मित होता है। अन्य किसी वस्तु की अपेक्षा अधिकतर यह योग धन-सम्पत्ति से सम्बद्ध है। जातक किसी पर निर्भर नहीं होगा तथा उसके अधिकार में विपुल धन-दौलत रहेगी।

शकट योग

यदि चन्द्रमा बृहस्पति से १२वें, ६ठे, या ८वें भाव में हो तो शकट योग बनता है। जातक के धन का नाश हो सकता है और वह उसे पुनः प्राप्त कर लेता है। आप एक साधारण और महत्त्वहीन व्यक्ति हो सकते हैं। आप दरिद्रता, अभाव तथा दुर्भाग्य से त्रस्त हो सकते हैं। आप हठी स्वभाववाले तथा रिश्तेदारों से घृणित होंगे।

अमल योग

चन्द्र से या लग्न से १०वें भाव शुभ ग्रह हो तो अमल योग निर्मित होता है। जातक दीर्घकालिक सुकिर्ती तथा प्रतिष्ठा पायेगा। आपका चरित्र निष्कंलक होगा तथा आप समृद्धिशाली जीवन जीयेंगे। न्यायसंगत माध्यमों से समृद्धि और विपुलता प्राप्त होगी।

वेसी योग

सूर्य से दूसरे स्थान में अगर चन्द्र के अलावा अन्य ग्रह पड़े हों तो, वेसी योग निर्मित होता है। आप

योगायोग निष्कर्ष : लग्न कुंडली

सूर्य से दूसरे स्थान में अगर चन्द्र के अलावा अन्य ग्रह पड़े हों तो, वेसी योग निर्मित होता है। आप भाग्यवान तथा सद्‌गुणी होंगे। आप अत्यंत प्रसन्न, यशस्वी तथा वैभवशाली जीवन जीयेंगे।

वसी योग

यदि सूर्य से बारहवें स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रह हों तो, वसी योग बनता है। जातक प्रसन्न, वैभवी तथा स्वतंत्र व्यक्ति होगा। सभी लोगों के आप प्रीतिपात्र होंगे।

उभयचरी योग

यदि सूर्य के दोनों ओर चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रह हों तो उभयचरी योग बनता है। आप एक वाक्पटु वक्ता होंगे। आपके अंग सुडौल होंगे और हरेक बाबत से आप आनंद लेंगे। आप सभी लोगों के प्रीतिपात्र होंगे तथा धनवान और सुविख्यात व्यक्ति होंगे।

रुचक योग

यदि मंगल अपनी ही राशि में हो या उच्च का हो और केन्द्र भाव में स्थित हो तो रुचक योग बनता है। रुचक योग में उत्पन्न व्यक्ति का शरीर मजबूत होता है। परम्परा तथा परिपाटी के अनुसार वह प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञाता होगा। उसका शरीर सख्त व आकर्षक होगा और स्वभाव से धार्मिक होगा, धनी होने के साथ वह दीर्घजीवी बना रहेगा।

महाभाग्य योग

जब सूर्य, चन्द्र और लग्न विषम राशिओं या सम राशिओं में हो। आपका चरित्र उच्च होगा और अन्य लोगों के लिये आनन्द का साधन होंगे। आप उदार, प्रसिद्ध तथा सुविख्यात होंगे। आप दीर्घजीवी होंगे। आपकी संतानें भी दीर्घजीवी होंगी।

ब्रह्मा योग

यदि बृहस्पति और शुक्र क्रमशः नवम और और लग्नेश या दशमाधिपति से केन्द्र में बुध हो तो, ब्रह्मा योग बनता है। आप अच्छे भोजन का आनन्द उठायेंगे और ब्राह्मण तथा विद्वानों द्वारा सम्मानित होंगे। जातक बहुत ही विद्वान होगा तथा दीर्घजीवी होगा। आप दानशील हैं तथा हमेशा अच्छे कार्य करने में लगे रहेंगे।

हर्ष योग

यदि ६, ८ और १२वें भाव के अधिपति ६, ८ और १२ वें भाव में हो तो, हर्ष योग बनता है। यह आपको भाग्यशाली, सुखी, अजेय, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, धनी, प्रसिद्ध और पापकर्मों से डरनेवाला बनाता है।

योगायोग निष्कर्ष : लग्न कुंडली

शरीर सौख्य योग

यदि लग्नाधिपति, बृहस्पति या शुक्र केन्द्र में स्थित हों तो, शरीर सौख्य योग बनता है। जातक दीर्घजीवी, धनी और राजनीति में सफल होगा।

दरिद्र योग

यदि पंचमाधिपति ६ठे या १० वें भाव में द्वितीयेश, षष्ठेश, सप्तमेश, अष्टमेश या द्वादशेष से दृष्ट हो तो यह योग बनता है। यह योग आर्थिक परेशानियां दर्शाता है इसलिए आपको सख्त वित्तीय अनुशासन की सलाह दी जाती है ।

एकपुत्र योग

पंचमाधिपति को केन्द्र या त्रिकोण में होना चाहिये। जातक को कम से कम एक संतान हो सकती हैं।

सत्कलत्र योग

यदि सप्तमाधिपति या शुक्र बृहस्पति या बुध से युक्त या दृष्ट हो तो, यह योग बनता है। जातक के जीवनसाथी उत्तम और पवित्र होंगे। वे नैतिक रूप से सख्त, ईश्वर से डरने वाले, और आपके प्रति बहुत ही अनुरक्त रहेंगे।

लग्न कुंडली

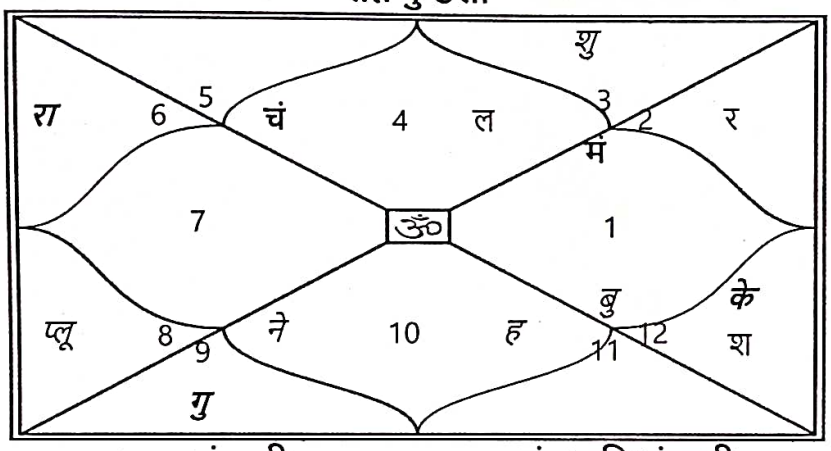

नवमांश कुंडली

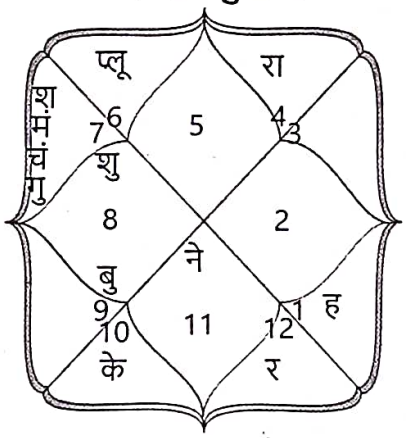

कस्प कुंडली

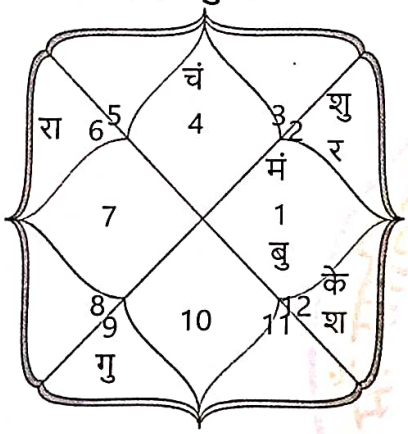

चंद्र राशि कुंडली

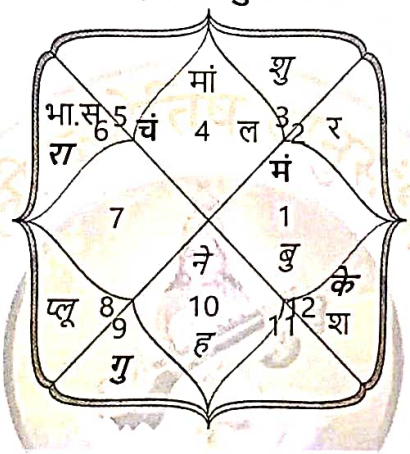

D10=दशमांश

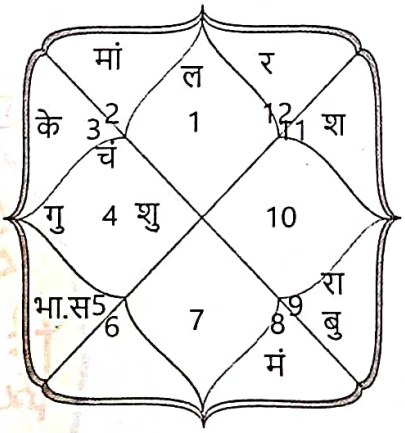

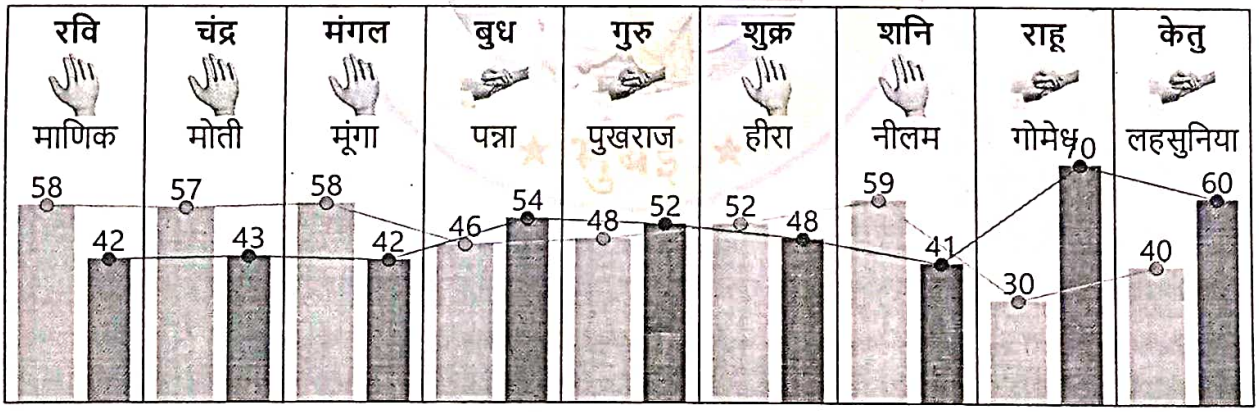

सामान्यतौर पर इन रत्नों को धारण करने का सुझाव दिया जाता है :

नीलम

माणिक

सामान्यतौर पर इन रत्नों को अर्पण करने का सुझाव दिया जाता है :

गोमेध

लहसुनिया

ग्रह - नक्षत्र दोष और उपचार

जन्म तारीख	23/05/1996
जन्म समय	10:10:00
जन्म दिन	गुरुवार
इष्टकाल (घटी)	10:19:34
स्थान	ulhasnagar/maharash
अक्षांश	019:12:N
रेखांश	073:10:E
मध्य रेखांश	+05:30

लग्न कुंडली

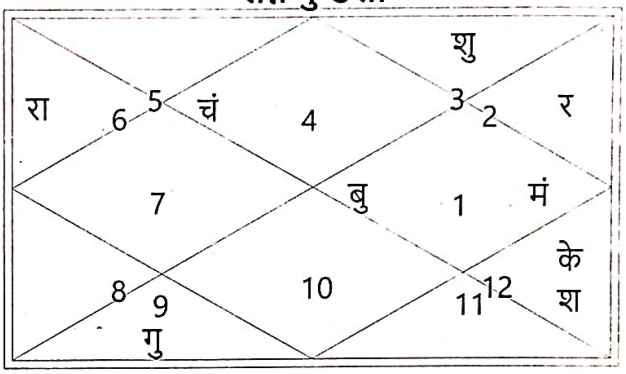

वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी भी अशुभ ग्रह की प्रतिकूल स्थिति उस कुंडली में दोष उत्पन्न करती है. जिस्से उस ग्रह के संभावित सकारात्मक प्रभाव कम हो जाते हैं और वे वांछित परिणाम नहीं दे सकते . सही और प्रामाणिक उपाय देने के लिए कुंडली का सावधानीपूर्वक विश्लेषण आवश्यक है, मंत्र का उच्चारण एक सरल और सही उपाय है जो कि स्वयं द्वारा किया जा सकता है .

निम्नलिखित नक्षत्र और ग्रह दोष आपकी कुंडली में पाए गए हैं :

नक्षत्र दोष : पुष्य-3
नक्षत्र शांति : नक्षत्र पूजा और नवग्रह पूजा

रवि ग्रह दोष : *उपस्थित नहीं है*
रवि ग्रह शांति : *की आवश्यकता नहीं है*

चंद्र ग्रह दोष : *उपस्थित नहीं है*
चंद्र ग्रह शांति : *की आवश्यकता नहीं है*

मंगल ग्रह दोष : *उपस्थित नहीं है*
मंगल ग्रह शांति : *की आवश्यकता नहीं है*

बुध ग्रह दोष : *मंगल या शनि संयुक्त , कमज़ोर अवस्था*
बुध ग्रह शांति : **बीज मंत्र (जाप / श्रवण 36000 बार) :**
ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

गायत्री मंत्र (जाप / श्रवण 108 बार) :
ॐ गजध्वजाय विदमहे सुख-हस्ताय धीमहि तन्नो बुद्धः प्रचोदयात ॥

पुराणोक्त मंत्र (जाप / श्रवण 9000 बार) :
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्युगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

गुरु ग्रह दोष : *उपस्थित नहीं है*
गुरु ग्रह शांति : *की आवश्यकता नहीं है*

ग्रह - नक्षत्र दोष और उपचार

शुक्र ग्रह दोष : *कमज़ोर अवस्था*
शुक्र ग्रह शांति : **बीज मंत्र (जाप / श्रवण 64000 बार) :**
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

गायत्री मंत्र (जाप / श्रवण 108 बार) :
ॐ भृगुसुताय विदमहे दिव्येदेहाय धीमहि, तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।

पुराणोक्त मंत्र (जाप / श्रवण 16000 बार) :
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परंम गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

शनि ग्रह दोष : *राहु या केतु संयुक्त*
शनि ग्रह शांति : **बीज मंत्र (जाप / श्रवण 92000 बार) :**
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्राय नमः

गायत्री मंत्र (जाप / श्रवण 108 बार) :
ॐ सूर्यपुत्राय विदमहे मृत्युरुपाय धीमहि, तन्नो सौरिः प्रचोदयात ।

पुराणोक्त मंत्र (जाप / श्रवण 23000 बार) :
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

जानकारी : *मंत्र का जाप करना देवता की पूजा के समान है, यह केवल एक साधन ही नहीं बल्कि अपने आप में एक योग है । इसलिए यह अनिवार्य है कि इसका उच्चारण सही तरीके से और स्वर के साथ हो.*
अपने एंड्रॉइड मोबाइल पर सही उदाहरण प्राप्त करने के लिए कृपया अपने ज्योतिषी द्वारा प्रदान किए गए लिंक से मंत्रप्लेयर ऐप इंस्टॉल करें ।
परामर्श : किसी भी उपचार के निरंतर और लंबे प्रभाव के लिए उस दोष की पूजा, शांति, यज्ञ, हवन आदि किसी नियुक्त पुजारी द्वारा ही होनी चाहिए ।